प्रद्युम्न-चरित

(आदि कालिक हिन्दी काव्य)

रचयिता:—कवि सधारु

प्राक्कथन लेखक

डा० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

रीडर, हिन्दी विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सम्पादक

पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

कस्तूरचंद कासलीवाल शास्त्री एम० ए०,

प्रकाशक

केशरलाल बख्शी

मंत्री प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे

जयपुर

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४–५ वर्ष पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र की प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित दि० जैन अ० क्षेत्र श्रीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध–संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थ सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें जिनका अभी ५–७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध–संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की संख्या को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रशस्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञात एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। ये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनायें हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३–१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रल्ह कवि कृत जिनदत्त चौपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इससे इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भंडार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यज्ञ के इस मुख्य कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानी सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५–७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेस में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

अन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूं। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूं। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्राक्कथन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो कष्ट किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

जयपुर
ता० १०-८-५६

केशरलाल बख्शी

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंड या पुष्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्व श्रेष्ठ कवि पुष्पदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुष्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्पदन्त था। किंतु पिछले ५०–६० वर्षों की खोज में पुष्पदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से पृथक स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुडना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जिन विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय आर्य–भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई है, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिंदी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशषताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती है। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों को मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि बोलचाल की भाषाएं एक दम नहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक आर्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे–धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक आर्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रक्खा जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मानलें कि अपभ्रंश–

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह सन्धिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्व श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची वद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुत: साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न मात्राओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मइंकलेहचरिउ' (मृगांकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है* जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की श्रीवृद्धि में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इससे उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक अनुराग सूचित होता है ; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किंतु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की बड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारों से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि-युग में साहित्य-रचना अनेक जैनेतर कवियों ने

---

*इस ग्रंथ के संपादक श्री कस्तूरचंद कासलीवाल की कृपा से प्राप्त।

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'पैंगल'* में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छंद जैनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जैन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत+ छंदों में भी एक बड़ी संख्या जैनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। बौद्ध सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जैनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिकाधिक की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जैन भंडारों में प्रवेश असंभव-सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर दी है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा प्रारंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जैन भण्डारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, संधिकालीन हिंदी तथा आदि-कालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोज्वल रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्वल और मूल्यवान रत्न सधारु कृत प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११; १४११ और १५११ में हुई है, किन्तु गणना के अनुसार सं० १४११ की तिथि ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना तिथि है। इस समय के आस-पास की निश्चित तिथियों की रचनाएं इनी-गिनी हैं, और जो हैं भी, इतने अधिक निश्चित रूप और पाठ की और भी कम है। आकार में यह रचना चउपई छंदों की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित श्री वृद्धि हुई है। यह बड़े हर्ष की बात है कि श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् को अतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चैनसुखदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

---

* सम्पादक-चन्द्रमोहन घोष, प्रकाशक-एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुतुङ्ग का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिजिन विजय द्वारा सम्पादित-पुरातन प्रबन्ध संग्रह।

जिनकी सहायता से इस रचना का पाठ निर्धारण पाठानुसंधान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों का सन्तोषजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोषों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सागर में ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी खेद का विषय है। ऐसी दशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से बधाई देता हूं। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नव-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने संकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अन्यथा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग
३१-६-५६.

माताप्रसाद गुप्त

प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायबहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्च रिपोर्ट' सन् १६२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख वीर सेवा मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अगरचन्द नाहटा बीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १६४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है ?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :—

"उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारु या सधारु था। वे अगरोवह से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूची कर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगवर सन्त पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र व शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर बसन्त होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्वत् १४११ की इतनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है।"

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १९५४ में जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अवसर पर उसी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम जब पूरा हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कासलीवाल और श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामां (भरतपुर) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डरों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्वत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खंडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्वत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वहीं के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर (जैन) आगरा निवासी सम्वत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०१ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का वही नाम देख कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुशीलन' वर्ष ६ अङ्क १-४ में 'सम्वत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित्र का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निश्चय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गई। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंघी ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्राहलय की है। इन चारों प्रतियों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री बधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में ३४ पत्र हैं। पत्रों का आकार ११½ × ५½ इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्वत् १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६८० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के पश्चात् प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो वे बढ़ गईं, शेष ४ छंदों की संख्या लिखने में गल्ती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६८० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

(२) दूसरी प्रति ('क' प्रति)

यह प्रति कामां (भरतपुर) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार १० × ४½ इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के पश्चात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवत: १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २८ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

(३) तीसरी प्रति ('ख' प्रति)

यह प्रति देहली के सेठ के कूंचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवी ला० पन्नालाल अग्रवाल की कृपा से नाहटाजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ हैं जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह सम्वत् १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रहलाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इसकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

संवत् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साहजहा राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे पहिलाद। शुभमस्तु।

(४) चौथी प्रति ('ग' प्रति)

यह प्रति सिंधिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल संवत् १६३४ आसोज बुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय विनयसुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नवरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से (ख प्रति में ७ वें पद्य से) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिषभ अजित संभौ जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी।
अभिनंदनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥

पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिंद करहि तुम्ह सेव।
चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिंद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥

नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुपु मुकति भयो भासु।
सीतल नाथ श्रेयांस जिणंदु, जिण पूजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥

वासपूज्य जिणधर्म सुजाण, भवियण कमल देव तुम्ह भाणु।
चक्र भवनु साई संसारु, स्वर नरकउ सु उलंघण हारु ॥ ४ ॥

विमलनाथ जउ निम्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि।
सो जिण अनंतु वारंवार, अष्ट कम्म तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥

जउ रे धर्म्म धम्मधुरवीर, पंच सुमति वर साहस धीर।
जैरे सति तजी जिणि रीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कंथु अरह चक्कवइ नरिंद, निर्ज्जर कर्म्म भयो सिव इन्द ।
जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरी लेवि अवतारु ॥ ७ ॥

मल्लिनाथ पंचेन्द्री मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल ।
जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिनंद ॥ ८ ॥

जउरे नामि गुण ग्यांन गंभीर, तीन गुपति वर साहसधोर ।
निलोपल लंछन जिनराज, भवियण वहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥

सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु ।
जाउरे जिणवर नेमि जिणंद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंदु ॥१०॥

आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर ।
जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥११॥

मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ ।
कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणेसर वीर ॥१२॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् ५८ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहटाजी जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रद्युम्न-चरित' की एक और प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा संवत् १६६६ श्रावण बुदी ६ आदित्यवार की लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा उनका १०½ × ४½ इञ्च का आकार है। इसमें पद्य सख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेपता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विस्तृत स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वासु, कासमीरि पुरियउ निवासु ।
हंसि चडी करि वीणा लेइ, कवि सधारु सरसै पणवेइ ॥ १ ॥

पणमावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चक्केसरि देइ ।
अंवाइणि रोहण जो सारु, सासण देवि नवइ साधारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमासणि लीण, करहिं आलवणि वाजहि वीण।
आगमु जाणि देइ वहुमती, पुणु पणावौं देवी सुरस्वती ॥ ३
जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथि लकुटि ले आगै होइ।
भवियहु दुरिय हरइ असरालु, आगिवाणि पणवउ खितपालु ॥ ४
संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए।
भादव सुदि पंचमि जो सारु, स्वाति नक्षत्रु सनीश्चरु वारु ॥ ५
वस्तुबंध :—

णविवि जिणवर सुद्ध सुपवित्तु

नेमीसरू गुणनिलउ, स्याम वर्णु सिवएवि नंदणु।
चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकणी घण माण मद्दणु।
हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवणासु।
सासइ सुह पावहं हरणु, केवलणाण पसु ? ॥ ६ ॥

विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायें:—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुण्य पुरुषों में से एक हैं। इनकी गणना चौबीस कामदेवों (अतिशय रूपवान) में की गई है। यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे। यह चरमशरीरी (उसी जन्म से मोक्ष जाने वाले) थे। इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आकर्षणों से भरा पड़ा है। मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्बलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही खूबी से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र सर्व प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है। फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयम्भू कृत रिट्ठणेमिचरिउ (८ वीं शताब्दी) में, पुष्पदन्त के महापुराण (६–१० वीं शताब्दी) में तथा धवल के हरिवंश पुराण (१० वीं शताब्दी) में वह प्राप्त होता है। इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनायें मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

क्र० सं०	रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	रचना काल
१.	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	११वीं शताब्दी
२.	पज्जुण्णकहा	सिंह अथवा सिद्ध	अपभ्रंश	१३वीं शताब्दी
३.	प्रद्युम्नचरित	कवि सधारु	हिन्दी	सं० १४११
४.	प्रद्युम्नचरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१५वीं शताब्दी
५.	प्रद्युम्नचरित्र	रइधू	अपभ्रंश	१५वीं शताब्दी
६.	प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	सं० १५३०
७.	प्रद्युम्न चौपई	कमलकेशर	हिन्दी	स० १६२६
८.	प्रद्युम्नरासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	स० १६२८
९.	प्रद्युम्नचरित्र	रविसागर	संस्कृत	सं० १६४५
१०.	शाम्बप्रद्युम्न रास	समयसुन्दर	राजस्थानी	सं० १६५९
११.	प्रद्युम्नचरित्र	शुभचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१२.	प्रद्युम्नचरित्र	रतनचन्द्र	संस्कृत	सं० १६७१
१३.	प्रद्युम्नचरित्र	मल्लिभूषण	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१४.	प्रद्युम्नचरित्र	वादिचन्द्र	सस्कृत	१७वीं शताब्दी
१५.	शाम्बप्रद्युम्न रास	ज्ञानसागर	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१६.	शाम्बप्रद्युम्न चौपई	जिनचन्द्र सूरि	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१७.	प्रद्युम्नचरित्र	भोगकीर्ति	संस्कृत	——
१८.	प्रद्युम्नचरित्र	जिनेश्वर सूरि	संस्कृत	——
१९.	प्रद्युम्नचरित्र	यशोधर	संस्कृत	——
२०.	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	—	हिन्दी गद्य	——
२१.	प्रद्युम्नप्रबन्ध	देवेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	सं० १७२२
२२.	प्रद्युम्नरास	मायाराम	हिन्दी	सं० १८१८
२३.	शाम्बप्रद्युम्न रास	हर्षविजय	हिन्दी	सं० १८४२
२४.	प्रद्युम्नप्रकाश	शिवचन्द	हिन्दी	सं० १८७९
२५.	प्रद्युम्नचरित	बख्तावरसिंह	हिन्दी गद्य	सं० १९१४

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य (११ वीं शताब्दी) के संस्कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पज्जुण्णकहा (१३ वीं शताब्दी) के पश्चात् हिन्दी में

सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सधारु को है। इसी रचना के पश्चात् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गई। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता लगता है।

प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें विदा कर दिया, पर जब वे सत्यभामा का कुशल-क्षेम पूछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अपमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहां से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ बिवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में बिठाने के पश्चात् उन्होंने रुक्मिणी को छुड़ाने के लिये सभी प्रतिपक्षी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सम्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूब उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से भेंट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र की माता के बालों का अपने पुत्र के विवाह के समय मुण्डन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की ६ठी रात्रि को ही धूमकेतु नामक असुर हरण कर लेगया और पूर्व भव के वैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्याधरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ विमान द्वारा उधर से जारहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उसके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

उधर रुक्मिणी पुत्र वियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहां आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायब होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने विदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहां से पता लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहां प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पांच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहरथ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहरथ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहरथ पर चढ़ाई करदी। पहिले तो राजा सिंहरथ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहरथ को बांधकर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे युवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण सब कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन सब कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे वन-क्रीड़ा के बहाने वन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहां उसने फुंकार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस डरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूंछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यक्ष रूप में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और वीर प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दी। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहां के रक्षक कालासुर दैत्य को हरा कर वहां से चंवर छत्र प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, वीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रक्षक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर मकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहां भी गये वहां से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रहीं इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे उनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उस पर बड़ा खुश हुआ। इस अवसर पर वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे तैसे अपना पीछा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले ली। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के छिन जाने पर स्त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिणी विद्या द्वारा अपने भाइयों के इरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बांधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं ठहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के साथ द्वारका नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहां दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिषेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की मांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुंच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक बूढ़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को उचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बीस योद्धा भी उसे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे उठाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की बाड़ी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार बाड़ी में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे बाड़ी से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई कुछ स्त्रियां मिलीं, जो मंगल गीत गा रही थीं। उनको भी उसने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की बावड़ी पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूंड लिये। जल सोखिणी विद्या द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उंडेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मेंढा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहां से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषधारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का जितना भी सामान जीमन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब वमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के सभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की याचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के खा सकने योग्य लड्डू उस ब्रह्मचारी को परोस दिये। उन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डुओं को उसे खाते देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियां जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आईं तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी विकृत कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े कुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे लेट गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनता से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने सिंह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

अखाड़े में डाल दिया। फिर उसने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहां नारद और उदधि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की बांह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सामर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलबली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ डटे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नींद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि वह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी वार करते उसे प्रद्युम्न अविलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहां आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिर चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और सारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बांधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसंवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह बड़े ठाठ बाट से किया गया। सत्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंबुकुमार का जीव अच्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम हार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह हार देंगे उसी की कूंख से उसका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह हार सत्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप सत्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोखे में डाल दिया और वह हार उसके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और सत्यभामा दोनों के क्रमशः शंबुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे बड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शंबुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द के पास कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार को अपनी कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की। रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई। प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया। प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया तथा युद्ध में रूपचन्द को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया। अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द ने अपनी पुत्रियां दोनों कुमारों को भेंट कर दी।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों को भोगा। एक दिन वह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा। वहां केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई। माता--पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन-दीक्षा ले ली। तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूप:—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यत: दो आधार हैं—एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण। आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारायें विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं। प्रद्युम्न चरित की कथा जिनसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है। यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबंध में हरिवश पुराण में दी हुई है। उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है। दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है। हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने वरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण (महापुराण का उत्तरार्द्ध) में प्रद्युम्न चरित की कथा संक्षेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

की सभा में आगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल वध, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे प्रज्ञप्ति नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य पज्जुण्णकहा॰ (१३ वीं शताब्दी) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पज्जुण्णकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रम्द्युन के पूर्वभवों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पज्जुण्णकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधारु कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित हैं। पज्जुण्णकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुपचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई हैं उसमें और सधारु कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यकों के लिये ही नहीं किन्तु जैनेतर साहित्यिकों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

॰ आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में इसकी हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।

हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। इसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्बरासुर ने हर लिया और उसे लवण समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मछेरों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फांस लिया और शम्बर को भेंट कर दिया। जब शम्बर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो वह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहां नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे सब प्रकार की माया सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्बरासुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहां पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों पश्चात् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना।
(२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण।
(३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझाना।
(४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्बरासुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहां उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्बरासुर को मार कर मायावती से विवाह करना।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है।

बौद्ध साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके।

कवि का परिचय

रचना के प्रारम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'सधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर 'सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। +कवि ने अपने जन्म से अग्रवाल जाति को विभूपित किया था। इनकी माता का नाम सुधन था जो गुण वाली थी। पिता का नाम साह महराज था, अन्य प्रतियों में साहु महराज एवं समहराइ भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरिछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक जान पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी जैन सन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

अपना परिचय देने के पश्चात् कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को पढ़ेगा वही मरने के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा उसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि प्रद्युम्न का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

\+ मइसामी कउ कीयउ वखाणु, तुम पज्जुन पायउ निरवाणु।
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥
सुधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ, सा महराज घरह अवतरिउ।
एरछ नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥
सावयलोय वसहि पुर माहि, दह लक्खण ते धर्म्म कराइ।
दस रिस मानइ दुतिया भेउ, झावहि चितह जिणेसरु देउ ॥

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही पण्डित वर्ग से वह क्षमा याचना करता है।

रचना काल :—

अब तक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं इन सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है। इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्वत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं। यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्वतों में कौनसा सही सम्वत् है। विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है:—

(१) अग्रवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला की प्रतियों में सम्वत् १३११ लिखा हुआ है।

(२) बधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और बाराबंकी वाली प्रतियों में रचना सम्वत् १४११ दिया हुआ है।

(३) सिंधिया ओरिएंटल इन्स्टीट्यूट उज्जैन वाली प्रति में सम्वत् १५११ दिया हुआ है।

सम्वत् १३११ वाले रचना काल के सम्बन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है :—

संवत् तेरहसै हुइ गये ऊपर अधिक इग्यारा भये।
भादौ सुदि पंचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार।

उक्त पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्वत् १३११ भादवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था।

सम्वत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है :—

सरसकथा रसु उपजइ घणउ, निसुणहु चरितु पजूसह तणउ।
संवत् चौदहसै हुइ गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए।
भावव दिन पंचइ सो सारु, स्वाति नक्षत्र सनीश्चर वारु ॥१२॥
जयपुर वाली प्रति

सरसकथा रस उपजइ घणाउ, निसुणाउ चरित पज्जउवन तणाउ ।
संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।
भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।
देवलोक आणोत्तर सार, हरिवंश आव्याउ वंश सधार ॥१२॥

खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर कामां

उक्त पद्यों में जयपुर वाली प्रति में सम्वत् १४११ भाद्रपद मास पंचमी शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्वत् १४११ भादवा सुदी ६ शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है । दोनों प्रतियों में तिथियों के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं ।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अरु तह भया ।
भादव वदि पंचमि तिथि सारु, स्वाति नक्षत्र सनीस्चरवारु ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्वत् १५११ भादवा बुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी ।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है । इसलिये यह तो निश्चित है कि प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एवं शनिवार के दिन हुई थी । किन्तु रचना सम्वत् कौनसा है, यह हमें देखना है । तीनों रचना सम्वतों में सम्वत् १५११ वाला रचना काल तो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि प्रथम तो यह सम्वत् अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है । इसके अतिरिक्त 'पंचसइ' पाठ स्वयं भी गलत है इससे पन्द्रह सौ का अर्थ नहीं निकलता इसलिये सम्वत् १५११ वाले पाठ को सही मानना युक्ति संगत नहीं है । सम्वत् १३११ वाला पाठ जो अभी तक ३ प्रतियों में मिला है, उसके सम्बन्ध में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक किसी विद्वान् ने सम्वत चौदहसै के स्थान पर तेरहसइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने के लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो बखान' पाठ बदल दिया । इसके अतिरिक्त इस कवियशः प्रार्थी ने आरम्भ के जिन पद्यों में सधारु का नाम था उनके स्थान पर नये ही मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये ।

अब रहा सम्वत् १४११ का रचना काल। इस रचना सम्वत के सम्बन् में सभी विद्वान् एक मत हैं। श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल क विवेचन करते हुए लिखा है [१] कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनक कहना है कि बदी पंचमी, सुदी पचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वा नक्षत्र नहीं पड़ता। डा० माताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर ज तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भादवा सुदी ५ शनिवार है। स रिपोर्ट के निरीक्षक रायबाहदुर स्व० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट [२] में लि है कि संवत १४११ भादवा बुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है लेकिन उनका भी बुदि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठी नहीं बैठता है। इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत १४१ भादवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है। प्रद्युम्न चरि में जो 'भादव दिन पंचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मू पाठ 'भादव सुदी पंचमी सो सारु' यही होना चाहिये।

प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल नेदस वीं शताब्दी लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल मा है। शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्त इतिहास में विवेचनीय मानी है। इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रा (२) हम्मीर रासो (३) कीर्त्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीस लदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रि (१०) परमाल रासो (११) खुशरो की पहेलियां और (१२) विद्यापति पद वलि। उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदि काल लक्षण निरुपण और नामकरण हो सकता है। इनमें से अन्तिम दो त 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं। अतः आदिका का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप

---

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ९ अंक १–४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5t of the dark of Bhadva month which on calculations regular Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

Search Report 1923–25 P-17.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन बारह रचनाओं के आधर पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है [१] कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भु के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भापा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भापा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विपय की उच्चकोटि की रचनायें है।

---

१ हिन्दी साहित्य का आदिकाल (डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी)

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पउमचरिय', 'रिट्ठणेमिचरिउ' तथा 'स्वयम्भू छन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरिउ' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट भाषा शास्त्री थे। इनके काव्यों में घटना बाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एवं पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ६३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्वत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे, इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'सावयधम्म दोहा' उन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्वत् ६६० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', जसहरचरिउ' एवं 'णायकुमारचरिउ' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एवं शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविसयत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धक्कड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संधियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आकर्षक ढङ्ग से हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाहचरिउ' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में धीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरिउ' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरिउ' वीर एवं शृङ्गार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंसण चरिउ' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंसणचरिउ' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। बाण एवं सुबन्धु ने जिस क्लिष्ट एव अलंकृत पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इस पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ५५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें संस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरिउ' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसकी भाषा उदात्त भावों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले धाहिल का 'पउमसिरिचरिउ' एवं अब्दुल रहमान का 'सन्देशरासक' भी उल्लेखनीय काव्य है।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द, हरिभद्र, सोमप्रभ, विनयचन्द आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दानुशासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में पं० लाखू ने 'जिणयत्त चरिउ' जयमित्रहल ने 'वड्ढमाणकव्व' कवि सिंह ने 'पज्जुहण चरिउ' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मसूरि का 'जम्बूस्वामीरास', रल्ह का जिणदत्त चउपई' (संवत् १३५४) घेल्ह का 'चउबीसी गीत' (सवत् १३७१) भी उल्लेखनीय रचनायें है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी की रचना

जिणदत्त चउपई है जिसे रल्ह कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५५० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किस तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है–"इस युग के साहित्य सृजन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है।[१] परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नींव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

---

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७) पल्ह (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिभद्रसूरि (सं० १२४१), नेमिचन्द्र भण्डारी (सं० १२५६), आसगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह रयण और भत्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८६), सुमतिगणि (१२६०), जिनेश्वरसूरि (१२७८–१३३१), अभयतिलक (सं० १३०७), लक्ष्मीतिलक (स० १३११–१७), सोममूर्त्ति (सं० १२६०–१३३१), जिनपद्मसूरि (सं० १३०६–२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५–५३), जगडु (सं० १३३१), संग्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०–६२), प्रज्ञातिलकसूरि (सं० १३६३), वस्तिग (सं० १३६८), गुणाकर–सूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेरु (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), सारमूर्त्ति (१३६०), जिनप्रभसूरि (१३६०–६०), सोलण (१४ वीं शताब्दी), राज–शेखर सूरि (सं० १४०५), जयानंदसूरि (सं० १४१०), तरणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (१४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द (सं० १४२६), जिनरत्न सूरि (सं० १४३०), मेरुनन्दन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १४४०), साधुहंस (सं० १४४५)।

जैन विद्वानों की लोक भाषायें लिखने में रुचि होने के कारण इन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया।

प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर (सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है। उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अवश्य किया गया है। इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शार्ङ्गधर आते हैं। किन्तु उनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य— गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं। हां, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं। शार्ङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है। एक पद्य देखिये—

पिधउ दिढ सरणाह वाह उप्पर पक्खर दइ।
बंधु समदि रण धसउ हम्मीर वअण लइ॥
उड्डल गाह पह भमउ खग्ग रिउ सोसहि डारउ।
पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पव्वअ अप्फालउ॥
हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहाणल मुहमह जलउ।
सुलताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरसूरि (१४०५), जयानंदसूरि (१४१०), तरुणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं० १४१२), जिनोदय सूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं। किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ इन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है। विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

नयण वयण कर चरणि जिण वि पंकज जलि पाडिय ।
तेजिहि तारा चंद सूर आकासि भयाडिय ॥

इसलिये यह कहा जा सकता है कि सधारु कवि अपने समय के अकेले हिन्दी कवि हैं; जिन्होंने इस प्रकार का प्रबन्ध काव्य, लिखने का प्रयास किया था ।

हिन्दी साहित्य में प्रद्युम्न चरित का स्थान :

'प्रद्युम्न चरित' हिन्दी भापा में अपने ढंग का अकेला काव्य है । वह पुरानी हिन्दी एवं नवीन हिन्दी काव्यों की मध्य की कडी को जोडने वाला एक श्रेष्ठ काव्य कहा जा सकता है । चउपई, एवं वस्तुबंध-छन्द में लिखा जाने वाला यह यद्यपि पहिला काव्य नहीं है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो इसे प्रथम स्थान मिलना चाहिये । आगे चलकर जिन हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं में चौपई छन्द को मुख्य स्थान दिया है उन पर अधिकांश रूप से जैन रचनाओं का प्रभाव है । चउपई छन्द क्या कवि और क्या पाठक दोनों के लिये ही प्रिय सिद्ध हुआ है ।

प्रद्युम्न चरित को काव्य की दृष्टि से किस श्रेणी में रखा जा सकता है यह विचारने की वस्तु है । काव्य के साधारणतः दो भेद किये जाते हैं प्रथम 'प्रबन्ध-काव्य' दूसरा 'मुक्तक काव्य' । प्रबन्ध-काव्य के फिर तीन भेद हैं : महाकाव्य, खंड काव्य एवं चंपू काव्य । इसमें से प्रद्युम्न चरित मुक्तक काव्य तो हो नहीं सकता इसलिये यह अवश्य ही प्रबन्ध काव्य है । डा० रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली पृष्ठ ६६ प्रबन्ध काव्य का जो लक्षण दिया है वह निम्न प्रकार है—

"प्रबन्ध काव्य में मानव जीवन का पूर्ण दृश्य होता है । उसमें घटनाओं की संबद्ध शृंखला और स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले, उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिये । इति वृत मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता । उसके लिये घटना चक्र के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं और व्यापारों का प्रतिबिंबवत चित्रण होना चाहिये जो श्रोता के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में समर्थ हो । अतः काव्य में घटना का कहीं तो संकोच करना पड़ता है और कहीं विस्तार ।"

प्रद्युम्न चरित में डा० रामचन्द्र शुक्ल का प्रबन्ध-काव्य वाला लक्षण ठीक बैठता है। इसमें घटनाओं का शृंखलाबद्ध क्रम है, नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश है। इन सबके अतिरिक्त यह काव्य के श्रोताओं के हृदय में रसात्मक तरंगें उठाने में भी समर्थ है। इसलिये प्रद्युम्नचरित को निश्चित रूप से प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है।

प्रद्युम्नचरित ६ सर्गों में विभक्त है उसमें विरह, मिलन, युद्ध वर्णन, नगर वर्णन, प्रकृति-वर्णन एवं इन सबके अतिरिक्त मायावी विद्याओं का वर्णन मिलता है। उसका नायक १६६ पुण्य पुरुषों में से एक है। वह अतिशय पुण्यवान् एवं कलाओं का धारी है। वह धीरोदात्त प्रकृति का नायक है।

काव्य के प्रवाह को स्थिर एवं प्रभावोत्पादक रखने के लिये अवान्तर कथाओं का होना भी प्रबन्ध काव्य के लिये आवश्यक है। अवान्तर कथाओं से पात्रों का चरित निखर जाता है और वे पाठकों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर लेती हैं। प्रस्तुत काव्य में रुक्मिणी-हरण तथा नारद के विदेह क्षेत्र में जाने की घटना, सिंहरथ युद्ध वर्णन, उदधिकुमारी का अपहरण, भानुकुमार के विवाह का वर्णन, सुभानु तथा शंबुकुमार का द्यूत-वर्णन आदि कथायें आयी हैं। इनसे 'प्रद्युम्न चरित' के काव्यत्व की उत्कृष्टता में वृद्धि हुई है।

पूरे काव्य में घात-प्रतिघात खूब चला है। पाठकों का ध्यान किञ्चित् भी दूसरी ओर न बँट सके; इसलिये कवि ने अपने काव्य में ऐसे प्रसंगों को पर्याप्त स्थान दिया है। स्वयं नायक के जीवन में ही आश्चर्यकारी घटनाओं का बाहुल्य है। धूमकेतु असुर द्वारा उसको शिला के नीचे दबाया जाना, फिर कालसंवर द्वारा उसका बचाया जाना, उसे गुफाओं के दिखाने के बहाने अनेक विपत्तियों में फंसाना, किन्तु उसका अनेक विद्याओं के लाभ के साथ वापिस सुरक्षित निकल आना, सिंहरथ के साथ युद्ध में विजय-श्री का प्राप्त होना, स्वयं कालसंवर एवं फिर द्वारका में श्रीकृष्ण के साथ भयंकर युद्ध होना एवं उसमें भी विजय लक्ष्मी का मिलना आदि कितने ही प्रसंग उपस्थित होते हैं। जब पाठकों को नायक को विपत्ति में फंसा हुआ देखकर पूर्ण सहानुभूति होती है और जब वह वहां से विजय के साथ निरापद लौटता है तो पाठक प्रसन्नता से भर जाते हैं।

'प्रद्युम्न चरित' एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के पश्चात् जिन दीक्षा धारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं ; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सामान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है ; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, सुभानुकुमार, नारद, कालसंवर सिंहरथ, रूपचंद आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्ज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु 'प्रद्युम्न चरित' में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होतीं। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानुकुमार, सिंहरथ, रूपचंद, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहरथ एवं रूपचंद से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं ; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानुकुमार बचते हैं; किन्तु भानुकुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया ; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रुप में प्रकट होने के पहिले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानुकुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानुकुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानुकुमार के साथ सौमनस्य नहीं था। भानुकुमार की मांग-उदधिकुमारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उसने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानुकुमार को खलनायक सिद्ध नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में कैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौशल दिखलाने के लिये श्रीकृष्ण

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य विना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

'प्रद्युम्न चरित' वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। वैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण–जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न–सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न–कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण–युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द–युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध-वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक सर्ग में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। "रहिवर साजहु, गयवर गुडहु, सजहु सुहड, आज रण भिडउ" के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को वालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरोचित जवाब है :—

वालउ सूरु आगासह होइ, तिन को जूझ सकइ धर कोइ।
वाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमरिण मंतु न आहि ॥१६८॥
सीहिणि सीहु जणै जो वालु, हस्ती जूह तणो वे कालु।
जूह छाड़ि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

इसी प्रकार जव श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उसके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, वर्छी, वाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० वाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निवाण जलवाण, वायुवाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु वाण और जलवाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन विद्याओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है इसलिए इसका मुख्य रस वीर होने पर भी वह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस भी जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिरिण दिठा परदवरणु।

सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयरणु फुरिण कंठ लायउ।
अब मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्र आयउ ॥
दस मासइ जइउ धरिउ, सहोए दुख महंत।
वाला तुरणहं न दिठ मइ, यह पछितावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तरणे वयरणु निसुरणेइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ।
खरण इकुमाह विरधि सो कयउ, फुरिण सो मयरण भयउ वेदहउ॥४३०॥
खरण लोटइ खरण आलि कराइ, खरण खरण अंचल लागइ धाई।
खरण खरण जेत्वरणु मागइ सोइ, वहुवु मोह उपजावइ सोइ ॥४३१॥

इसी प्रकार वीभत्स रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। श्री कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लडाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु।
ठाठा रुहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥
गीधीरणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जरणावहि सार।
वेगि चलहु सापडी रसोइ, ग्रसइ आइ जिम तिपत होइ ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छटी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव में हर एक के लिए हृदय द्रावक था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रहने लगी कि उसका शरीर कृश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही। करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहिं सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ।
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरू रोवइ वयण; आसू वहत न थाके नयण।
पूब्ब जन्म मैं काहउ कियउ, अव कसु देखि सहारउ हियउ॥१४१॥
की मइ पुरिष विछोही नारि, की दम्ब घाली वणह मझारि।
की मैं लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयु़उ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है। ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई संदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती हैं।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया। ८४ हांडियों में तैयार किये हुए व्यंजनों को तो वह बात की बात में चट कर गया। यहीं नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के उदरस्थ हो गया। फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसास्वादन करें:—

चउरासी हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि।
माडे कडे परोसे तासु, सवु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ।
जेतउ घालइ सवु संघरइ, बडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है। वैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्त: अपह्नुति अर्थातरन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी वहु सादु समुदु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुदु॥५५७॥

वह मूर्च्छित सेना इस प्रकार उठी मानों सातों समुद्र ही उलट कर चले हों।

२. वरसहि वाण सरे असराल, जाणौ घण गाजइ मेघ अकाल।

बाणों की निरन्तर वर्षा इस प्रकार होने लगी मानों अकाल के मेघ गाज रहे हों।

३.निसुणि वयण नरवइ परजलीउ,जाणौघीउ अधिकु हुतासणु परिउ।

वचनों को सुनकर राजा इस प्रकार प्रज्वलित हो उठा मानों अग्नि में खूब घी डाल दिया हो जिससे वह और भी प्रज्वलित हो गयी हो।

इस काव्य में चउपई छन्द का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है। इस छंद के अधिक प्रयोग होने के कारण ही किसी किसी लिपिकार ने तो 'प्रद्युम्न चउपई' ही ग्रंथ का नाम रख दिया है। चउपई छन्द के अतिरिक्त काव्य में वस्तुवन्ध, ध्रुवक, दोहा, सोरठा छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। इस काव्य में प्रयुक्त वस्तुवन्ध तथा अन्य रचनाओं में प्रयुक्त वस्तुवंध छन्द में कुछ अन्तर है क्योंकि अन्य रचनाओं में प्रयुक्त छन्द की प्रथम पंक्ति को दो बार बोला जाता है और इस काव्य में प्रथम पंक्ति का एक वार ही प्रयोग करके छोड़ दिया है। चौपई छन्द के अन्त में वस्तुवन्ध का उपयोग किया है और इसके पश्चात् भी चौपई छन्द का प्रयोग हुआ है।

भाषा की दृष्टि से अध्ययन—

भाषा की दृष्टि से प्रद्युम्न चरित व्रज भाषा का काव्य है। व्रज भाषा के सर्व मान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में पूर्ण रूप से मिलते हैं। डा० शिवप्रसादसिंह ने 'सूर पूर्व व्रज भाषा और उसका साहित्य' नामक पुस्तक में प्रद्युम्न चरित को व्रज भाषा के अद्यावधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन काव्य माना है। और उस पर अपनी पुस्तक में विस्तृत विवेचन किया है। व्रज भाषा वनाम खड़ी वोली नामक पुस्तक में डा० कपिलदेव सिंह ने व्रज भाषा के जो सर्व मान्य लक्षण वतलाये हैं वे निम्न प्रकार हैं—

१. व्रज भाषा में एक ही कार्य को सूचित करने वाले संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि में अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है।
२. व्रज भाषा की क्रियाओं में 'लाघव' है जो काव्य रचना के लिये बहुत ही उपयुक्त होता है।

३. व्रजभाषा का यह सर्व मान्य नियम है कि 'गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार'

४. व्रज भाषा में कारक चिह्नों का लोप क्षम्य है।

५. व्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु कवियों ने दोनों प्रकार के प्रयोगों की छूट ली है।

६. व्रज भाषा में तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग होना भी उसकी एक बड़ी विशेषता है—

अब हमें यह देखना है कि ये उक्त सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में कहां तक मिलते हैं।

१. प्रद्युम्न चरित में एक ही अर्थ को सूचित करने वाले संज्ञा सर्वनाम क्रिया अव्यय आदि में कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे

संज्ञा—

कृष्ण— कन्ह (५०,५७२)
कान्ह (६०,६६)
किसन (५४२)

प्रद्युम्न—

परदमणु (४१३)
प्रदवणु (५२२) प्रदुवनु (१३६)

सर्वनाम— तुभ (२८) तुभि (१०८) तुहि (४७०)
तुम्हि (२४८) तुम्ही (४७२)

अव्यय— इतु (३८३) इह (२८,३६) इहि
(४०,४७) उह (८१,३१२)

क्रिया— कंपइ, कंपत (३७८) कंपिउ (६७) (५०२)
दीठउ (६२) दीठि (४०) दीठी (२७)
दीठे (३७)

दीणउ (६४८) दीनउ (२६) दीनी (४७)
दीने (३५०)

२. ब्रज भाषा की दूसरी विशेषता—क्रियाओं को लाघव रूप बना कर प्रयुक्त करने की रही है। प्रद्युम्न चरित में भी यही विशेषता अक्षुण्ण रूप से दिखाई देती है यथा—

सुन करके— निसुणि (२४,४२)

बुला करके-- बुलाइ (१८७)

देख करके— निरखि (१०६) देखि (३२,४३)

पढ़ता है— पढ़इ (३१८)

दौड़ा करके — दौड़ाइ (३३०)

लिख पढ़ करके—लिखितु पढ़ितु—(१३७)

३. ब्रज भाषा के सर्व मान्य नियम—"गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार" का भी कवि सधारु ने अपने प्रद्युम्न चरित की भाषा में पालन किया है—जैसे—

क. सति भामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु बोलइ वयणा (६६)

ख. वाहुडि राउ विमाणा गयउ (१३३)

ग. जिन रुपिणि हीयरा बिलखाइ (१५६)

४. प्रद्युम्न चरित में कारक चिह्नों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है। अधिकांश स्थलों पर शब्द बिना कारक चिह्नों के ही प्रयुक्त हुये हैं—

कर्त्ता कारक— सारंग पाणि धनुप लौ हाथि
काल संवर तष वीडा देइ (१७२)
नारद वात मयणस्यो कही (२४७)
मुनि जंपइ मुहि नाहीं खोडी (२४८)

कर्म कारक— सेस पाल पठउ जमपंथि
फुणिर नेम जिन केवल भयउ (६६४)

सम्बन्ध कारक— सिंघ जुध जो जाणे भेउ। (१६५)
उवसंत मनि भयउ उछाहु (२२३)
तीनि खंड जो पुहमि नरेसु (३०६)

अधिकरण— इह वण चरण न पाव कोइ (३३६)

५. व्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु प्रद्युम्न चरित में दोनों ही प्रकार के प्रयोग हुये हैं—

संयुक्ताक्षर— ज्योति (६६०) ज्योनार (६५३)
नक्षत्र (११) धर्म्म (५६२)
प्रद्वण (५४६)

असंयुक्ताक्षर— जालामुखी (५) चकेसरी (५)
जादमराउ (४७५) कान्ह (४०)
सनमधु (६८६) वांभण (३२५)

६. व्रज भाषा के अन्य काव्यों की तरह प्रद्युम्न चरित में तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे—

सतिभामा (६३) वरम्हंड (५३६) मोसिहु (१६०) हीयरा (१६०) सकति (२६८) विरख (८४) पुहिमि (८१)

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्रजभाषा के सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में मिलते हैं।

भाषा की अन्य विशेषतायें

प्रद्युम्न चरित में आद्य या अन्त के अक्षर में कभी कभी अ का इ रूप भी कर दिया गया है—

जैसे तिसु (२) किमाड़ (१६) तिपत (५०१) हाथि (७७) विवाहि (२२७)

अ+उ या अ+इ का औ या ऐ उद्वृत्त स्वर से संध्यक्षर रूप में परिवर्तन करने की प्रथा प्राचीन व्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी मिलती है यथा—

चउवारे, चउक्क (५६२) चउत्थउ, चउतीसह (१७) किन्तु उद्वृत्त स्वरों के साथ २ संध्यक्षरों के प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में अन्य व्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं- यथा चोपास (३१४) चोपटु (३४२) चल्योउ (३३) पौरिप (४५३) सैन (२८८) रम्यो (२७०)

स्वर संकोच—प्रद्युम्नचरित में स्वर संकोच कितनी ही प्रकार से हुआ है जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

जादौराउ (यादवराव) ठाउ (स्थान) पून्न (पुण्य)

व्यञ्जन—प्रद्युम्नचरित में न और ण के विभेद को बनाये रखने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई नहीं देती जैसे—

मुनि के लिये मुणि

मानस ,, माणस

मदन ,, मयण

भानइ ,, भाणइ

किन्तु कहीं कहीं न के स्थान पर 'न' का ही प्रयोग हुआ है यथा- भानकुमार, मन, भामिनी आदि।

काव्य में ड और र की ध्वनियां भी कितने ही स्थानों पर आपस में मिल सी गयी है यथा—

पकडि तथा पकरि, लडइ और लरइ, वाहुडि तथा वाहुरि मुंदडी एवं मुंदरी तथा भिडे एवं भिरे।

प्रद्युम्नचरित में न्ह, म्ह एवं म्व का प्रयोग खूब किया गया है यथा पम्वाण (४१६) न्हाइ (५०६) तुम्ह (१२७) तिन्हि (५३६) जेम्वणु (३६१) तिन्हि (१)

इसी तरह 'क्ष' का छ बनाकर शब्दों को अधिक मधुर बनाने की चेष्टा की गयी है यथा-नछत्र (नक्षत्र) जच्छ (यक्ष) छण (क्षण) छत्री (क्षत्री)

सर्वनाम

प्रद्युम्नचरित में सर्वनामों के तीन ही भेदों का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि शब्दों में समानता नहीं है फिर भी काव्य में उनका विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है यथा--

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष—	हउं (१) मैं (१४१)	हमि (२७) हमइ (६५०)
	हौ (१४७)	हमारी (११३) हमारे
	मेरो (५४२) मेरी (३०१) मे (६०३)	
मध्यम पुरुष—	तू, तुमि (१०६)	तुम्हारउ (२६) तुम्हि (२४५)
	तु, तुम्ह (१२७)	तुमहि (४७०)
अन्य पुरुष—	वह (७६) सो (१)	ते (६३२) आदि।

अनिश्चय वाचक एवं प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिये—कोउ (२) काके (५५) किमइ (४४०) किम (४०५) आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यद्यपि काव्य में कारक चिह्नों का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु फिर भी रचना में कितने ही स्थलों पर उनका प्रयोग कर भी दिया गया है। इन कारकों में कर्मकारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक एवं अधिकरण कारक मुख्य है। यथा--

कर्म कारक—घाइ कम्मु को किउ विणासु

संख्या वाचक विशेषण—प्रद्युम्नचरित में संख्या वाचक विशेषणों का निम्न प्रकार से वर्णन हुआ है—

१. इकु (३४) इक (३७) एकु (२३७) एक (३०३) एकइ (५३६)
२. दुइ (३३) दूजी (१६७) दोइ (१८१)
३. तीजी (२००) तीजे (२०३) तीनि
४. चारयो, चारि (३२४) च्यारि (२०) चउत्थउ (८)
५. पांच (१३६) पंचति (४५६) पंचम (५६६)

६. छइ (८६) छठि (१२२)
७. सात (५१)
८. अठ (३) आठमउ (८)
९. नवउ (९)
१०. दसह (४६६) दस (४)
११. ग्यारह (११)
१२. द्वादस (३७४)
१३. तेरह (६८९)
१४. पंद्रह (५४८)
१५. सोलह (८०) सोलहउ (९)
१६. सतरह (१०)
१७. अठ्ठारह (२०) अठार (१७६)
१८. एगुणसीवार (१०)

क्रिया पद

ब्रजभाषा में संयुक्त क्रिया का बहुत प्रयोग होता है प्रद्युम्नचरित में भी ऐसे प्रयोग खूब देखने को मिलते हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया दोनों के ही पदों का प्रयोग देखने को मिलता है। सहायक क्रिया मुख्य रूप से भू धातु से बनी है और उसके प्रद्युम्नचरित में निम्न रूप प्राप्त होते हैं—

वर्तमान काल—होइ (१) कवितु न होइ
होहि (७४) रहि रूपिणी वामा काहरि होहि
हुइ (११) संवतु चौदहसै हुई गये

भूतकाल—(१) ढाठउ भयउ (२९)
(२) उपर अधिक ग्यारह भए (११)
(३) आज पवित्तु भयो इह ठाउ (२८)
(४) निसुणि वयण कोप्यो परदवणु (१७८)

मुख्यक्रिया पदों का प्रयोग भी प्रद्युम्नचरित में ब्रजभाषा के अन्य अन्य काव्यों के समान ही हुआ है।

सामान्य वर्तमान--सामान्य वर्तमान काल में सभी क्रिया पदों को इकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है--यथा--

१. सो सधार पणमइ सरसुति। (१)
२. तिस कउ अंतु न कोउ लहइ। (२)
३. करइ गर्ज मेदनी विलसंतु। (२१)
४. रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ (६८६)
५. फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि (५२४)

आज्ञार्थ—वर्तमान आज्ञार्थ के रुप कभी भी शुद्ध रुप में प्राप्त नहीं होते। इसकी रचना अंशतः प्राचीन विधि (Potential) अंशतः प्राचीन आज्ञार्थ और अंशतः प्राचीन निश्चयार्थ से होती है (पुरानी राजस्थानी पृष्ठ ११६)। प्रद्युम्नचरित में आज्ञार्थ क्रिया पदों के निम्न रुप से प्रयोग मिलते हैं--

(१) रथ साजिउ सारथि वयसारि (५८)
(२) रहिवर साजहु गयवर गुरहु (७०)
(३) उदधिमाल तुमि मो कहु देहु (३०५)
(४) हीण अधिक जण लावहु खोडि (७०१)
(५) घर वेगे सामहणी करहु (२८६)

विध्यर्थ--

(१) कछुस मोल आइ तुम्हि लेउ (३४०)
(२) दुइ घोड़े ए ५रहु अघाइ (३४१)
(३) नयर मंगल किजइ (५६६)

भूत काल—वर्तमान काल में इकारान्त क्रिया पदों के समान भूत काल की क्रिया भी उकारान्त बनाकर प्रयोग की गयी है यथा—

(१) तिहि कुरखेत महाहउ भयउ (६६१)
(२) सतिभामा महिलउ पठयउ (४२३)
(३) रहवरु मोडि नयर महगयउ (२६२)
(४) कठिया जाइ संदेसउ कहिउ (३६८)

भविष्यत्काल--भविष्यत्काल में अधिकांश 'ह' वाले रूप ही मिलते हैं ग वाले रूप बहुत थोड़े तथा कहीं २ ही मिलते हैं।

(१) सो काहो जेम्वहिगे आइ (३६२)

(२) किम रण जीतहुगे महमहण (७३)

अन्य भाषाओं का प्रभाव--

व्रज भाषा के अतिरिक्त प्रद्युम्नचरित की भाषा पर मुख्य रूप से अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ा है। वास्तव में १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश भाषा के प्रभाव रहित किसी भाषा का काव्य लिखना भी दुष्कर कार्य रहा होगा। कवि ने यद्यपि अपभ्रंश के शब्दों का कम से कम प्रयोग करने का प्रयास किया है और पूरे काव्य में अपभ्रंश की एक गाथा उद्धृत की है, जिसके सम्बन्ध में अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह स्वयं कवि द्वारा निबद्ध है अथवा किसी अन्य रचना में से उद्धृत की है, किन्तु फिर भी रचना में अपभ्रंश शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। यहां अपभ्रंश के कुछ शब्द रचना में से उद्धृत किये जा रहे हैं--

अवलोइ (५४२) असराल (२८२) उच्छाह (५८६) तिजयणाहु (१२) णिव्वाणा (२३२) वीण (४) जइउ (४२६) अपमाण (४८३) अवरइ (३८१) उभाइ (१७०) कुकडहि (६१०) कोह (२८७) खेमु (६५४) खग (२१३) लोयपमाणु (६६०) लोयणु (५०७) वण (५६) विविह (१०७) सवेहु (५८८) सयल (२५८) सरसइ (३) नयर (१५) दुज्जण (६८६)

व्रजभाषा के अरिक्ति राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी कहीं कहीं प्रयोग स्वत; ही हो गया है जैसे--आगि (४७८) आपणी (६३१) दूख्यो (६३०) न्हानी (२३६) आदि।

प्रद्युम्न चरित की अन्य विवेषतायें--

प्रद्युम्न चरित यद्यपि अधिक बड़ा काव्य नहीं है। डा० माताप्रसादजी गुप्त के शब्दों में हम उसे सतसई कह सकते हैं क्योंकि पूरे काव्य में ७०१ पद्य हैं। प्रद्युम्न चरित में वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओं का भी अच्छा वर्णन किया गया है जिन में से कुछ का यहां संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है :--

१. सामाजिक सम्बन्ध, कृत्य उत्सव आदि--
सन्तानोदय, विवाह, स्त्री समाज
२. सेना के अस्त्र शस्त्र
३. नगर वर्णन
४. प्रकृति वर्णन

१:—सामाजिक सम्बन्ध कृत्य उत्सव आदि :—

(अ) सन्तानोदय—समाज में पुत्र होने पर खूब उत्सव मनाये जाते थे। प्रद्युम्न के जन्म पर द्वारका में खूब उत्सव मनाये गये। प्रत्येक घर में बधावा गाये गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल गीत गाये :--

दूहु नारि घर नंदण भए, घर घर नयरि वधावा गए।
सूहो गावइ मंगलचार, वंभण वेद पढ़इ झुणकार ॥१२०॥
वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार।
घरि घरि कूं कूं थापे देह, मंगल गावहि कामिनि गेह ॥१२१॥

(ब) विवाह—विवाह बड़ी धूमधाम से किये जाते थे प्रद्युम्न के विवाह के अवसर पर देश विदेश के राजा महाराजा सम्मिलित हुए थे। नगर को सजाया गया, वाजे वजाये गये तथा विवाह विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया था। ऐसे शुभ अवसरों पर ब्राह्मण लोग मंत्रोच्चारण करते थे एवं सौभाग्यवती स्त्रियां मांगलीक गीत गाती थी। प्रद्युम्न के विवाह का वृतान्त पढ़िये :—

संख सवुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ।
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥५८०॥
विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ।
वहु कलियरु नयरि उछलिउ, जन मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥५८१॥

(स) कवि और स्त्री समाज—

कवि ने प्रद्युम्न चरित में एक प्रसंग पर स्त्री समाज पर खूद आक्रमण किया है। तुलसीदासजी ने तो अपनी रामायण में स्त्री को 'ताड़न

का अधिकारी' कह कर ही सन्तोष कर लिया था, किन्तु सधारु कवि उनसे भी ४ कदम आगे चलते हैं। स्त्री समाज की निन्दा करते हुये कवि कहता है कि वह असत्य बोलती है और असत्य कार्य करती है तथा अपने पति को छोड़ कर अन्य के साथ रमती है। कवि ने अपनी बात की पुष्टि के लिये कुछ ऐसे उदाहरण भी दिये हैं जिन अवसरों पर स्त्रियों ने पुरुषों को धोखा दिया था।

तिरिय चरितु निसणाउ भरिभाउ,
विलख वदन भउ खगवइराउ।
अलियउ बोलइ अलियउ चलइ,
निउ पिउ छोड़इ अवरु भोगवइ ॥२६६॥
तिरियहि साहस दूणो होइ,
तिरिय चरित जिण फुलइ कोइ।
नीची वुधि तिम्वइ मनि रहइ,
उतिमु छोडि नीच संगइ ॥२६७॥
पयडी नीच देइ सो पाउ,
एसो तिवइ तणउ सहाउ ॥२६८॥

२—सेना प्रयाण :—

१. सेना के अस्त्र शस्त्र—

राजाओं के पास नियमित सेना होती थी जो संकेत मात्र से युद्ध के लिये तैय्यार हो जाती थी। शिशुपाल, कालसंवर श्रीकृष्ण एवं रूपचंद की सेना युद्ध के लिये संकेत मिलते ही तैय्यार हो गयी थी तथा अपने २ शस्त्रों को संभाल लिया था। गज, अश्व एवं पदाती सेना होती थी। शस्त्रों में कोंतु, तलवार, सेल, कटारी, छुरी, धनुष बाण आदि शस्त्र प्रयोग में लाये जाते थे। इन शस्त्रों के अतिरिक्त विद्याबल से भी युद्ध लड़ा जाता था।

२. विद्याओं के बल पर युद्ध करने की परम्परा—

प्रद्युम्नचरित में सभी अवसरों पर विद्याओं के बल पर युद्ध करवाये गये हैं। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण आदि कितने ही प्रकारों के बाणों का प्रयोग होना, प्रद्युम्न का कितनी ही विद्याओं में प्रवीण होना तथा उनके आधार पर सिंहरथ, काल संवर एवं श्रीकृष्ण की सेनाओं को मूर्छित करके हरा देना; कनकमाला से तीन विद्याओं की प्राप्ति एवं उनके बल पर कालसंवर

को हराना आदि घटनाएं प्रद्युम्न की लोकोत्तर शक्ति का परिचय देती हैं कि उस समय के युद्ध इस प्रकार की आश्चर्यकारी विद्याओं के द्वारा भी लडे जाते थे।

कवि को अलौकिक विद्याओं पर खूब विश्वास था। प्रद्युम्न जहां भी गया वहीं उसे विद्याएं प्राप्त हुई। कवि ने जिन १६ विद्याओं के नाम गिनाये हैं वे सभी अलौकिक विद्याएं हैं। यदि प्रद्युम्न को वे विद्याएं प्राप्त नहीं होती तो वह कभी किसी युद्ध में नहीं जीत सकता था क्योंकि सिंहरथ, कालसंवर एवं श्रीकृष्ण सभी उससे वल पौरुष में बढ़ कर थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी प्रत्येक सफलता का कारण उसकी अलौकिक विद्याएं थी।

३. नगर वर्णन—

प्रद्युम्नचरित में द्वारका का वर्णन किया गया है। यद्यपि वर्णन विस्तृत नहीं है किन्तु थोड़े से शब्दों में ही कवि ने नगर का काफी अच्छा वर्णन किया है। नगर में ऊंचे २ महल थे जिन पर विभिन्न प्रकार की पताकायें फहराती थीं। प्रद्युम्न जब नारद के साथ विमान द्वारा द्वारका पहुँचा तो नारद ने नगर के प्रमुख महलों का वर्णन करके उसे परिचित कराया था।

४. प्रकृति-वर्णन (वृक्ष एवं पुष्पलताओं का वर्णन)

सधारु कवि को प्रकृति-वर्णन भी प्रिय था। सत्यभामा के वाग का वर्णन करते हुये उसमें २५ से भी अधिक वृक्षों, पुष्पों एवं लताओं का वर्णन किया है। इस प्रकार का वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन अपभ्रंश साहित्य में भी खूब हुआ है और उसी का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है। प्रद्युम्नचरित में जिन वृक्षों एवं पौधों का वर्णन किया गया है वह निम्न प्रकार है—

जाइ जुही पाडल कचनारु, ववलसिरि वेलु तिहि सारु।
कूंजउ महकइ अरु करणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुंद टगरु मंदारु, सिंदूरु, जहि बंधे महइ सरीरु ।
दम्वरणा मरूवा केलि अरणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥
आम जंभीर सदाफल घरणे, बहुत विरख तह दाडिम्व तरणे ।
केला दाख विजउरे चारु, नारिंग करुरणा खीप अपार ॥३४७॥
नीवू पिंडखजूरी संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।
नारिकेर फोफल वहुफले, वेल कइथ घरणे आवले ॥३४८॥

उपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के प्राचीन चरित काव्यों में प्रद्युम्न चरित एक उत्तम रचना है और इसका हिन्दी साहित्य में भाषा और वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थान है। इसे ब्रज भाषा का आदि काव्य होने के कारण भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये आधार भूमि भी माना जा सकता है। ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी के अवलोकन से पता चलेगा कि कवि ने शब्दों के प्रयोग में कोई निश्चित लक्ष्य नहीं रखा किन्तु एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया है। इससे कवि की भाषा विषयक विद्वत्ता एवं तत्कालीन प्रचलित भाषा के विभिन्न प्रयोगों का भी पता चलता है। कवि ने कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो हमें हिन्दी के अनेकानेक शब्दकोशों में नहीं मिले हैं इसलिये इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी शब्दकोश में भी अभिवृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी भाषा के आदि कालिक काव्यों की संख्या में एक और की अभिवृद्धि ही नहीं होगी किन्तु विद्वानों को प्राचीन काव्यों की परम्परा जानने में भी सहायता मिलेगी। हिन्दी भाषा के अन्वेषण प्रिय विद्वानों को इस काव्य से एक दिशा निर्देश प्राप्त होगा और खोज के लिये अधिकाधिक प्रेरणा मिलेगी। प्राचीन हिन्दी साहित्य की अबतक पूरी खोज नहीं हुई है, नहीं कह सकते सधारु जैसे महान् कवियों की कितनी अमूल्य रचनाएं ग्रंथ भण्डारों के गहनांधकार में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं और हिन्दी सेवकों को कह रही हैं कि यदि अब भी तुमने ध्यान नहीं दिया तो हम सदा के लिए महाकाल के मुंह में विलीन हो जायेंगी।

ग्रन्थ का सम्पादन—

इस ग्रंथ का सम्पादन कैसा हुआ है और उसमें किस सीमा तक सफलता मिली है इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। हमें इस बात का संतोष है कि हमसे इस ग्रंथ का उद्धार हो सका और इस बहाने हम हिन्दी की यह सेवा पा सके। ग्रन्थ संपादन में मूल प्रति के अतिरिक्त तीनों प्रतियों के पाठ में यदि थोड़ा भी असाम्य ज्ञात हुआ तो उसे पाठ भेद में दे दिया गया है। यद्यपि मूल प्रति अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुन्दरता से लिपि की हुई है फिर भी कुछ पाठ अशुद्ध लिखे होने के कारण उनके स्थान पर अन्य प्रतियों के शुद्ध पाठ को ही देना अधिक उपयोगी समझा गया है। इसके अतिरिक्त मूलपाठ में कोई संशोधन अथवा संवर्द्धन नहीं किया गया है। शब्दानुक्रमणिका काफी विस्तृत होगई है किन्तु कवि द्वारा एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किये जाने के कारण उन सभी शब्दों को देना आवश्यक समझा गया, यही इसके विस्तृत होने का कारण है। हमें मूल ग्रंथ का हिन्दी अर्थ लिखने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ा; क्योंकि प्रद्युम्नचरित के बहुत से शब्द तो ऐसे हैं जो हिन्दी कोशों में खोजने पर भी नहीं मिले; तो भी जहां तक हो सका है शब्दों का ठीक अर्थ देने का ही प्रयत्न किया गया है।

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

धन्यवाद समर्पण—

अन्त में हम क्षेत्र कमेटी एवं विशेषतः कमेटी के मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को क्षेत्र द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित कराकर प्राचीन हिन्दी-ग्रन्थों को प्रकाश में लाने में सहयोग दिया है। श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ एवं श्री सुगनचन्दजी जैन के हम विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने प्रद्युम्नचरित के पाठ भेदों, शब्दानुक्रमणी एवं प्रूफ रीडिंग में हमें पूरा सहयोग दिया है। श्री भंवरलालजी पोल्याका जैनदर्शनाचार्य के

भी हम आभारी हैं जिनसे हमें ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी तैयार करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके अतिरिक्त डा० माताप्रसादजी गुप्त के भी हम बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे अनुरोध पर भूमिका लिखने एवं शब्दार्थ के निर्णय में भी सहायता दी है। श्री अगरचन्दजी नाहटा के प्रति भी हम आभार प्रदर्शित किये विना नहीं रह सकते जिन्होंने प्रद्युम्न चरित की प्रतियां उपलब्ध करने में अपेक्षित सहयोग दिया है। खण्डेलवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर कामां (भरतपुर) एवं वधीचन्दजी दि० जैन मन्दिर जयपुर के व्यवस्थापकों के भी हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने भण्डार की हस्तलिखित प्रतियां सम्पादनार्थ दी हैं।

चैनसुखदास
कस्तूरचन्द कासलीवाल

दिनांक १-१-६०

प्रथम पत्र

प्रद्युम्न चरित

स्तुति खण्ड

चौपई

सारद विणु मति कवितु न होइ, सरू[1] आखरू[2] णवि[3] बूझइ[4] कोइ ।
सो सधार[5] पणमइ सरसुति, तिन्हि[6] कहुं वुधि होइ कतहुती ॥१॥
सवु[1] को सारद सारद करइ[2], तिस कउ[3] अंतु न कोउ[4] लहइ ।
जिणवर मुखहु[5] जु णिगाय वाणि, सा सारद पणवहु[6] परियाणि ॥२॥
अठदल[1] कमल[2] सरोवरू वासु, कासमीरपुर[3] लियो निवासु ।
हंस[4] चढी कर लेखणि देइ, कवि सधार सरसइ पभणेइ ॥३॥
सेत[1] वस्त्र पदमवतीरण[2], करहं अलावणि वाजहि वीण ।
आगम[3] जाणि देहु[4] वहुमती, पुणु[5] दुइजे[6] पणवइ[7] सरसुती[8] ॥४॥

---

(१) १. सार (क) सारु (ग) २. अखिर (क) अक्खरु (ख) अक्षर (ग) ३. नवि (क) नउ (ख) कहइ सभु (ग) ४. बूझै (ख) ५. जोइ सधारि पणणि सरसति (क) जो सधारु पणवइ सरसुती (ख) जउ सधारु पनमइ सुरसती (ग) ६. ननमइ तिह नइ वुधि न हरती (क) तिन्ह कहु वुद्धि होइ मति (ग)

(२) १. सह (क) २. कहइ (ख) ३. को (क) ताकउ (ग) ४. कोइ (क, ख) ५. मुखि सो निश्चै जाणि (क) जउ मुख हति विद्या खणी (ग) ६. पणवउ परमाणि (क) सारद पनव वहुविधिघणी (ग)

(३) १. अट्ठदल (क,ख,ग) २. कवल (ग) ३. मुखमंडणवासु (क) पुरनिहनिवास (ख) पुरी लियो निवासु (ग) ४. हंसि चढि करि पुस्तकि लेइ (ग) (क) प्रति में तीसरा और चौथा पद्य निम्न प्रकार है—

जोइ सधारि पणवउं पणमेवि, सेत वस्त्र पदमावति देवि ॥३॥
करहि कला करि वीणा धति, आगम जाण देहु वहुमती ।
हंसासणि लेहइ दुख अति, दोइ कर जोड़ नमउं सरसती ॥४॥

५. साधारु (ग) सधारु (ख)

(४) १. स्वेत (ख) २. पदमासण (ग) पदमावतीलीण ३. आगमु (ख,ग) ४. विनउ (ग) ५. पुणि (ग) ६. दूजै (ग) ७. पणमउ (ग) पणवउं (ख) ८. वहु सरसुती (ग)

पदमावती दंड[१] कर लेइ, जालामुखी चकेसरी[२] देइ[३] ।
अंवमाइ[४] रोहिणि जो सारू, सासण[५] देवी नवइ सधारू ॥५॥

जिण सासण[१] जो विघन हरेइ,[२] हाथ[३] लकुटि लै उभौ होइ ।
भवियहु[४] दुरिउ[५] हरइ असरालु,[६] अगिवाणीउ पणउ खित्रपालु[७] ॥६॥

चउवीसउ[१] स्वामी[२] दुह हरण, चउवीसउ[३] मुक्के जर मरण ।
जिण[४] चउवीस नमउ धरि भाउ, करउ[५] कवितु जइ[६] होइ पसाउ ॥७॥

रिषभु[१] अजितु संभउ तहि भयउ, अभिनंदणु चउत्थउ वर्न्नयउ[२] ।
सुमति पदमु[३]प्रभु[४] अवरु सुपासु,[५] चंदप्पउ[६] आठमउ निकासु[७] ॥८॥

सुविधु[१] नवउ[२] सीतलु दस भयउ, अरु[३] श्रेयंसु ग्यारह जयउ ।
वासुपूजु अरु विमलु अनंतु ,धम्मु[४] संति सोलहउं पहूपहूंत ॥९॥

---

(५) १. भुरि करि लेइ (क) दंडु (ख, ग) २. सकेसरी (ग) चक्केसरि (क) ३. देवि (क) ४. अंवाइ ,रोहिणि जे सार (क) अंवउ हीनउ खंडि जौ सारु (ग) ५. सा सा प्रणमो नोइ सधार (क) सासण देवि कथइ साधारु (ख)

(६) १. जिन शाशनि (क) सासणि (ग) २. रहाइ (ग) ३. हाथि लकुटि सो उभउ होइ (क) हाथ लकटि ट्ठाढा लिउ लाइ (ग) ४. भवियण (क) ५. दुरी (क) दुरतु (ग) ६. असराल (क) ७. खेत्रपाल (क) खेत्रपालु (ख)

(७) १. चउवीसइ (क) २. सामी (क) ३. जे चउवीसइ मुक्का (क) चउवीसइ मुक्के ४. चउवीस ᳚इ नमो धरि भाव (क) जिण चउवीस णमउ धरि भाउ ५. करो (क) ६. जे (क)

नोट—७ वां पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(८) १. रिषभ अजित संभव तह भयउ (क) २. तहि थयउ (क) हरि थुयउ (ख) ३. पदम (क,ख) ४. यहु (ख) ५. पासु (ख) ६. चन्द्रप्रभु (क) चंदप्पहु (ख) ७. आट्ठमउ सुभासु (क) अट्ठमु ससिभासु (ख)

(९) १. सुविधि (क) सुविहि (ख) २. शीतल तह दसमउ भयउ (क) सु नवउ शीतलु दसमउ (ख) ३. जिण श्रीअंशइ ग्यारमो थयउ (क) जिण सेंयमु ग्यारहमउ जयउ ४. धर्म्म संति सोलमउ जिणिंद (क) धम्मु संति सोलहमु निरुत्तु (ख)

कुंथु[1] सतारह अर सु अत्थार, मल्लिनाथु[2] एगुणसी वार।
मुणिसुव्रतु[3] नमि नेमि[4] वावीस, पासु[5] वीरु महु देहि असीस ॥१०॥
सरस कथा रसु[1] उपजइ[2] घणउ, निसुणहु[3] चरितु पजूसह[4] तणउ।
संवतु चौदहसै[5] हुई गए,उपर अधिक[6] ग्यारह[7] भए ॥
भादव दिन[8] पंचइ सो सारू, स्वाति नक्षत्र[9] सनीश्चरवारू ॥११॥

वस्तु बंध छन्द—

णविवि[1] जिणवरू[2] सुद्ध[3] सुपवित्तु[4] ।
नेमिसरू गुण णिलउ सामि वपु[5] सिवदेवि[6] नंदणु ।
चउतीसह[•][7] अइसइ सहिउ कम्मवाण घण[8] मान मद्दणु ॥
हरिवंसर[9] रुहइ मणि तिजयणाहु[10] भय सासु ।
समयमुहं पंचज णाणु केवलणाण[12] पयासु ॥१२॥

---

(१०) १. कुंथ सतारह अर अठार (क) कुंथु भतारह अरु अठारु (ख) २. मल्लिनाथ उगणीस कुमार (क) मल्लिनाहु उणवीसमउ कुमारु (ख) ३. मुणिसुव्वउ (क, ख) ४ निमि (ख) ५. पास वीर ए इम चौवीस (ख) पासु वीरु अन्तिम चौवीस।

(११) १. रस (क) २. उपइ (ख) ३. निसुण (क) ४. पजउवन (क) पजुन्नह (ख) ५. चउदसइ इग्यार (क) चउदहसइइसु (ख) ६. अधिकइ (ख) ७. भईए ग्यार (क) संवत पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अरु तह भया (ग) ८. भाद्रवसु दिनम पीजे सार (क) भादव सुदी पंचमी सो सारु (ख) भादव वदि पंचमि तिथि सारु (ग) ९. नक्षित्र (क) नखित्र (ख) १०. सनीचरवार (क)

(१२) १. नमिय (क) नविवि (ख) २. जिणवर (क) ३. सुद्धु (ख) सतु (ग) ४. सपवित्तु (क) ५. सोमवयणु (क) साम्वण्णु (ख) स्यामवर्ण (ग) ६. एवि (ख) ७. बावीसमउ जिणेसरु (क) बावीसमु दयसहिउ (ख) ८. मद मोह खंजणु (क) मयमोहखंडणु (ख) ९. हरिवंशह तसु कमल रवि (क) हरिवंसह तह कमल रवि (ख) १०. तिजइ णाहु पयासु (क) तिजय नाहु हय पासु (ख) ११. चउपह नंदह तसु हरइ (क) चउविह संघह तसु हरइ (ख) १२. केवल ज्ञान प्रकासि (क) केवलनाण पयासु (ख) केवलज्ञान प्रगास (ग) • मूलपाठ "चउवीसहं हय दय सहिउ"

चौपई

पढमद्य[1] पंच परम गुरू नवणी, वीय जिणवर पय सरण
गुरू णीगांथु नउं धरि भाउ, करउं कवितु जउ होउ पसाउ ॥१३॥

द्वारिका नगरी वर्णन

जंबूदेशु[1] सुदंसणु[2] मेरू, लवणवुहि[3] वेढियउ[4] सु फेरू ।
भरह[5]खेत[6] दाहिण[7] दिसि अहइ, सोरठ देसु[8] माहि तिही वसइ[9] ॥१४॥
वसइ[1] गाम्व[2] ते नयर[3] समान, नयर विसेषइ[4] देव समाण[5] ।
यह[6] मंदिर धवल हर[7] उतंग, कणइ[8] कलस झलकंति सुचंग ॥१५॥

---

(१) पणरवि पणमो जिनवर वाणि, जामइ सुध वच्च गुण खाणि ।
करउ कवित जे करउ पसाउ, मोहिय जन तणा भनि भाइ (क)
पढम पंच परमेट्ठि णवेवि, वीरणाहु भत्तिय पणवेवि ।
जासु तितिथ मइ जिणवर धम्मु, पाविवि सहलु कियउ नर जम्मु । (ख)
पुणु पुणु पणविवि जिणवर वाणि जामइ सद्दअच्छ मणि खाणि ।
करइ कवित्तु जइ करइ पसाउ । महु पजुन्न करणें अणुराउ ॥

नोट—ग प्रति में प्रथम २ पंक्ति पीछे निम्न पाठ है—

दया धर्म्म दिनु रयणि, करइ स्तुति चउवीस वंदनु ।
संभ्रम भारु वहुविधि सहिउ, केवल ज्ञान प्रगास ॥
मुकत गउ खिइं कम्मकरि, वुहियण वंदहु तासु ॥

चौपई

पहिलइं भाइ पिता गुरु सरण, वीतराग जिणवर पाइ सरण ।
गुरु निरगंथु नवउ धरि भाउ, हुइ इक चित्ति मुझु करौ पसाउ ॥

(१४) २. दीप (क) दोउ (ख) द्वीप (ग) १. सुदंसण (क,ख,ग) ३. लवणोदधि (क,ग) ४. वेढयउ चहु फेर (क) वेढिउ चउ फेरु (ख) वेढ्यो चउ फेरि (ग) ५. भरत (क,ग) ६. षेत्र (क,ग) खेत्रु (ख) ७. तिह दाहिण दिसइ (क) तहो दाहिणा दिसइ (ख) दाहिणी दिसा (ग) ८. देसु (ख) देश (ग) ९. माझि सो वसइ (क) माझि तहो वसइ (ख) माहि तिसु वसा (ग)

(१५) १. वसहि (ख,ग) २. गाम (क,ख) गांव (ग) ३. तिह नगर समान (क) ते नयर समाण (ख) तहि नगर समाण (ग) ४. नयर सेवही (क) नयर विसेपहि (ख) नगर विसेपहि (ग) ५. विमाणु (क) विमाण (ख,ग) ६. मढ (क,ख) गढ (ग)

सायर माहि[1] द्वारिकापुरी, धराय जक्ष[2] जो रचि करि धरी ॥
वारह जोजरा[3] कै विस्तार, कंचरा कलस ति[4] दीसइ वार ॥१६॥

छाए[1] चउवारे वहुभंति, सुद्ध फटिक दीसह ससि[2] कंति ।
मार्ग्रज[3] मरिग जारगौ जडे किमाड, सोहहि मोती[4] वंदनमाल[5] ॥१७॥

इकु सोवन[1] धवलहर अवास[2], मढ मंदिर देवल[3] चउपास ।
चौरासी[4] चौहटे[5] अपार, वहुत[6] भाति दीसह सुविचार[7] ॥१८॥

चहु[1] दिस[2] राइर[3] गहिर[4] गंभीर[5], चहु दिस लहरि[6] झकोलइ नीर[7] ।
सो[8] वारवइ पयरा जारिगए, कोडिध्वज[9] निवसहिं[10] वारिगये ॥१६॥

---

७. धवल हर उतुंग (ख) देवल उत्तंग (ग) ८. कणइ कलस झलकंति सुचंग (क) काणय-कलस धय मंडिय तुंग (ख) विविह भंति दीसहि अति चंग (ग)

(१६) १. मझि (क) माहि सो (ख) २. धणय जखि सु रचिकरि धरी (क) धणय जक्ष सो रचि करि धरी (ख) धनयर जख वहुत विधि करी (ग) ३. जोयण कइ विस्तारि (क) जोयण कै वियारि (ख) जोजन कइ विस्तारि (ग) ४. झाहति झलकहि वारि (क) सोहत दीसहि वारि (ख) कलसज दीपहि वार (ग)

(१७) १. छाजे (क, ग) छजे (ख) २. ससि उदौ करंति (ग) ३. मरगत मणि वहु जड़े किवाड़ (क) मरगज मणि वहु जड़िय किवाड (ख) मरगज माणिक जडे किवाड (ग) ४. मोतिय (ख) ५. वन्दरवाल (क,ख,ग)

(१८) १. एक सुवन (क) इक सोवन (ख) इक सोवन्न (ग) २. आवास (क,ग) ३. देउल (क,ग) ४. चउरासी (क,ख,ग) ५. चउहटे (क,ख,ग) ६. वहुत भंति (क) विविह भंति (ग) ७. सविसार (क)

(१६) १. चउ (ख) २. दिसु (ख) दिसि (ग) ३. सायर (क) सायर (ख) साइर (ग) ४. गहिरु (ख) गहर (ग) ५. गंभीरु (ख, ग) ६. पवन (ग) ७. नीर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पंक्ति और है—

चहुं दिसि नाना वर्ण सिंगार, चहुं दिसि हाट अनुपम अपार ।

८. सो वारे सोहठे जाणिया (क) सा द्वारवइ पयरा जाणियइ (ख) धन धान सहित जाणीया (ग) ९. कोटीधुज (क) कोडीधज (ख) कोडिधजी (ग) १०. वसहि (ग)

धर्म[1] नेम को जाणहि[2] गम्वणि[3], अरू[4] तहि वसइ अट्ठारह[5] पवणि,
ब्राह्मण[6] खत्री वसहि[7] तियवर[8], वैस[9] सूद[10] तहिं[11] निमसहिं अवर।
कुली[12] छतीस[13] त सूअइ ठाइ, तिहि पुरि[14] सामिउ जादउ राउ ॥२०॥
दल वल साहण[1] गणत[2] अनंत, करइ गर्ज[3] मेदनी[4] विलसंतु[5]।
तीनखंड चक्केसरी राउ, अरियणदल भानइ[6] भरिवाउ[7] ॥ २१॥
तिहि[1] वलिभद्र सहोदरू[2] अवरू[3], तिहि[4] सम पवरीष दीसह अवरू।
कोडि छपन जादउ अनिवार[5], करहि राज ते सव परिवार ॥२२॥
सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल[1] सइन न सूझइ ठाउ।
अगर[2] सुगंध वास परिमलइ, कनक[3] दंड सिर चामरि ढलइ ॥२३॥
पंच सबदु तहि वाजइ घणे, वहुत भाति पावल[1] पेखणे।
भरिहि भाइ नाचणि[2] पउ[3] धरइ, ताल विनोद कला अणुसरइ[4] ॥२४॥

---

(२०) १. धम्म (ख) २. जाणइ (क) ३. गमणि (क), गयणि (ग) ४. अवरु (ग) अर (क) ५. अठार (ख) छत्तीसइ (ग) ६. वांभण (ख,ग) ७. वेस (क) ८. अपार (ग) ९. वसहि (क) वइस (ख) विस (ग) १०. सुद्र (क) ११. को जाणइ सार (ग) १२. कुलिय (ख) (१३) छत्रीसइ निवसइ ठाउ (क) छत्तीसउ सूझइठाउ (ख) छतीस इन सूझइ ठाउ (ग) १४. तिन पुरि निवसिइ जादम राउ

(२१) १. वाहण (ख) तह साहण (ग) २. गिणत न अन्त (क) गणिउ न अन्तु (ख) संयुत (ग) ३. राज (क ख ग) ४. मेइण (ख) ५. वहतु (ग) ६. भंजइ (ग) ७. भडिवाउ (क,ख,ग)

(२२) १. वलिभद्र वीरू सहाई तास (ग) २. सहोयरु (ख) ३. जेय (क) जेट्ठु (ख) ४. नीलंवर मूशल उक्किट्ठ (क) नीलंवरु हलु मूसल उक्किट्ठु (ख) रणि अजीत सो सत्र विनासु ग) ५. वर वीर (क) (यह पंक्ति ग प्रति में नहीं है।)

(२३) १. जिह सामंतन सूझइ ठाउ (क) जहि सामंत चक्कवइ राउ (ख) चउरंग दल नाहिन सूझइ ठाउ (ग) २. गंध वास परिमल मह महइ (क) सवहि भवर परिमलइ (ख) ३. कणइ (क) कनकति (ग)

(२४) १. पाय पेखणा (क) परवल पेखणे (ख) भरहि सिभाउ अधिकु पेखणा (ग) २. नाचहि (क) ३. वहुभांति (क) (तसिरा चरण ग प्रति में नहीं है) ४. गुणसंति (क) ऊसारहि (ग)

नारद ऋषि का आगमन

छत्री हाथ कमंडल धरहि[1], मूंडे मूड चूटी[2] फरहरइ[3]।
चढिउ विमाण मन विहसंतु, नानारिषि[4] तहां आइ पहुंत ॥२५॥

नमस्कार करि सारंग-पाणि, कणय[1] सिंघासण[2] दीनउ[2] आणि।
रहस[3] भाइ पूछइ नारायणु[4], कहा तुम्हारउ भो[5] आगमणु ॥२६॥

हमि आकासत करि[1] उपण, मंत[2] लोग वंदे जिणभूवण।
द्वारिका[3] दीठी उपनउ भाउ, तउ[4] तू भेटिउ जादउराउ ॥२७॥

तउ नारायण विनवइ सेव, भलउ भयउ जो आयउ देव।
नानारिषि तुम कीयउ पसाउ, आज पवित्तु भयो इह ठाउ ॥२८॥

निसुणि[1] वयण रिपि मन विहसाइ, कुसल वात पूछि नतभाइ।
दइ असीस सो ठाढउ भयउ, फुनि[2] नारद रणवासह गयउ ॥२९॥

जहि सिंगार सतभामा करइ, नयण रेख[1] कजल[2] संचरइ[3]।
तिलकु[4] लिलाट ठवइ ससिभाइ[5], पण नानारिषि गो[6] तिहि ठाइ ॥३०॥

---

(२५) १. करहइ (क) करहि (ग) २. चोटी (ख) ३. उचले अगुमरइ (क) ४. नारद (क) नारदु (ख)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

काल रूपि चलि देखी जहा, राउ नरायणु बइठा तिहा।

(दूसरा तथा तीसरा चरण नहीं है)

(२६) १. अर्ध (क) २. दीधउ (क) ३. कुसल (ग) ४. महमहणु (ग) ५. भयो (क) भउ (ख) भईया (ग)

(२७) १. भए उत पवणु (क) ते लियउ आगमणु (ख) ते कीया गमणु (ग) २. मातलोकि (क,ख,ग) ३. देखि द्वारिका (ग) ४. भेटियउ बलिभद्र यादव राउ (क) बलिभद्र भेटयउ नारउ राउ (ख) तउ तुम्ह उलटे जादमराउ (ग)

(२८) प्रथम दो चरण ग प्रति में नहीं है।

(२९) १. 'रहसिभाइ पूछइ हरिराउ, तउ नाना रिषि उपना भाउ' प्रथम दो चरण के स्थान पर ग प्रति में है। २. तब (ग)

(३०) १. रेह (ख ग) २. काजु (ख) ३. सचरइ (ख)

नारद हाथ कमंडल धरइ[1], काल रूप कलि देखत फिरइ।
सो सतभामा पाछइ[2] ठियउ[3], दर्पण माझ[4] विरूप[5] देखियउ[6] ॥३१॥
विपरित[1] रूप रिषि दिठउ जाम, मन विसमादी सुंदरि ताम।
देखि कूडीया[2] कीयउ कुतालु, साति[3] करत आयउ वेतालु ॥३२॥

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

वडी वार[1] रिषि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न वणिसण[2] कहिउ।
उपनो कोपु[3] न सक्यउ[4] सहारि, तउ नानारिषि चल्योउ पचारि॥३३॥
विणहुं[1] तूर जु नाचण चलइ[2], ताकहुं[3] तूर आणि जउ मिलइ।
इक स्याली अरू[4] वीछी खाइ, इकु नारदु अरू चलीउ रिसाइ ॥३४॥
नानारिषि रूण चल्यो रिसाइ, श्रींगी[1] पर्वत वइठो जाइ।
मनमा[2] वइठउ चितइ[3] सोइ, कइसइ मान भंग या[4] होइ ॥३५॥

नोट—(ग) प्रति में प्रथम दो चरण निम्न प्रकार हैं—

सो नानारिषि आया तहाँ, सत्यभामा का मन्दिर जहां

४. निलाउ (ग) ५. तिह ठाइ (ग) ६. पहुतो (क ग) गउ (ग)

(३१) १. करइ (ग) २. आगे (क) ३. ठयउ (क ख) गया (ग) ४. माहि (क ख ग) ५. रूप (क ग) ६. पेखिया (ग)

(३२) १. विप्रत (ख) विपरीत (क) विप्र (ग) २. कूडए (क) ३. संति (कखग)

(३३) १. वेर (क) २. न वेशण दियो (क) न वइसंण कहिउ (ख) न वइसण चया (ग) ३. रोष (ग) ४, सक्यो (क) सक्या (ग) सकिउ (ख)

(३४) १. विना (क) २. कहइ (क) ३. तिन्हइ तूर जव अइवि मिलइ (क) ताकहु तूरु आइ जहि मिलइ (ख) ४. वानर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

वाहु तूरि जो नाचण जुलिउ, तिसहि तुरुप आवतउ मिलउ (ग)

(३५) १. सींगी (क ख ग) २. महि (ख) ३. चितवइ (क ख ग) ४. एह (क) इहि (ख) मानभंग किउ इसका होइ (ग)

ताम चिंतइत[1] वइ[2] मुनिराइ

कोवानल[3] पजलइ[4] सचभामु अवमान खंडउ ।

कहि[5] काहुस्यउ हहडउ अहव सिला तत्तपि[6] चंपि छडउ ॥

तउ पछितउ[7] हरि करइ मन तह[8] एम्व विचारि ।

इह पह[9] रूप जु आगली सो परणाउ णारि ॥ ३६॥

चौपई

गाउ[1] गाउ तिहि फिरे असेसु, नयर सयलु फिरि दीठे देस ।

सउजु[2] दहोतरू खग वइ पुरी, स नारद[3] क्षण इक फिरि ॥३७॥

नारद का कुंडलपुरी में आगमन

फिरत देस मन चिंतइ सोइ, कुवरि[1] सरूप न देखइ कोइ ।

फुणि[2] नानारिषि आयो तहां, कुंडलपुरि विजाहर जहां ॥३८॥

भीमुराउ[1] आहि[2] तिस[3] तणउ, धरम नेम जाणइ ते[4] घणउ ।

अतिसरूप वहु लक्षण सारू, बेटा[5] बेटी रूप कुम्वारू ॥३९॥

दीठि[1] पसारि कहइ मुनि जोइ[2], इहि उणहारि कुम्वरि जो होइ ।

विहि पासाइ जइ घटइ[3] संजोगु तउनि जु होइ नरायणु जोगु ॥४०॥

---

(३६) १. चितवइ (ग) २. मनहि (ख) मनहि पर भाउ (ग ३. कोहानलु (ख) कोपानल (क) कोपि होइ (ग) ४. परजलइ (क) पज्जिलइ (ख) पज्जिलिउ (ग) ५. कहइ तथा पए हणउ (क) कहि कहइ हीया हरउ (ग) ६. तलि एह चंपउ (क) तालि चांप छंडउ (ख) ७. पछितायो (क) पछितउ (ख) पछितावा (ग) ८. महि (क ख ग) ९. तहि (ख) इस ते (ग) एह पइ (क)

(३७) १. गाम गाम (क ख ग) २. नव जगु होता मावांपुरि (ग) ३. तिहि नारद रिषि छिणि महि फिरी (क) ते तव नारदि छिणु इकु फिरि (ख ग)

(३८) १. कुमरी (क ख) २. फिरि (ख)

(३९) १. भीषमु (क ख ग) २. आसि (ग) ३. तिहि (ख) ४. घट (क) सो (ख) ५. बेटा रुपचंदु सुकुमारू (ख) बेटा दीसा रवि कुमारु (ग)

(४०) १. दृष्टि पसारि (क ग) २. जोइ (क ख ग) ३. घटइ (ख) घटइ (ग)

मन मा[1] इम नारद चितवइ, दइ असीस रणवासह गयउ ।
दीठी सुरसुंदरि तंखिणी, अरु[2] तिहि छोलि कुम्वरि रुकमिणी ॥४१॥

नारद से रुक्मणी का साक्षात्कार

अति सरूप वहु लक्खणवंत, चन्द्रवयणि[1] ससि उदउ करंत ।
हंसगमिणि मनु सोहइ[2] सोइ, तिहिं[3] समु तिरिय न पूजइ कोइ ॥४२॥
नारदु आवत जवु देखियउ[1], नमस्कार सुरसुंदरि कीयउ[2] ।
देखि रुक्मिणी[3] वोलइ[4] सोइ, पाटघरणि[5] नारायणि होइ ॥४३॥
भणइ सहोदरि[1] भीषमु तणी[2], सेसपाल[3] दीनी[4] रुक्मिणी ।
इहि वर नयरी वहुत[5] उछाहु, धरी[6] लग्न[7] ठयउ[8] विवाहु ॥४४॥
सुरश्रुंदरि वोलइ सतभाउ, नाहिन वोल[1] तिहारउ ठाउ ।
जो अरिराउ मानषइ[2] कालु, सवु[3]परिमह[4] आयो[5] सुसपालु ॥४५॥

---

(४१) १. महि (क ख ग) २. अनतइ छोडि कुमरी रुकमिणि (क) अरु तिहि छोलि कुमरि रुक्मिणि (ख) आयत वोलि तव रुक्मिणि (ग)

(४२) १. चन्द्रवदनि ससि सोह करंति (क) चन्द्रवदना नयणझलकंति २. मोहइ (क ख ग) ३. तिहि सरि तिर्यग न पूजइ कोइ (ख)

(४३) १. पेखिया (ग) २. कियो (क) किया (ग) ३. कामिणी (ग) ४. बोलो (ग) ५. पटराणी (क) पटधरणी (ग)

(४४) १. सहोयरि (ख) सोदरि (ग) २. भणी (क) ३. सिसुपाल (क) सिसपाल (ख) सीसपालि (ग) यह मांगी सिसपालह धणी (ख) प्रति में यह पाठ है। ४. दीधी (क) ५. तणउ न दीउ वाह (क) ६. वरी (क ख) धन्य (ग) ७. लगनु (क ख ग) ८. थापउ (क) हइ ठयउ (ख) हो ठयो (ग)

(४५) १. नानारिप तव वोल पसाउ (क) नाही इन वोलह का ठाउ (ख) नही इव वोलण का ठाउ (ग) २. मतावै (ख) जे सिरि राउ मनहि खइ कालु (ग) ३. तव (ख) शिव (ग) ४. परिगह (ख) पुरगिह (ग) ५. आवै (ख) आया (ग)

नोट—तीसरा व चौथा चरण (क) प्रति में नहीं है !

निसुणि वयण[1] नारदरिषि[2] चवइ[3]; तिनि खंड मह जो चकवइ ।
छपन कोडि जादउं[4] मुहवंतु[5], अइसइ[6] छोड़ि विवाहहि अंनु[7] ॥४६॥

पूर्व रचित[1] न मेटइ[2] कोइ, जिहि[3] कीहु रची[4] विवाहइ सोइ ।
घालहु छोड़ि[5] वात आपणी[6], नारायण परणइ[7] रूकिमिणी ॥४७॥

तउ[1] सुरसुंदरि[2] मनमां[3] रली, मुणिवर वात कहि सो मिली[4] ।
नारद निसुणि कहउ[5] सतिभाउ, कहहु जुगति किम होइ विवाहु ॥४८॥

रिषि जंपइ तुम अइसउ[1] करहु, पूजा करण[2] देहुरइ चलहु ।
नंदणावण की करहु सहेट, तिहि ठा[3] आणि कराउ भेट ॥४९॥

तव[1] जंपइ[2] रूपिणि[3] सुरतारि[4], को पहिचाणइ[5] कन्ह मुरारि ।
तउ नारदुरिषि[6] कहइ सुजाणु, तउ तुहि[7] कहइ[8] ताहि[9] सहनाणु[10] ॥५०॥

---

(४६) १. वचन (ख) २. रिषि नारदु (ख) नाना रिद्धि (ग) ३. कहइ (ख) ४. जादव (क) जादौं (ख) ५. महमंत (क) मुहकंनु (ख) ६. तेसम (क) अइसउ ७. अंत (क)

नोट--(ग) प्रति में ३-४ चरण में निम्न पाठ है--

छप्पन कोडि माहि जिसकी आण, अइसा पुरुषु न अउर सयाण ।

२. मूल प्रति में "करउ कवित जउ वइ" दूसरे और तीसरे चरण के ये शब्द और हैं।

(४७) १. लिखतु (क ग) २. कि भूंटउ होइ (ख) ३. जेह कउं (क) जिह कहु (ख) जिस कहु (ग) ४. घडी (क) ५. वाल्लभ (क) छांड़उ (ग) ६. सहल आपणी (ग) ७. व्याहइ (क)

(४८) १. तव (ग) २. स्वंदरि (क) ३. माहि (क ग) मह (ख) ४. सा भिली (क) तउ भजी (ग) ५. नानारिषि तुम्हि सांचौ कहाउ (ग)

(४९) १. एसी (क) ऐसा (ग) २. पूजा कारण (ग) ३. ठाउ (क) ठाइ (ख) ठ्ठाइ (ग)

(५०) १. तउ (क) तौ (ख) इम (ग) २. जंपैइ (ख) बोलइसा (ग) ३. रुकमिणि (क ख ग) ४. नारि (ख) सुनारि (ग) ५. पिछाणउ (क) पिछाणइ (ग)

नोट--२ रा चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

६. नानारिषि (ग) ७. हो तुम्ह (क) हौ तुहि (ख) तउस्यउ (ग) ८. कहउ (क ग) ९. तास (ग) १० सुहनाणि (क) सहनाणि (ख) सहनाण (ग)

संख चक्र गजापहरण[1] जासु, अरु बलिभद्र सहोदर तासु ।
सात ताल जो बाणनि[2] हणइ, सो नारायण नारद भणइ ॥५१॥
आपी[1] ताहि वज्र मुंदड़ी, सोहइ रतन पदारथ जड़ी ।
कोमलि[2] हाथ करइ चकचूरू[3], सो नारायनु गुण परिपूनु[4] ॥५२॥

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

खडी[1] बात करि नारदु गयउ, पटु[2] लिखाइ रुपीणि[3] को लियउ ।
चहि[4] विमाण मुनि[5] आयउ[6] तहा, सभा नारायणु बयठउ[7] तहां ॥५३॥
पुणु[1] पुडु[2] छोड़ि[3] दिखालिउ[4] जाम, मन अकुलाणउ[5] नरवइ[6] ताम ।
काम बाण तसु हयउ[7] सरीर, भउ[8] विहलंघण[9] जादउ वीरु ॥५४॥
कीयह[1] आछर[2] की वणदेइ[3], कै मोहणी तिलोत्तम[4] कोइ[5] ।
की विजाहरि[6] रूप सुतारि[7], काके[8] रूप लिखो यह नारि ॥५५॥

---

(५१) १. गदापहिरण (क) गज पहिरणु (ख) गज पहरण (ग) २. जो बाणइ (म) जो बाणहि (ख) इकबाणिहि (ग)

(५२) १. आपी तासु (क) आफियहि (ख) आपीताह (ग) २. सोमलि (ख) ३. चकचून (ख ग) ४. उनपूर (क) संपूनु (ख) परंश्नु (ग)

(५३) १. खरी (क ख ग) २. पट (क) पडहु (ख) पाटु (ग) ३. रुक्मिणी (क) तासु (ग) ४. चडि (क ख ग) ५. रिषि (क) सो (ग) ६. आया (ख) पहुंता (ग) ७. बेठो (क) बैठु (ख) बइठा (ग)

(५४) १. पुणि (क) फणि (ग) २. पट (क) पडु (ख) पटु (ग) ३. खोलि (ख ग) ४. दिखालिय (क) दिखालउ (ख) दिखाया (ग) ५. अकुलानो (क) अकुलाणौ (ख) अकुलाणि (ग) ६. नरवै (ख) सुन्दर (ग) ७. हुआ (ग) ८. भयउ (क) भय (ग) ९. विहलंघल (क) विहलंघलु (ख) विहलंघलि (ग)

(५५) १. कइ (क) कोइह (ख) केइ (ग) २. अपछरा (क ग) आछव (ख) ३. वणदेवि (क ख) वणदेव (ग) ४. तिलातिम (ख) कि लोचन (ग) ५. एह (क) केव (ख) एव (ग) ६. विज्जाहरि (क) विज्जहरि (ख) विद्याधर (ग) ७. संसारि (ग) ८. काकइ (क) काकै (ख) कवण (ग) कचणतिया किणही उणहारि ग प्रति का अंतिम चरण

नानारिषि वोलइ सतिभाउ, आथि[१] नयरू कुंडलपुर ठाउ ।
भीषमुराउ दीठ[२] तंषीणी[३], रूपिणी कुवरि आहि तसु तणी[४] ॥५६॥
सोमइ[१] तो[२] कहु मागी देव, परणउ जाइ म[३] लावहु खेड ।
मयण कामदेहुरे सहेट, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥५७॥

श्रीकृष्ण और हलधर का कुंडलपुर के लिये प्रस्थान

तउ तूठाउ[१] महमहणुरिंदु[२], मन में[३] विहसि कीयउ[४] आणन्दु[५] ।
रथ साजिउ[६] सारथि वयसारि[७], गोहिण हलहर लियो हकारि[८] ॥५८॥
तउ[१] सारथि षण रथ साजियउ, पवण वेग कुंडलपुर गयउ ।
वण उद्यान देहुरउ जहां, हलहरू[२] कान्हु[३] पहुते तहां ॥५९॥
ठयो[१] मंतु नहु लाइ वार, पठए[२] दूत जणाइ सार ।
कहि[३] जाइ तिहि सारउ[४] वयणु, नंदणावणु आयो महमहणु ॥६०॥
निसुणि[१] वयण रूपिणि[२] विहसेइ, मोती माणिक थालु भरेइ ।
गोहिण[३] मिली वहुत सहिलडी, पूजा करण देहुरे चली[४] ॥६१॥

---

(५६) १. अतिथ नयर (क) आथ नयरु (ख) अथि नयरु (ग) २. दिठ्ठउ (क) दिठ्ठ (ख) अथि (ग) ३. तिहतिणी (क) ४. तितै (क)

नो —तिसुकी कुवरि नाम रूविमणी (ग) प्रति का अंतिम चरण ।

(५७) १. स्वामी (ग) २. तुम्ह (ग) ३. न लावहु (क) म लावहि (ख) करहु सत (ग) मइं देहुरै इस करो सहेट, तहां करावउ तुम्ह कहु भेट ॥ (ग) प्रति के अंतिम दो चरण !

(५८) १. तूठउ (क ख) ऊठ्यौ २. महुमहणनरिंद .(क) मह महणुणरिंदु (ख ग) ३. महि (क ख ग) ४. कीयो (क) कीया (ग) ५. आनन्द (क ग) आनंदु (ख) ६. सजिउ (क) सजोय (ग) ७. वैसारि (क ख) वइसालि (ग) ८. सुर तेतीस लिये संभालि (ग)

(५९) १. तव सारथि सरत्थ पेलिया (ग) २. वलभद्र (ग) ३. कन्ह (कखग)

(६०) १. उठ्ठिउ मित्र (क) किया मंत्र (ग) २. पूछनि दूति क) ३. करी जुगति जउ साच वण ४. मारिउ (क)

(६१) १. सुणी वचन रूपणि विगसाइ २. नारदु (क) ३. मिलिय गोहणि (क) सखी सहेली वहुती लेइ (ग) ४. गयी (ग)

श्रीकृष्ण और रूक्मिणी का प्रथम मिलन

भेटिउ जाइ तहा हरिराउ, तउ चंपइ रूपिणि[1] सतिभाउ ।
रादउराइ वयण मुहु[2] गुणहु[3], सात ताल तुम[4] बाणनि हणउ ॥६२॥
वज्र[1] मुंदरी[2] आफी[3] आणि, तउ कर[4] मसकी सारगपणि ।
फुटि[5] चून भइ मुंदड़ी, जनकु[6] कणिक गरहट तल पड़ी ॥६३॥
तउ कोवंडु नरायणु लेइ, हलउ[1] आइ अगूठा[2] देइ ।
सल[3] केसे सति सूवे भए, सातउ ताल वेधि[4] सर गये ॥६४॥
नर[1] रूपिणि[2] मन भयो संनेहु[3], जाणिउ निज नारायणु एहु[4] ।
रथ चढाइ तिन्हि[5] करी पुकारी, भीषमराइ जणाइ[6] सारी ॥६५॥

वनपाल द्वारा रूक्मिणी हरण की सूचना

पाछइ गरव करइ[1] जिन कोइ, चोरी गए[2] रुक्मिणी लेइ ।
तव वणवाल पुकारिउ[3] आइ[4] जहि वलु आइ[5] सु लेहु छिड़ाइ ॥६६॥

---

(६२) १. रूकमिणी (क) २. मुहि (क) हम (ग) ३. सुणहु (क ख ग) ४. तुम्हे वाणउ (क) तुम्हि वाणहि (ख)

(६३) १. जव (क) २. मूंदड़ी (क ख ग) ३. ति आपी आणि (क) आएफी आणी (ग) ४. तंकरि (क) तउ करि (ख) करी सनकरी (ग) ५. फूटी (क ख ग) ६. जाइ रूक्मिणी देखइ मणि पड़ी (क) जाण्यो साकण हट ते पड़ी (ग)

(६४) १. हलहर (क ख) हलधरु (ग) २. अगुठुउ (क) अंगूठा (ग) ३. सल किउसे सत पूया भयउ (क) साल केस सति सूवा भयउ (ख) सल केथे सभि उभे भये (ग) ४. वीधी (क) विंधे (ख)

(६५) १. तव (क ग) तउ (ख) २. रूकिमिणी (क) ३. सनेहु (क ख) तव को मन गया संदेहु (ग) —पूरा चरण ४. देउ (क) ५. तिणि (क ख ग) ६. जणावहु (ग)

(६६) १. करो (क) २. ले गयो (क) पीछइ गरवु म करिज्यो कोइ, चोरी गया ते रूक्मिणि लेइ (ग) ३. पुकारिउ (क ख ग) ४. जाइ (ख) ५. आहि (ख) होय इसु लेउ छुडाइ (ग)

वस्तु बंध—लइय रूपिणि रथहं चडाइ[1] ।

पंचायणु तहि[2] पूरियो, सारु[3] सुर[4] लोइउ संकिउ ।

महिमंडलु[5] तहि थरहरिउ[6], टलिउ[7] मेरु गिरिसेसु[8] कंपिउ ॥

महले[9] जाइ पुकारियउ, पुहमिराय अवधारि ।

उभी रूपिणि देवलहि[10], हडिलइ[11] गयउ मुरारि ॥६७॥

चौपई

तउ मन कोपिउ भीषमु राउ, ठा ठा[1] भए निसाणा[2] घाउ ।

तुरीय पलाणहु[3] गैयर[4] गुडहु[5], काल रूप हुइ राम्वत[6] चढहु ॥६८॥

सेसपाल राजा सुधि भइ, रुपिणि कुवंरि चोरी हरीलइ ।

तवइ कोपि बोलियउ नरेस, तुरिय पलाणहु वेगि असेस ॥६९॥

रहिवर साजहु गयवर गुरहु, सजहु सुहड आजु रण व भिडहु ।

रावत कर साजहु करवाल, धाणुक करहु धणुह[1] टंकारु ॥७०॥

सेसपाल अरु भीषमु राउ, दुइ[1] दल सूझन न सुझइ टाउ ।

घोडउ खुर लइ उछली षेह[2], जनु[3] गाजहि[4] भादौ के मेह ॥७१॥

---

(६७) १. वेसाइ (क) २. जव (क) ग प्रति में नहीं है । ३. सवद (क सद्द (ख) सवदु (ग) ४. सव लोक आइय (क) सुरलोक कंप्यो (ग) ५. दल वलउ (क) ६. हर्यो (ग) ७. चल्यो (ग) ८. तव सेस (क) गिरिसेस (ग) ९. महिला जाइ पुकारि करि (क) १०. देहुरइ (क) ११. हरिलइ (ग)

(६८) १. थाढउ (क) ठाडा (ख) वेगे (ग) २. निसाहण (क ख ग) ३. पल्याण (क) गयवर (क ख) ४. गुड्या (क) ५. सान्हे चड्या (क) सवहि चढहु (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ हैं—रूक्मिणी कुमरी चोरी हडिलेइ, कहहु देव यह कइसी भई

(६९) ६९ की चौपाई ग प्रति में नहीं है ।

१. धणह रयण च करहिं टंकार (क)

(७१) १. वहुदल सेनन (क) दुइदल सेनन (ख) दुइदल २. मिले खेह (क ख ग) ३. जिम (क) जाणो (ग) ४. गरजइ भादव घण मेहु (क) गज्जइ भादों के मेहु (ख) भादव गज्जइ मेह (ग)

चिन्ह[1] चमर[2] दीसइ चमरंत,[3] जाणौ[4] दावानल कमलेहि[5] निमजंत।
चतुरंग[6] दलु भयो संजुत, पवण वेग रण[7] आइ पहुँत ॥७२॥

आवत दलु दीठउ अपवालु,[1] उड़ी खेह लोपी[2] ससिभाणु।
अह[3] डरि रुपिणी लागी कहण, किम रण जीतहुगे महमहण[4] ॥७३॥

रहि रुपीणी[1] वामा[2] काहरि होहि, पवरिशु आज दिखाउ[3] तोहि।
सेसपाल[6] भानउ[4] भरिवाउ, वाधि[5] न आणौ भीषमराउ ॥७४॥

वात कहत दलु आइ पहुत, सेसपाल बोलइ प्रजलंतु[1]।
रावत निमजि[2] लेहु करवालु, पडिउ[3] भेट जिन[4] जाइ गुवालु ॥७५॥

---

(७२) १. विहदिस (क) चीर (ग) २. चंवर (ग) ३. फरकंति (क) फरहरंत (ख) प्रहरंतु (ग) ४. ध्वजा पवण को जाणें अंभु (ग) ५. कमलिनि जुत (क) ६. जरद सनाहु भाय साजंत (क) चमर छत्र दल मिलिया संजूत्त (ग) ७. दल (क)

(७३) १. असमान (क) अयवाणु (ख) परवाणु (ग) २. सुढंकियो (क) लोप्या (ग) लोपिउ (ख) ३. अति (क) ४. महुमहण (क) महमहिण (ख)

(७४) १. धीरी रुकमिणी मुकंद लहोह (ग) २. म कायिर (क) मत कातिर (ख) ३. दिखालउ (क ख) दिखावउ (ग) ४. भडि (क ख) भड (ग) ५. बंधी करि आणउ (क) बांधि जु आणेउ (ख) आणउ बंधिव (ग)

(७५) १. वलिवंतु (क) मयमंतु (ख) २. निजु (क) निवजि (ख) माजि (ग) ३. न्हामि जिनि मरइ गुवाल (क) अब भागा कित जाहि गोवालु (ग) ४. किम (ख)

मूल प्रति एवं ग प्रति में निम्न छन्द नहीं है—
जब ससपाल जनमु तहि भयउ, वहु तुव दंड गर्भु संभयउ।
तब तिहि माता बोले वयण, सउ अवगुण मइ बोले सहण।
तरा कारणि हउ समृहु विरत्तु, फुणि मुहि रुपिणि देखहि
अन्तु ॥ ७७ ॥ (ख)

वस्तु बंध—सेसपाल विठु[१] हरिराउ ।
जउ[२] वैसंदर घ्रत[३] ढल्यउ, धनुष बाण कर ले अफालिउ ।
अव समरंगिणि जाणिउ, पुव[४] वयण नियमण[५] सभालिउ ॥
चोरी रूपीणि हरिलइ[६], इह तइ[७] कीयउ उपाउ[८] ।
कहा जाइ दिठि परचउ[९], अव[१०] भानउ भरिवाउ ॥७६॥

चौपई

दुष्ट वयण सठ[१] पूरे जाम[२], कोपारूढ विष्णु भो[३] ताम ।
सारंगमणि[४] धनुष[५] लौ[६] हाथि, सेसपाल पठउ[७] जमपंथि ॥७७॥

श्री कृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

हाकि[१] पचारि[२] भिडइ[३] दुइ वीर, वरसइ वाण सघण[४] जाणौ[५] नीरू ।
तव वलिभद्र हलावभु[६] लेइ, रह चूरइ[७] मइगल पहरेइ ॥७८॥

---

(७६) १. भिडइ (क) हमउ (ख) २. जणु (क) जनु (ख) ३. घीउ (ख)—पूरा चरण—कोपि होइ प्रज्जलिउ (ग)

निम्न पाठ—(ख) प्रति तथा (ग) प्रति में और है—

धणुह बाण करह लइ आफिउ, अवसमरंगणि जाणि जाणियउ (ख)

धनुष वाणि हथियार लिए, रे गवार संभार संभलि (ग)

४. पूरव वैरते (क) पुव्व वइरू (ख) किउ उपाइ क्यों रहहि जीव (ग) ५. नियमणह (ख) ६. हडिलेइ चालिउ (क) हड चलउ (ख) ले चल्यौ (ग) ७. एतइ (क) यहु ते (ग) ८. माहउ किम जाइस (क) कहा जाहि तू (ग) ९. पडियउ (क) पडिउ (ख ग) १०. हिव (क) इव (ग)

(७७) १. सव (ख) सुणु (ग) २. नामु (ग) ३. भयो (क)भउ (ख) कोपवंतु भय कन्हहुताम (ग) ४. पाणि (क ख ग) ५. लडगु (ग) ६. ले (क ग) लियौ (ख) ७. पठयो (क) पठवउ (ख) पडवउ (ग)

(७८) १. एक वार (क) २. पचारि (खग) ३. उठहि (क) ४. घणा (ग) ५. जिम (क ग) जिउ (ख) ६. हलायुध (क) हलाउघु (ख) हलवघु (ग) ७. रथमइ गणाते चूरइ लेइ (क) रह चूरइ मयगल पहरेइ (ख)

(७८) का अन्तिम चरण ग प्रति में नहीं है ।

सेसपाल कर धनहर[1] लेइ, वार[2] पचास वाण[3] तो देइ।
नाराइणु सउ करइ[4] संघारणु[5], वह हूँइ[6] सइ मेल्हइ सपराणु[7] ॥७६॥
वह[1] सइ च्यारि वाण पहरेइ, वह सैइ आठ संधाण करेइ।
वह सोलह धरि मेलइ चाउ, वह[2] वत्तीस न सूभइ ठाउ ॥८०॥
दोउ[1] वीर खरे सपराण[2], दूणे दूणे करइ संधाण।
बाढी[3] राडी न उहरण[4] जाइ, वाणनि[5] पुहिमि[6] रहि घरछाइ[7] ॥८१॥

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

तव नारायणु करइ[1] उपाय, नाहि धनुष वाण[2] को ठाउ।
फेरहु[3] चक्र हाथि करि[4] लियो, छिनि[5] सीसु ससिपालह गयो ॥८२॥
सेसपाल भानिउ भरिवाउ, विलख वदन भौ[1] भीषमराउ।
भीष्म[2] मारि रण सहन न जाइ, चवरंगु[3] दलु[4] चल्यो पलाइ ॥८३॥

---

(७६) १. धणहणु (क) धणहर (ख) प्रथम चरण ग प्रति में नहीं है। २. *वाण (क ख)* ३. *संघाणु करेहु (ग)* ४. करउ (क) देइ (ग) ५. संधाणु (क) संधारू (ख) संधाणु (ग) ६. वहु (क) उहु (ख ग) ७. पराण (क) शिशुपाल (ख) परवाणु (ग)

(८०) १. उसा चारि (क) उहु सय (ख) २. ए छत्तीस न चूकइ ठाउं (क) उहु वत्तीस न सूभइ नाउ (ख) रथ चूरे मइगल पुहरेइ, सीसपाल का धुणहरू लेइ (ग)

(८१) १. दोइ (क) दोहिमि (ख) २. सपरण (ख) ३. छई सेननउ उठिउ जाहि (क) ४. हटण (ख) ५. वाणउ (क) ६. पहुवि (क) ७. सव (क)

ग प्रति—वधी सुराउ न हटनउ जाइ. वाणिहि पुहवी रहि घर छाइ

(८२) १. करे उपाव (क) करइ उपाउ (ख) २. वाणनी (क) ३. फिरि चापु (क) फेरि चकु (ख) फेरि चक (ग) ४. हाथ हिलउ (ग) ५. छेद (ग)

(८३) १. थयो (क) २. विषम (क ग) ३. चउरंगु (ख) चावरंग (क) चतुरंग (क) ४. वलु (ख) ख प्रति में तीसरा चरण नहीं है।

तव रूपिणि वोलइ सतभाउ, राखि[1] रूपचंदु भीष्मराउ[2]।
करइ साथ[3] मन छाडइ वयरू, वहुडि आपि कुंडलपुर नयरू ॥८४॥
तउ नारायणु करइ पसाउ, वाधिउ छोडउ भीषमुराउ।
रूपचन्द कहु[1] आफहु भरइ, पुणि[2] णिय णयर वहुडि हुरि चलइ॥८५॥

श्री कृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

वाहुडि हलहरु चलै मुरारि, दीठउ मंडपु वणह मंभारि।
विरख[1] असोग तणा[2] छइ[3] जिहा, तिनी[4] जणे सपते[5] तहा ॥८६॥
तव तिनके मन भयो उछाहु, आजु लग्न हइ[1] करइ विवाहु।
महुवर[2] भुणि जणु मंगलचार, सूवा[3] पढइ वेद भुण कार ॥८७॥
वसासइ[1] तिनि मंडपु कीयो[2], दे[3] भावरि हथलेवो कियो।
पाणि–ग्रहण करिपरणी नारि, फुणि घर चाले कन्ह मुरारि ॥८८॥

---

(८४) १. थापउ (क) बंधहु (ख) २. कराउ (क) अरु राउ (ख ग) ३. संति (क ख) सांत (ग)

ग— करहु सांत तुम कदुल जाउ, चालहु कुंडलपुर हरिराउ (ग)

(८५) १. को आगे करइ (क) कहु आंकउ भरइ (ख) कहु अंक भरिउ (ग) २. वाहुडि नृप नयर कहु चलइ (क) फिरि णिय नयरि वहुडि हर चलइ (ख) पुणि तिहि नयरि वहुडि चालिवउ (ग)

(८६) १. विरखु (ख) वृष्य (ग) २. तणउ (ख) तणा (ग) ३ है (ख) हइ (क) ४. तीन्यौं (ग) ५. पहुते तहां (ग) सुपहुते तहां (ख)

८६ वां छन्द क प्रति.में नहीं है

(८७) १. ठया (ग) है करहु (ख) २. महुवर भुणि जणु मंगलचारु (ख) मधुर धुनिहि होइ मंगलचारु (ग) ३. मूल पाठ महु में चरित्र तु जाणौं मंगलचारु सुवर (ख) सोइ (ग)

(८८) १. वणह माहि (क) वणसइ महि (ख) हरइ वंसका मंडप घया (ग) २. थयउ (क) ठयउ (ख) ३. देवि समरि (क)

श्रीकृष्ण का रूक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

जव वाइस[1] नारायणु गयो[2], छपन कोड़ी मिलि उछव[3] कीयउ ।

गूडी उछली घर घर वार, ऊंभे[4] तोरण वंदनमाल[5] ॥८६॥

इक रूपिणि अरु कान्ह मुरारि, विहसत[1] पैठा नयर मंझारि ।

ठाठा लोग रहाए घणे, उइ[2] पइ पठे मंदिर आपणे ॥९०॥

गये[1] दिवस वहु भोग करंत, सतभामा की छोड़ी चित ।

नित नित सुख[2] विलखी खरी, सवतिसाल[3] वहु परिहस[4] भरी ॥९१॥

सत्यभामा के दूत का निवेदन

महलउ[1] राणी पठयो तहा[2], वलिभद्र कुवर[3] वइठे जहा ।

सीस नाइ तिहि विनइ सेव, सतीभामा हौ[4] पठयो[5] देव ॥९२॥

हाथ जोंड़ि महले वीनयो, सतिभामा हइ[1] अइसउ कहउ[2] ।

कवणु[3] दोसु मो[4] कहहु विचारि, वात[5] न पूछइ कन्ह मुरारि ॥९३॥

निसुणि[1] वयणु हलहलु[2] गऊ[3] तहा, राउ नरायणु वइठउ जहा ।

विहसि वात तिहि[4] विनइ[5] घणी, करइ[6] सार सतिभामा तणी ॥९४॥

---

(८६) द्वारावइ (क) जव सौं नयरी ख) २. जाय (ग) ३. महुछउ (ख) आनन्द कराइ (ग) ४. वांधे (ख) रोपी (ग) ५. वंदरवाल (क ख ग)

(९०) १. विगसत (ग) २. सवि (क) अइ (ख) दुइ (ग)

(९१) १. एक (क) २. नारि (क) रोवइ (ख) झुरवइ (ग) ३. सोउ किशाल (क) ४. दुखह भरी (क ग)

(९२) महिला (ग) २. जहां (क) ३. कुमर (क) कुमरू (ख) कन्ह (ग) ४. हमि (क) हउ (ख ग) ५. पठए (क) पठयउ (ख) पठई तू (ग)

(९३) १. हिव (क) तुम्ह (ग) २. अइसा चवइ (ग) ३. कवणु (क ख ग) ४. मोहि (क) मुहि (ख) हम (ग) ५. जु वात (ग)

(९४) सुणी वात (ग) हलहर (क ख ग) ३. गयो (क) गयौ (ग) ४. तयइ (ग) तिह (क) ५. वीनवी (क) विनवै (ग) ६. करउ (ग)

तउ नारायणु करइ कुतालु, जूठउ रूपिणि तणउ उगालु ।
गांठि[1] वाधि[2] संपतउ[3] तहा, सतिभामा कइ[4] मन्दिर जहा ॥६५॥

सतिभामा हरि[1] दीठउ नयणा[2], रूदनु करइ अरू[3] वोलइ वयणा ।
कहइ वात वहु[4] परिहस भरी, कवण दोस[5] स्वामी परहरी ॥६६॥

तउ हसि वोलइ कन्ह मुरारि, मधुर वयण समझाइ[1] नारि ।
कपट रूप सो निद्रा करइ, गाठी झुलाइ खाट तर[2] धरइ ॥६७॥

गाठी[1] झूलति जव दीठी जाम, उठि सतभामा छोरी[2] ताम ।
परीमलु महकइ[3] खरी सुगंध, देखी[4] सुगंध लगाइ[5] अंग ॥६८॥

अंगु मलति जव दीठी राइ[1], जागि[2] कान्ह वोलइ विसधाइ[3] ।
तेरउ[4] जाण[5] गयउ सवु आलु, इह[6] तउ रूपिणि तणउ उगालु ॥६९॥

---

(६५) १. गंठि (क ख) २. वंध (ग) ३. संपतो (क) संपता(ग) ४. कउ (क ख) का (ग)

(६६) १. दीठा (ग) २. जाम (क) ३. वोलो इक माम (क) ४. रोतह (क) ५. दोसि (क ख) दोसे (ग)

(६७) १. समझावइ (क ख ग) २. तलि (क ख ग)

(६८) गंठडी झुलकत देखी (ग)

नोट—दूसरा चरण क प्रति में नहीं है

२. छोड़ी (ख) दीठी (ग) ३. वहइ धरिय (ख) दीठा गंध सुचंग (ग) ४. दोडि (क) ५. लावइ (ख ग)

(६९) १. नारि (ग) २. जागु कन्ह वोलीया विचारि (क) ३. विहसाइ (ख) ४. तेरा (ग) ५. सिगारू गयउ सवु अहल (ख) अवगुणु गया सभु आलु (ग) ६. ऐहु (क) इहु है (ख)

निम्न छन्द मूल प्रति तथा क और ख प्रति में नहीं है—

विलषंते क्यों घृत टलि जाइ, अणभावता न रपा खाइ ।
कहा नाराइणु झंखहि आलु, इहु मुझु वहणि तणा उगालु ॥

सत्यभामा का रूक्मणि से मिलने का प्रस्ताव

सतिभामा वोलइ सतिभाउ, मो कहु रूपिणी[1] आणि भिटाउ।
तव हसि वोलइ कान्ह मुरारि, भेट कराउ[2] वणह मझारि ॥१००॥
उठि नारायण गयो अवास, वैठउ[1] जाइ रूकिमिणी पास।
वहु फुलवाडि[2] वसइ[3] वण माहि, चलहु आजि जह जेवण[4] जाहि ॥१०१॥
रूपिणि सरिस नारायण भये[1], चढे सुखासण वाडि गये।
विरख[2] असोग[3] वावरी[4] जहा, लइ रूकिमिणि उतारी तहा ॥१०२॥
सेत[1] वस्त्र उज्जल आभरण, करकंकण[2] सोहइ आभरण।
देवी रूप अला[3] वइसारि, जपइ[4] जाप तहा[5] गयउ मुरारि ॥१०३॥

सत्यभामा और रूक्मिणी का मिलन

पुणि[1] सतिभामा पठइ[2] जाइ, हउ[3] रूपिणि कहुं लेउ वुलाइ[4]।
जाइ[5] वावरी ठाढी होइ, जिम रूकिमिणी भिटाउ[6] तोहि ॥१०४॥

---

(१००) मिलाइ (ग) करावहुं (ग)

(१०१) १. विहुठउ (क) वइठा (ग) २. फल आदि (क) फुलवाड (ख) फुलवावि (ग) ३. अछइ (क) अछै (ख) अछहि (ग) ४. तुम भेटण जाहु (क) तहं भेटण जांहि (ख) तिन्ह देखण जांहि (ग)

(१०२) १. भयउ (क) गये (ख) भया (ग) २. वृक्ष अशोक (ग) ४. वावडी (क ख ग)

(१०३) १. श्वेत (ग) २. सोहइ अनियर काजल नयण (क) कर कंकण सोह तडिवयण (ख) कर कंकण पहरे मन हरण (ग) ३. अवला वइसारि (क) आलै वैसारि (ख) ४. जपे (क) जपहि (ख) जपियऊ (ग) ५. कहि (क ख ग)

(१०४) १. फिरिण (क) फुणि (ख) फुनि (ग) २. पहिती (क) पठई (ख) पठएं (ग) ३. कहे वात नरवइ सतिभाउ (क) ४. अडाइ (ग) ५. क प्रति में निम्न पाठ है—

चालि गेहिणी तू वलि होइ, वन रूक्मिणि भेटाउ तोहि।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है।

६. भेटाउ (क) भिटायउ (ख) मिलावहु (ग)

गोहिण मिलो[1] वहुत सहिलड़ी, वाडी[2] गइ जहा वावड़ी ।
नयण निरखि जद[3] देखइ सोइ, वण देवी[4] वह[5] वैठी कोइ ॥१०५॥
पय[1] ससि चेली जल मह हाइ, पुणि देवी के लागइ[2] पाइ[3] ।
सामिणि मुहिकहु[4] देहु[5] पसाउ, जिम[6] मुहि मानइ जादउराउ ॥१०६॥
अव[1] वह[2] देवी मनावहि सोइ, जिमि[3] रुकिमिणि दुहागिणी होइ ।
विविह पयार पयासइ सोउ[4], आगइ[5] आइ हसइ[6] हरिदेउ ॥१०७॥
सतभामा तुमि[1] लागी वाइ. वार वार कत[2] लागइ पाइ[3] ।
काहो[4] भगति पयासहु घणी. यह आलइ[5] वयठी रुकिमिणी॥१०८॥
सतिभामा वोलइ तिहि ठाइ, कहा भयो[1] जइ लाइ पाइ ।
कूडी[2] वूधी करइ[3] तू घणी, यह मो[4] वहिणी होइ रुकिमिणी॥१०९॥

---

(१०५) १. वहुतु सहेली मिली (ग) २. गयी जिहां वाडी वावडी (क) वाडी मांहि देखहि एकली (ग) ३. जो नयण दिखाइ (क) जिव देखइ साइ (ख) जे (ग) ४. देव्या (ग) ५. कइ लागइ पाइ (क ख) यह (क)

(१०६) १. परहसि वोलि वणमहि जाइ (ख) २. लागी (ग) लागं (ख) ३. पाय (ख ग) ४. मोकहु (क ख) हमको (ग) ५. करहु (क) ६. जउ हउ माणौं जादमराय (ग)

(१०७) १. इम (क ख) जउ (ग) २ ऊहु (ख) ३. तउ (ग) ४. सेव (क ख) ५. आगलि (क) ६. हसैं ।

तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१०८) कितू लागइ पाइ (क) तुम्हि लागी पाइ (ख) तुम्ह कहउ सभाउ (ग) २. कया (ग) ३. भाइ (ग) ४. काहउ भगति करहि वहु घणी (क) काहउ भगति पयासहु घणी (ख) कहा जाति वोलहि आपणी (ग) ५. अलाइ (ग) यह तो वहिणि आहि रुकमिणी (क)

(१०९) १. हुआ (ग) २. कूड वुद्धि (क ख) कूडी वुद्धि (ख) इतनी वुद्धि (ग) ३. वूझी तुम्ह तणी (ग) ४. मोहि (क) मुह (ख) तउ (ग)

राति दिवस तू करिहि कुतालु[1]. वंस[2] सहाउ न जाइ गुवालु ।
फुणि रूपिणी सहु[3] करह सभाइ. चालइ[4] वहिण[5] अवसइ[6] जाइ ॥११०॥

चढि[1] याण ते गइ[2] अवास[3], सव सुख भूंजहि करहिं विलास ।
राजु[4] करत दिन कछुक[5] गये, राणी दुहु[6] गर्भ[7] संभये[8] ॥१११॥

तव सतिभामा चवइ निरूत, जाके[1] पहिलइ जामइ पूत ।
सो हारइ जाहि[2] पाछइ[3] होइ, तिहि सिहु मूंडि[4] विकाहइ[5] सोइ ॥११२॥

सतिभामा अरू रूपिणि तणौ[1], वलिभद्र आइ[2] भयउ[3] लागणउ[4] ।
तुम जिण[5] करहु हमारी काणि, जे हारहि तिहि[6] मूडहु आणि॥११३॥

एतह[1] कुरवइ[2] पठयउ दूत, नारयण पह[3] जाइ[4] पहुत ।
तुम घर जेठउ नंदन होइ, ता दूतह करावहु सोइ ॥११४॥

---

(११०) १. कोताल (क) छमाल (ग) २. वश वजाहें नही गोवाल (क) मुझ कहु कहा भोलवहि गोवाल (ग) ३. स्यो कहे सुभाइ (क) सहु कहइ सुभाइ (ख) वोलत सतभाउ (ग) ४. चालि (क ख) चलहि (ग) ५. वहणि (क) वहण (ख) वहुण (ग) ६. अपणे घरि जाहि (क) आवासहि जाहि (ख) आवासहि जाइ (ग)

(१११) १. चकडोल (क) विमाणि (ख ग) २. गए (क) चली (ग) ३. आवास (क) आवासि (ग) ४. भोग (ग) करत केलि दिन केतक गये (ख) ५. वहुत (क ग) ६. विहुकर (क) दुहु कहु (ख) दुन्ह (ग) ७. ज भए (क) ८. गब्भ (ख)

(११२) १. जिंहि घरि पहिला जन्मे पूत (ग) २. जिह (क) जिसु (ख) जिहि (ग) ३. पीछे (ग) ४. सिर (क) सिस (ख ग) ५. विवाहइ (क ख) विवाहै (ग)

(११३) १. भणउ (क) तणउ (ख) तणा (ग) २. कुमर (क ग) ३. भयो (क) सयउ (ख) हुवा (ग) ४. लागणा (ग) ५. मत (क ग) ६. तिह (क) तिस (ग)

(११४) १. एतइ (क) तिहि (ग) २. कइरविहि (ग) ३. तह (ग) ४. आइ (क ख) तिह को निय धुव व्याहइ सोइ (क) कुरवइ धीय विवाहइ सोइ (ख ग)

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

एतह[1] आइ वहुत दिन गये[2], दुहु[3] नारि कह[4] नंदन भये।
लक्षणवंत[5] कला[6] समजुत[7], ऐसे[8] भये दुहु[9] घर[10] पूत ॥११५॥

सतिभामा तणउ वधावउ गयउ, जाइउ[1] सेसे[2] ठाढउ[3] भयउ।
रूपिणि तणउ वधावउ जाइ[4], पाइत सो[5] पुण वयठउ जाइ ॥११६॥

जागि नरायणु वइठो होइ, रूपिणि दूत वधावउ देइ[1]।
हाथ जोडि वोलइ विहसंतु, रूपिणि घरह उपनउ पूत ॥११७॥

दूजउ[1] दूत वधावउ[2] देइ, नारायण सिहु[3] विनवइ[4] सोइ[5]।
हउ[6] स्वामी तुम पह[7] पठयउ[8], सतिभामा फुणि[9] नन्दण भयउ ॥११८॥

---

(११५) १. एतउ कहि दूत तव गये (क) २. भये (ग) ३. वेउ (क) दुन्हु (ग) ४. घरि (क) ५. लखिण (क ख) ६. वत्तीस (ग) ७. संयुत्त (क ग) संजुत्त (ख) ८. जइसे (ग) अइसे (ख) ९. विहु (क) १० के (ग)

(११६) १. जाइउ (क ख) जाइअ (ग) २. सीसउ (क) सीसे (ख) सीसा (ग) ३. ठाडउ (क) ठाउ (ख) ठाडा (ग) ४. आइ (क) देइ (ग) ५. तालि से (क)—सो पुणि पाइवि खडा रहेइ (ग)

(११७) १. होइ (क)

ग प्रति का तीसरा चौथा चरण—

रुकमिणि पूतु जण्यो छइ आज, देवउ वधावा ता हरे काजि।

(११८) १. वीजा तिहां (ग) (२) वधावा (ग) ३. स्यो (क ग) सहु (ख) ४. विनवे (क) विनवै (ख) विनउ (ग) ५. करेइ (ग) ६. हो (क) ७. पासि (ग) ८. पठाविउ (क) पाठयउ (ख) पाठियो (ग) ९. घरि (ग)

तउ हरि[1] हलहर लेइ[2] हकारि, कहइ वात जा वलि[3] वयसारि ।

झूठउ[4] वोलि टलै जिन कम्वगु, जेठउ[5] पूत[6] भयउ परदवगु[7] ॥११९॥

दूहु नारि घर नंदगा भए, घर घर नयरि वधावा गए[1] ।

सूहो[2] गावइ मंगलचार, वंभगा वेद पढइ झुगाकार[3] ॥१२०॥

वाजहि तूर भेरि अनिवार[1], महुवरि भेरि[2] संख अनिवार[3] ।

घरि घरि कूं[4] कूं थापे देह, मंगलगावहि[5] कामिगि गेह ॥१२१॥

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

छठि[1] निसि जागरगा करंतु, धूमकेतु तहा आइ पहुंत ।

घोमि[2] विम्वागु रचितु[3] छगा[4] जाम, धूमकेतु मनि चिंतिउ ताम ॥१२२॥

उतरि[1] विमागु दिट्ठु परदवगु, भगाइ जक्षु[2] यहु खत्री कवगु ।

वयर[3] सम्हालि कहइ तंखीगाी, इगाी[4] हरी नारी मुहि तगाी ॥१२३॥

---

(११९) १. तिहि (ग) २. लीयउ हकारि (क) लीया वुलाय (ग) ३. वउसा विचारि (क) वलिवइ साइ (ग) ४. झूंठी वात कहइ पर कवगु (ग) ५. जेठा (ग) ६. पुत्र (क ग) ७. परदमगु (क ख)

(१२०) १. दुये (ग) २. महुउ गमिउ मंगलचार (क) सूहउ करहिज्ज मंगलधारु (ख) अहि जो गावइ मंगलचार (ग) ३. जयकार (क) झगाकार (ग)

(१२१) १. सविचार (क) २. शब्द वहुताल (ग) ३. अनेचार (ख) ४. कुंकम रोला (क) ५. मंगल चारूवर कामिगि करेह (ख) घरि घरि कामिगि गीत करेह (क) मूलपाठ—यह चरगा मूल प्रति में न होने कारगा 'घ' प्रति से लिया गया है ।

(१२२) १. छट्ठा दिवसि निसि गीत चवंति (ग) २. थामि (क) खोवि (ख ग) ३. रहइ (क) रहउ (ख) रहया (ग) ४. गगिा (क) खगिा (ख) तिसु (ग)

(१२३) १. उठिउ (क) २. देव (क) जख्यि (ग) ३. वइर (क) वयरू (ख) वइरू (ग) ४. एगि (क) वयरू हुडी (ख) यह हइ हारि नारि (ग)

हुइ प्रछन्न[1] उठावइ[2] सोइ, जैसे नयर न जाणइ कोइ।
घालि विमाणि चलिउ[3] ले[4] तहा, वनखंड[5] माझ सिला हति जहा ॥१२४॥

धूमकेतु तौ[1] काहौ[2] करइ, घालउ[3] समुद्र त वेलउ[4] मरइ।
वामन[5] हाथ सिला सो पेखि, इहि तल धरउ[6] मरउ दुख देखि ॥१२५॥

पूर्व[1] रचित न मेटण कवणु, करम वंध भूंजइ परदवणु।
चापि[2] सिलातल सो घर जाइ, तव रूपिणी[3] जागइ[4] तिहि ठाइ ॥१२६॥

वस्तु बंध—छठि[1] रयणि हरिउ परदवणु
तह रूपिणि कारणु करइ, अरे[2] पाहरू[3] तुम्ह वेगि जागहु।
नारायण हर[4] निसुणि[5], तुम वलिवंत[7] पुकार[6] लागहु ॥
सतिभामा आनंद भयउ[8], कलयर[9] करइ वहूतु।
सो रूपिणि कारणु करइ जिहि रहस्यउ[10] निसि पूत ॥१२७॥

---

(१२४) १. परछन्नि (क) परछन्नु (ख) प्रछन्नु (ग) २. उठाउ (क) तव उट्ठियो (ग) ३. गयउ (क) चल्या (ग) ४. सो (ग) ५. वनवइ राडि (क) वणिखइ राडइ सिला थी जहः (ख) वणुखइ राडि सिला हइ जहा (ग)

(१२५) १. तह (क) तउ (ख) तुव (ग) २. काहउ (क) कहा (ग) ३. पामउ (क) ४. वेगिउ (क) वेगउ (ख) वेगि (ग) ५. वावन (क ख ग) ६. धरो (क) घालउ (ख) धरइ (ग)

(१२६) १. पूरव क्रम सु मेटइ कवण, तउ ए दुख देखे परदमण (क)
पूरव वैर न मेटइ कोणु, करम वंध भुंचै परद्रोणु (ख)
पूरव विभुगन मेटइ कोइ, करम लिखा सो निश्चइ होइ (ग)

२. चंपि (क ग) ३. रथि (क) ४. जाणइ (क) जगाई (ग) धूमकेतु चंपि विगसाइ (ख)

(१२७) १. निसहि हडउ परदवणु, (ग) २. हो (ग) ३. पहरवावे (ख) ४. हलहर (क ख) हरधर (ग) ५. निलहु (ग) ६. कुमार (क) ७. दलवंड (ग) ८. सनि (ग) ९. कालियल (क) करवल (ग) १०. हडियो पूत (क) हाडलियउ निति पूत (ख) जिहि का हडिया तिस पुत्त (ग)

चौपई

नयर[1] माहि[2] भयउ[3] कहलाउ,[4] सोवत जागिउ[5] जादवराउ ।
छपन कोटि मिल चले पुकार, फुणि तिस[6] तणी न पाइ सार ॥१२८॥

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिये प्रस्थान

एतइ[1] मेघकूट[2] जहि ठाउ, जमसंवर तहि निमसै राउ ।
वारहसइ विद्या जा[3] पासु, कंचणमाला गेहिणि[4] तासु ॥१२९॥
वहिकौ[1] मन[2] वनक्रीडा[3] रल्यउ, चढि विम्वाण[4] सकलत्तउ चलिउ[5] ।
सोवण माझ पहुतउ जाइ, वीरू परदम्वणु चाप्पोहौ[6] जहा ॥१३०॥
देखी[1] सिला माझ[2] वण धरी, वाम्वन हाथ[3] जु उची खरी ।
खण उचसहौ खण तलही होइ, उतरि विम्वाणहु देखइ सोइ ॥१३१॥

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

विद्या[1] के वल सिला[2] उठाइ, तउ नरिंद देखइ निकुताइ ।
लषण वत्तीस कनकमय[3] अंगु, जमसंवर देखयउ अणंगु[4] ॥१३२॥

---

(१२८) १. नयरि (ख ग) २. मांझ (ग) ३. हुआ (ग) ४. कलिहाउ (क) (क) कलिहाइउ (ग) ५. जाग्या (ग) ६. तसु (क) तिनि (ग)

(१२९) १. तहि (ग) २. मेघकुटिलपावइ (ग) ३. जिह (क) जिस (ख) ४. गोई अवासि (ग)

(१३०) १. उपवन (क) उनका (ग) २. कीडा (क) कीला (ख) ३. ऊपरि भया (ग) उछक भयो (क) ४. वेइट्ठि (क) ५. गयउ (क) गया (ग) ६. धरिउ (क) चापिउ (ख) चांपी (ग)

(१३१) १. दोठी (क) २. सो (क ख) जी (ग) ३. कर (ग)

(१३२) १. विहि संजोग (ग) २. सिललाई उट्ठाइ (ग) ३. कनक मइ अंगु (ग) उणंगु (ग) मूलपाठ—हचरोंततु अंगु

कुम्वरू[1] उठाइ उछंगह लयउ, वाहुडी राउ विमाण[2] गयउ ।
पाट महा दे राणी जाणि, कंचणमालाहि आपिउ[3] आणि ॥१३३॥

कंचणमाला लयउ कुम्वारू, अति सरूपु वहु लक्षण सारू ।
तिसके[1] रूप न देखइ[2] कोइ, राजा[3] धर्मपूत सो[4] होइ ॥१३४॥

चढि विमाणु[1] सो गयउ[2] तुरंतु[3], पम्वण वेग सो जाइ पहुँत ।
नयरि उछाउ[4] करै[5] सवु कवणु[6], कणयमाल हुवो[7] परदवणु ॥१३५॥

भो[1] प्रदुवनु कुवर[2] सुपियारू[3], अति सरूप गुण[4] लक्षण सार ।
दुइज[5] चंद जिमि व्रिधि[6] कराइ, वरस[7] पांच दस को भो आइ ॥१३६॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

फुणि सो पढण[1] उझावलि[2] गयउ, लिखितु पढितु सवु वुझिवि[3] लियउ[4]।
लक्षण छंदु तर्कु[5] वहु सुणिउ, नाटक राउ[6] भरथ सवु मुणिउ॥१३७॥

---

(१३३) १. कर उचाइ (क) २. चडेइ (ग) ३. आफिउ (क) दीन्ही (ग)

(१३४) १. तिहि के (क) तिहिकइ (ग) तिसकइ (ख) २. पूजाइ (ग) ३. राजाहि (ख) राषा (ग) ४. मो होइ (ग)

(१३५) १. विमाणि (क, ख, ग,) २. तुरंत (ग) ३. गया (ग) ४. आनंदु ५. (ग) करइ(ख,ग) ६. भणइ (ग) ७. घरहि(ग)

(१३६) १. भो (क) तव (ख) सो (ग) २. करे (क) कुमार (ख) खरा (ग) ३. सुखसार (क) ४. वहु (क ख ग) ५. दोइज (क) दोज (ग) ६. विरधि (क ख ग) ७. वरस पंचनउ हूवो जाम (क) वरिस पांच दस का भउ राउ (ख) दस वरस को भयो तिह ट्ठाइ (ग)

(१३७) १. पठणउ (ख) २. परसाउ (ग) उझावहि (क) झावरि (ख) झाउरि (ग) ३. गुण (क) वूझिहि (ख) वूझवि (ग) ४. लयो (ग) ५. वहुत सो (क) कवितु वहु (ख) ६. राव (क) राउ (ग) मूल पाठ तकु

नोट—तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नही है ।

धनुष वाणको[1] वूझिउ[2] जाणु, सिंघ जूझकौ[3] जाणिउ जाणु[4] ।
लडणु[5] पडणु निकासु[6] पइसारू. सबु जाण प्रदुवनु कुम्वारू ॥१३८॥
एसौ वीर भयउ परदवणु, तहि[1] सरिसु न वूझइ कवणु ।
कालसंवर[2] घर वृद्धि कराइ. वाहुरि[3] कथा द्वारिका जाइ ॥१३९॥

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

जहि सो रूपिणि कारणु करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ ।
नित[1] नित छीजइ[2] विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ[1] अरू[2] रोवइ वयण, आसू वहत[3] न थाके[4] नयण ।
पूव्व जन्म मैं[5] काहउ कियउ, अव कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥
कीमइ[1] पूरिख विछोही नारि, की[2] दम्व[3] घाली वणह मझारि ।
की मै लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संतापु कवण[4] गुण पर्यउ ॥१४२॥

---

(१३८) १. कउ (क ख) का (ग) २. विझविउ (क) वूझइ (ग) ३. झुझकउ (क) जुझावउ (ख) जूझ का (ग) ठाण (क) वाणु (ख) द्ठाणु (ग) ५. भिडणु (ग) ६. निकसन पे (क) निकासु (ख) निकलु (ग)

(१३९) १. ताकी सुधि न जाणइ कवणु (क) तहि सम सरिसु न वूझै कवणु (ख) २. अइसा वीरु भया तिह द्वार (ग ख) इहु कथा द्वारिका जाइ (ग)

(१४०) १. ते तउ नारी (क) २.ऊंसो इव (ग)

(१४१) १. धूजइ (क) छीजइ (ख) २. इकु (ख) पर पूरइ वयण (ग) ३. ढलि (ग) ४. भइरसी (ग) ५. पाप मइ किया (ग)

(१४२) १. कइ मइ (क, ग) २. को (क) कइ (ग) ३. दवदीयी (क) दवलाई (ख) दवलाइ (ग) ४. दुख पड्या (ग)

इम सो रूपिरिण[1] मन विलखाइ, तौ[2] हरि हलहरू वइठइ जाइ[3] ।
मत[4] तू सुंदरि विसमउ[5] धरइ, अनजानत[6] हमि काहौ करहि ।।१४३।।

सरलि[1] पयालि कहइ सुधि[2] कम्बरगु, तौ[3] हमि चाहि लेहि परदम्वरण ।
पलि[4] एस्यो हमि करइ परारण, मारि उठावइ गीध[5] मसारगु ।।१४४।।

इम समझाइ रहाइ[1] जाम, तो[2] मन[3] परिहस विसर्‌यो ताम ।
आइसे झुरत वरिसुहु गयउ, तौ नानारिषि द्वारिका गयउ ।।१४५।।

रूक्मिणी के पास नारद का आगमन

मुंडे मुंड चुटी[1] फर हरै, छत्री हाथ कमंडल धरै ।
तौ नानारिषि आयो तहा, विलिख वदन भइ[2] रूपिरिण तहा ।।१४६।।

जव तह नारद दीठउ नयरण, गहवरि रूपिरिण लागी[1] कहरण ।
पद्मपूत[2] हौ स्वामी भयउ, जारगउ नही कवरग हरि लयउ ।।१४७।।

---

(१४३) १. छिरग छिरग विलखी जाइ (क) २. तव (ग) ३. वइठा तिह आइ (ग) ४. मत (क ख ग) ५. विषवाद (क) विसमउ (ख) विसमाहु (ग) ६. अरगजानते हम कहा करेहि (ग)

(१४४) १. सुरग (क) सुरगि (ख) सुर्ग (ग) २. सो सुधि—(क) सोधि कवरगु (ग) ३. तउ वेगइ आरगउ वल वुधि (क) ४. वलितिह संहरगन को पूरनु (क) वलि गसिउ इमि करहिं परारगु ५. गीरध (ग)

(१४५) १. हलधर (क) हरि गउ घरि (ख) २. मनि परिहस विसारि जाम (क) ३. वन (ख)

नोट—प्रथम २ चरण (ग) प्रति में नहीं है ।

(१४६) १. चले (क) चोटी (ख) २. रूक्मिणि जहां (क ख) रुपिरिण हुइ जिहां (ग)

(१४७) १. बोलइ वयरग (ग) २. एक पुत्त मुहि सामी भया (क) एकु पुत्त, मो स्वामी भयउ (ख) एक पुत्त स्वामी हम भया (ग)

तुहि[1] पसाइ मुहि ऐसौ भयउ, पेट[2] दाहु[3] दे[4] नंदरण गयउ।
हाथ जोडि बोलै रुकिमिरणी, स्वामी सुधि करहु तसु[5] तरणी ॥१४८॥
तव[1] हसि नारद बोलइ वयरणु, सुद्धि[2] लेरण चाल्यो परदवरणु।
सुर्ग पयालि पुहमि[3] अह नहइ, चालि लेहु इम नारद कहइ ॥१४९॥

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

कही वात नारद समुझाइ, पूरव[1] विदेह सपत्तउ जाइ।
जहि खेमंधरु[2] सामि पहारणु, तहि उपनू केवलज्ञानु ॥१५०॥
समवसरण नानारिषि गयउ, तह चकवइ अचंभउ[1] भयउ[2]।
चक्कवंति[3] मुरिण[4] पूछिउ तहा, एसे मारणस उपजइ[5] कहा ॥१५१॥

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृतान्त वतलाना

तउ जिनवर[1] बोलइ[2] सतिभाउ[3], जम्बूदीप[4] आहि सो ठाउ।
भरहखेत[5] तहां सोरठ देसु, जयन[6] धर्म तहि चलइ असेसु ॥१५२॥

---

(१४८) १. तउ सामी किम जाइ कहियउ (क) २. वेटउ (क) ३. दुख (क) ४. ऐसे दे (क) ५. सुत (क)

(१४९) १. विहसि (क) २. सुधि करी लेस्यो परदमरणु (क) सुधि करि चाहि लेउ परदवरणु (ख) सुद्ध करि चलहि लेहि परदवरणु (ग) ३. पुहविहे जहा (क), पुहमि जइ रहइ (ख) पुहवि जे अइहै (ग)

(१५०) १. पुव्व (क) २. पुरिण पूर्वदिसि पहुता जाइ (ग) ३. सीमंधर (क ख) जमधूत (ग)

(१५१) १. अचंभो (क) २. सभापेसि पुरिण पूछरण लिया (ग) ३. तउ छत्री (क) ४. जिन (क) नाना रिषि तउ पूछइ तिहां (ग) ५. निपजहि (ग)

(१५२) १. जिनवरु (क) २. उपदेसइ (क) ३. भाउ (क) तिह ठाइ (ग) ४. सुखु नानारिषि कहउ सभाइ (ग) ५. भरत छेत्र (क) ६. जइन (क,ख) जैन (ग)

सायर माझ[१] द्वारिका पुरी, जणु[२] सो इंद्रलोक ते[३] पडी ।
राउ[४] नारायणु निमसइ जहा, एसै मारणस उपजइ[५] तहा ॥१५३॥

ताकी वररिण आहि[१] रुक्मीरणी, धरम[२] वात सो जाणइ घरणी ।
ताकौ[३] पूत प्रदवणु भयो[४], धूमकेतु ता हडि ले गयो ॥१५४॥

वावरण हाथ सिला हो[१] जहा, वीर परदवणु[२] चाप्पो[३] तहां ।
पूरव[४] जनम वैरू हौ[५] घरणौ, धूमकेत सारिउ[६] आपरणउ ॥१५५॥

मेघकूट जे[१] पवहि[२] ठाउ, तहि निवसइ वीजाहरराउ[३] ।
काल संवर आयो[४] तिहि ठाउ, देखि कुवरू लैगय उठाइ[५] ॥१५६॥

तहिं ठा विरधि करइ परदवणु, तिसकी सुधि न जाणइ कवणु ।
वारह[१] वरिस रहइ[२] तिहि ठाइ, फुणि सो[३] कुवर द्वारिका[४] जाइ ॥१५७॥

निसुणि वयण मनि[१] नारद रल्यउ[२], नमस्कार[३] करि वाहुडी चलिउ ।
चढि विवाण मुनि आयो तहा, मेहकूटि[४] मयरद्धहु[५] तहा ॥१५८॥

---

(१५३) १. मज्झि (क) माहि (ख,ग) २. जाणे (क) जाणौ (ग) ३. अवतारी (क) उतरी (ग) ४. तउ (ग) ५. निपजइ (क ग)

(१५४) १. अछइ (ग) २. धर्म्म तणी मति जाणइ घणी (क) ३. तहु कहु (ग) ४. जनयउ(ख)

(१५५) १. हइ (क) थी (ख) (ग) २. लेइ कुंवर (ग) ३. चंपियउ (क) चापियउ (ख) चंपातो (ग) ४. पुव्व (ख) पूर्व (ग) ५. वहु (क) हउ (ख) हइ (ग) ६. साधउ (क) सान्या (ग)

(१५६) १. जो (क) जव (ख) हइ (ग) २. परवत (क) पावइ (ख) दिपडा (ग) ३. विद्याधर (क) विज्जाहरु (ख) विद्याहरु (ग) ४. आविउ तह (क) आयउ ताहि (ख) आयतिउ (ग) ५. उट्ठाइ (क) उचाइ (ग)

(१५७) १. सोलह (ख) २. जाहि (ग) ३. वाहुडि कन्या (क) पुन सो कुमर (ख) ४. दुवारिका (ख)

(१५८) १. रिषि (क) सो (ग) २. रलियउ (क) चलिउ (ख) रलिउ (ग) ३. जिण वंदी फिरि (क) ४. मेघकूट (क,ख,ग) ५, मइंराधा (ग)

देखि कुवरु रिषि[1] मन विहसाइ[2]. फुणि वारमइ[3] सपतउ जाइ ।
भेटी जाइ तेण[4] रुकिमीणी. कही सार तसु[5] नंदण तणी ॥१५९॥

जिन[1] रूपिणि हीयरा[2] विलखाइ, वरिस वारहै[3] मिलिइ[4] आइ ।
मो सिहु[5] कहियउ केवली[6] वयण, निश्चे आइ मिले परदवण ॥१६०॥

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

उकठे[1] आंव[2] फलइ सैहार[3], कंचण कलसइ दीपइ[4] वारि ।
कूवा[5] वारि जे सूके खरे, दिसइ निम्पल[6] पाणी भरे ॥१६१॥

खीर[1] विरख सव[2] दीसहि फले, अरु आंचलइ[3] होइ[4] हहि पियरे[5] ।
थण हर जुवल[6] वहै जव[7] खीरु, तव सो[8] आवइ साहस धीरु ॥१६२॥

कहि सहनाण गयो[1] मुनि जाम, रूपिणि मन संतोषो ताम ।
पाख मास दिन[2] वरिस गणाइ, वाहुरि[3] कथा वीर पहजाइ ॥१६३॥

---

(१५९) मनइं (क) मनमहि (ग) २. विगसाइ (ग) ३. खिणि वारवती पहुतो (क) फुणि वारवइ सपत्तउ (ख) फुनि सो नयरी द्वारिका (ग) ४ तिहा (क) तहां (ख) तवते (ग) ५. ते (क) तिसु (ग)

(१६०) १. मन ग) २. हियडइ (क,ख) हियइ (ग) ३. वारमइ (क) सोरह (ख) ४. मिलसी (क) में मिलहइ (ख) मिलइगी (ग) ५. मोहिसउ (क) मुहिसहु (ख) मोस्यो (ग) ६. श्री जिनवर (क)

(१६१) १. सूके (क) उकट्ठे (ग) २. अंव (क ग) ३. सैवार (क) सइहार (ख) सहिसउ वार (ग) ४. दीसहि (क) ५. कूवावाविजे (क) कूव वाइजे (ख) सूहडी वावडि (ग) ६. निरमल (क,ख,ग)

(१६२) १. ऋषि (ग) २. सभि (ग) ३. अंचल (क ग) आंचल (ख) ४. दीसइ (क) होसहि (ख) दीसहि (ग) ५. पीयले (क,ख,ग) ६. युयल (क) जुगलि (ग) ७. वहु (क) ८. ते (क) परि (ग)

(१६३) १. सु गयउ (ख)

नोट—(ग) प्रति का प्रथम चरण निम्न प्रकार है—

काहसि दिन पूगे सव जान तउ २. नइ (क) ३. वाहुडि (क ख) वाहडि (ग)

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

तहि निमसै[1] सिंघरहु[2] नरेसु, तिहिसिहु विगहु[3] चलिउ असेस ।
जवसंवर[4] जव[5] करइ उपाउ[6], को भाणइ इहि को भरिवाउ[7] ॥१६४॥

कुवर पांचसौ[1] लए हकारि[2], रण जीतहु संघरहु[3] पचारि ।
सिंघ जुध[4] जो जाणै भेउ, वेगि आइ सो वीरा लेउ[5] ॥१६५॥

कुवरन नियरौ[1] आवै कोइ[2], तव विहसि करी वीवो लेइ[3] ।
मोकहु सामी करहु पसाउ, हउ रण जिणमु[4] सिंघरहु राउ ॥१६६॥

तउ नरवै वोलइ सतिभाउ, वाले कुवर[1] न तेरउ[2] ठाउ ।
जुझ तणउ नहि[3] जाणइ भेउ, तिम[4] करि तुहिकहु[5] आइस[6] देइ ॥१६७॥

---

(१६४) १. निवसइ (क ख ग) २. 'संघरथ (क) सिंघरहु (ख) सिंघराय (ग) ३. तह सो विग्रहुते (क) ताहि सहु विगाहु चलिउ (ख) तिसस्यों विग्रहु चल्या (ग) ४. जम (क) ५. तव (क ख ग) ६. पसाउ (क) ७. किम भानउ एह नउ भडिवाउ (क) किम भानइ इहि कउ भडिवाउ (ख) कोइ भानो इसु का भडिवाउ (ग)

(१६५) १. पांचसइ (क ख) पंचसइ (ग) २. बुलाइ (ख,ग) ३. सिंघराउ रणि जीतहु जाइ (ग) ४. जुझ (क) जुज्झ (ग) ५. तवहि विहसि तव वीडा लेइ (क) तउतुहि घसिरि वीडा लेहु (ख) वेगि आइ सो वाडो लेइ (ग)

(१६६) १. वेटउ (ख) नियडउ (ग) नेडा (ग) २. कवणु (ग) ३. वीडा मागइ सोइ (क) करिवीरु बोलेइ (ख) वोल्यो परदवणु (ग) ४. जीतस्यों (क) रणि जीतउ (ख ग)

(१६७) १. कुवरन (क ग) कुमरन (ख) २. तेरा (ग) ३. नहु (क) नउ (ख) ४. जिम (क) किम (ख) किमइ (ग) ५. किरि (क) ६. ताको तोहि (क)

वालउ[1] सूरु आगासह[2] होइ, तिनको[3] जूझ सकइ धर कोइ ।
वाल[4] वभंगु[5] डसइ[6] सउ आइ, ताके[7] विसमणि मंतु न आहि[8] ॥१६८॥

सीहिणि सीहु[1] जणै जो वालु, हस्ती[2] जूह[3] तणो पै कालु ।
जूह छाडि गए वण ठाउ, ताकह्[4] कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

वालउ[1] जै[2] वयसंदरू[3] सोइ[4], तिहि[5] सुधि[6] न जाणइ कोइ ।
रउदव्वाल[7] हुइ जै परजलइ[8], पुहमि[9] उझाइ[10] भासमु[11] सो करइ ॥१७०॥

तिम[1] हौ वालै[2] राकौ[3] पूत, मोहि[4] आइस देहु तुरंतु ।
अरियण दलु भानउ भरिवाउ, जौ[5] भाजउ तो लाजइ राउ ॥१७१॥

---

(१६८) १. वाला (ग) २. अगासह (क ख) आयसिहि (ग) ३. ताको तेज न सहिहइ कोइ (क) ताकौ तेज न वरनै कोइ (ख) तिसुका तेज न सहई न कोइ (ग) ४. वालउ (क) वालइ (ग) ५. सर्प्प (क) भुयंगु (ख) भुयंगि (ग) ६. ड़सइ जो आवि (क) डसइ जइ कोइ (ख) डस्या जो कोइ (ग) ७. तिहके (क) ताकं (ख) तिसुकइ (ग) ८. होइ (ख,ग) विशि कोइ नाहि उपाव (क)

(१६९) १. सीह (क) सीहु (ख) सिंघु (ग) २. हाथी (क) हसती (ख) ३. जूय (क) यूथ (ग)

४. जवहि पडहि तव गिधइ भाउ । भाजि जूथ जाहि पलाइ (क)
जवहि पडइ तहि कउ गंध वाउ । भाजहि जूह छोडि वण ठाउ (ख)
जे उन्ह ताहि पडइ गंध वाउ । भाजहि यूथ छोडि वन ठाउ (ग)

(१७०) १. वाले (ग) २. जे (क ग) ३. वेशंदर (क) वइसावरू (ख) वइसानरु (ग) ४. होइ (क ख ग) ५. तिहकी (क) तहकी (ख) तिसुकी (ग) ६. वुद्धि (ग) ७. दव दाझइ लुह जग पजुले (क) सइझाल जे हुइ परजलइ (ग) ८. पज्जलइ (ख) ९. पुहवि (ग) १०. दझाइ (क ख) दाझावइ (ग) ११. भसम सो (क ख) भसमी (ग)

(१७१) १. तिमहो (क) तिवहउ (ग) २. वालउ (क) वोलु (ख) वाला (ग) नाइनो पुत्र (क) रायकउ पूतु (ख) राइका पुत्र (ग) ४. मोहक (क) मुहिकहु (ख) मोकहु (ग) ५. जं जं भाजउ तउ लीजइ राउ (ग)

निसुणि वयण मन[1] तूठउ राउ, मयण कुवर कहु करहु पसाउ ।
कालसंवर तव[2] वीडा देइ, हाथ पसारि मयणु[3] तव लेइ ॥१७२॥

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिये प्रस्थान

वस्तुबंध—भयउ आयसु चल्यउ[1] परदवणु ।
चउरंग[2] दलु[3] साजिउ,[4] पडहु तूर वहु[5] भेरि वजइ[6] ।
तहि[7] कलियलु वहु उछल्यउ, जाणौ[8] अकाल[9] घण मेघ गर्जइ[10] ॥
रह सज्जेह[11] गैयर गुडे तुरिहय[12] पडियउ पलाणु ।
हुइ[13] सनधु चलिउ मयणु गयणि न सूझइ भाणु ॥१७३॥

चौपई

मयण चरितु निसुणहु धरि भाउ, जहि रण जिणिवि[1] सिधरह[2] राउ
.... १७४॥

---

(१७२) १. मनि हरषिउ (क) ग प्रगति में—सुणि करि वात अभेयउ राउ, मयण कुवर कहु भया पसाउ (ग) २. जव (ख) ते तव (ग) ३. प·दमणु (क) परदमणहु (ग)

(१७३) १. चलिउ (क) २. चाउरंगु (क ख) ३. दलु (ख) ४. सज्जियउ (ख) ५. काइ (क) ६. वज्जहि (ख) वाजहि (क) ७. तउ तिह (क) ८. जिसउ (क) जणु (ख) ९. अंवरह (क) १०. गाजइ (क) गज्जहि (ख) ११. साजे (क) सज्जे (ख) १२. तुरीयण (क) १३. इसी सनिधि (क) सणद्ध (ख)

(१७४) १. जिणउ (क) जीतिउ (ख) २. सिधरपु (क)
ग प्रति में १७३ और १७४ को छन्द निम्न रूप से है—
भया अइसु २ ताम परदवणु,
चतुरंगी सेन सज्जिय । पडह भेरि बहुतु वज्जिहि ॥
तह कलियल बहु उछलिउ । जणु आकास ते मेहु गज्जइ ॥
रथ पाइक अरु बहुतु दल । तुरियह पडे पलाण किंयो ॥
पयाणउ मयणि भइ । गयणन सूझइ भाणु ॥

ध्रुवक

कुवर[2] पलाणिउ[3] सव जगु जणिउ[1], गयांणहि उछली[4] खेह ।
रहिवर साजहि वाजे वाजहि, जाणौ[5] भादों के मेह ।।
जे[6] अरिदल[7] भंजइ परीवल गंजहि, सुहड चले[8] अप्रमाणु[9] ।
ते भणइ[10] सभूते[11] जाइ[12] पहुते, सवल वीर समराण ।।१७५।।

चौपई

आवतु देखि[1] कुमर[2] परदवणु, भणौ सिंधु[3] यौ[4] वालो[5] कोणु ।
वालो[6] रण[7] कि पठावइ कोइ, इहिसउ[8] भीडत[9] लाज मो[10] होइ ।।१७६।।
फुणि[1] फुणि वाहरी जंपइ राउ, किम करि वालेहि घालै घाउ ।
देखि मया[2] चित[3] उपनी ताहि, वाल कुवर वाहुडि घर जाहि ।।१७७।।

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

निसुणि[1] व्रयण[2] कोप्यो परदवणु, हीण बोलु तै वोल्यो कवणु ।
वालउ कहत[3] न[4] लाभइ ठाउ, अब[5] भानउ तेरउ भरिवाउ।।१७८।।

---

(१७५) जणियउ (क) जाणिउ (ख) २. तव राजकुमर पलाणइ (ग) ३. सह (क) सहु (ग) ४. उडी (क) ५. जिम (क) जाण (ख) जाणउ (ग) ६. जव (क) ७. अरियण (ग) ८. सघायह (क) ९. रण सामि (क) ले आण (ग) १०. भये (ख) ११. रथ-जूते (ग) १२. आइ (ख)

(१७६) १. देखिउ (क) देखा (ग) २. तिहि (ग) इहु (ख ग) ४. वालहु (ख) वालकु (ग) कवणु (ख ग) क—प्रति—कहे सिघरथ छत्री कवण ६. वालउ (क ख) वाला (ग) ७. रिणिमहि (क) रणिहि (ग) ८. एह सो (क) इहु सिहु (ख) इसु स्यों (ग) ९. भिरत (क) तिडत (ख) १०. न (क) मुहि (ख) मैं (ग)

(१७७) १. वाला देखि जंपियो राउ (ग) २. दया (ख) ३. मनि (ग) क प्रति—तो देखत मोहि मनु विगसाइ, उठि कुमर वाहुडि घरि जाहि (क)

(१७८) १. सुणे (ग) २. वचन (ग) ३. कहि (ग) ४. किव (ग) लाज नहि ठाउ (क) ५. इव (ग)

तव रावत काढइ[1] करवाल, वरिसहि वाण[2] मेघ असराल ।
भिडइ सुहड[3] करि असिवर लेइ, रह[4] चूरइ मइगल पहरेइ ॥१७६॥
मैगल सिंहु[1] मैगल आ[2] भिडइ, हैवर[3] स्यौ[4] हैवर आ[5] भिडइ ।
पंचावथु[6] जूझू तहि[7] भयउ, गीध[8] मसाण तहा उठीयउ[9] ॥१८०॥
सैयन[1] जूझि परीधर[2] जाम, दोउ वीर भीरे रण ताम ।
दोइ वीर खरे[3] सपराण, दोइ करइ सिंघ जिमू ठाण ॥१८१॥
मलु[1] जूझते दोउ भीडइ, दोउ वीर[2] अखाडो करहि ।
हारिउ सिंह गयउ भरिवाउ, वांधिउ[3] मयण गलै[4] दे पाउ ॥१८२॥
वस्तुबंध—जवहि[1] जित्यउ कुवर परददगु

सुर देखइ ऊपर[2] भए, वंधि[3] स्यंघरहु कुमर चल्लिउ ।
मयणु सुगुणु सधेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणंदियउ ॥

देखि राउ आणंदियउ, तू सिवि[4] कीयउ पसाउ ।
महु णंदण जे पंच-सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चौपई

मयण चरितु निसुणि सवु कोइ, सोला[1] लाभ परापति होइ ।

---

(१७६) १. करि ले (ग) २. असरास (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर घूरमइ गल विहरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क) ४. सिउ (ख) ५. संचडिउ (ख) तुलि चढे (ग) ६. हयवर सेती हयवर सार (क) पचावत्थु (ख) पंचवरसु (ग) ७. जव (ख) ८. गिद्ध (ख) गर्ध (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि करि गयउ (ग) (क) इणि जूझ करत वडवार (क)

(१८१) १. सेना (क ख) सैन्या (ग) २. रणि (ग) ३. वइरी (ग)

(१८२) १. मारन (क) माल (ख,ग) २. राउ (ग) ३. वंधि (ग) ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. अचिरज (क) ग प्रति— जइ कीयो तव सूरि तहि ३. वांधि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. इहु (ख)

(१८४) १. सोलह (क ख ग) २. देवा पड पण सो वन जवउ हलोह चढि सिघरचु धरि गयउ (यह पाठ क प्रति में है) ग प्रति में इस छन्द का दूसरा पाठ नहीं है ।

विजाहर तव करइ पसाउ, बांध्यो छोडि स्यंघरउ राउ ।
देइ[२] पटु पुणि आकउ लयउ, समदिउ स्यंघराउ घर गयउ ॥१८४॥
तव[१] कुम्वरन्हि[२] मन विसमउ[३] भयउ[४], जियत[५] वुआल[६] हमारउ भयउ ।
इतडो[७] राइ न राखियउ[८] मान, पालकु आणि कीयउ परधानु ॥१८५॥
तवहि[१] कुवर[२] मिल कीयउ उपाउ, अव[३] भानउ इनकौ[४] भरिवाउ ।
सोला गुफा दिखालइ[५] आजु, जैसे होइ निकंटकु[६] राजु[७] ॥१८६॥

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना

एह मंत्र[१] जिण भेटइ[२] कवणु[३], लियउ[४] वुलाइ कुमर परदमणु ।
कियो मंतु सव कुमर[५] मिले, खेलण[६] मिसि वण क्रीडा चले॥१८७॥
भणहि[१] कुवर निसुणहि[२] परदवणु, विजयागिरि उपर जिण भवणु ।
जो नर[३] पूज करइ नर सोइ[४], तिहि[५] कहु पुन्न[६] परापति होइ ॥१८८॥

---

(१८५) १. सव्व (ग) २. कुमर (क) कुमरहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विशमो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) देखुजु (ग) ६. आलु (क) अहलु (ख) हालु (ग) ६. गयउ (ख) थयउ (क) कीया (ग) ७. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ८. राखिय (क) राखिउ (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तव (क) २. कुमर (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इव भागा (ग) इव भनि हिया कउ भडिवाउ (ख) ५. दिखावहि (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरहु (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. मेटउ (क) मेटइ (ख) मोटइ (ग) ३. कवण (क) कउण (ग) ४. चालहु जाहि लेण (ग) ५. भाई सवि (क) ते खिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति में निम्न पाठ हैं—

जाइ जौ लेण मुचति कीडा को चले !

(१८८) १. भाजहु (ग) २. देखउ (ग) ३. तिह (क) तह (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क,ख,ग) ५. तिह को (क) तिसकौ (ग) ६. पुनि (क) पुन्न (ख,ग)

निसुणि वयण हरष्यो[1] परदवणु, चढि गिरवरि[2] जोवइ[3] जिणभवणु ।
चढी[4] जो देखइ[5] वीर पगारू[6], विषमु नागु करि[7] मिल्यउ फुकारू[8] ॥१८९॥

हाकि मयणु विसहरस्यो[1] भीडइ[2], पकडि पूछ तहि[3] तलसीउ[4] करइ ।
देखि वीरू मन[5] चिंभिउ[6] सोइ, जाख[7] रूप होइ[8] ठाढो[9] होइ ॥१९०॥

दुइ कर जोडि करइ[1] सतिभाउ, पूव्वहुँ[2] हूं तु[3] कणखउराउ[4] ।
राजु छाडि[5] गयउ[6] तप करण[7], सोलह विद्या आफी[8] धरण ॥१९१॥

हरि[1] घर[2] ताह होइ अवतरणु[3], तुहि[4] निरखि[5] लेइ परदवणु[6] ।
यह[7] थोणी तसु राजा तणी, लेइ सम्हालि[8] वस्त[9] आपणो ॥१९२॥

---

(१८९) १. हरषिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चढि गिरि (क) चडिवि सिखर (ख) चडि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चढियउ (क) चढियउ जो (ख) चडिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीरु पगार (ख) वीरु पगारि (ग) ७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख ग)

(१९०) १. सिहु (ख) सउ (ग) २ भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि (ग) ४. शिरु कियउ (क) सिरु करिउ (ख) सिरु करया (ग) ५. मइ (क) मनि (ख,ग) ६. विशनद होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जखि (क) जक्ख (ख) जक्ष (ग) ८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. रूठउ कोइ (क) वइठा होइ (ग)

(१९१) १. कहइ (क,ग) २. पुवइ हूं (क) पूरवह (ग) ३. हूं तउ (क) हितु (ग) ४. कणंखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहूचल्या (ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आपी (क) आपो (ग)

(१९२) १. हरित्थर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवतारि (क) अवतरणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न राखि (क) ६. निहि परदमणु (क) विद्या आपणी (ख) ७. हइ छोड (क) थवणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वस्त (क) वस्तु (ग)

नोट—१९२ वां छंद (ग) प्रति में नहीं है।

१६ विद्याओं के नाम

हिय–आलोक अरू मोहणी[1], जल–सोखणी रयण–दरसणी ।
गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ–दरिसणी सुधा–कारणी[2] ॥१६३॥

अगिनि–थंभ विद्या–तारणी[1], वहु–रूपणि[2] पाणी–वंधणी[3] ।
गुटिकासिधि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१६४॥

धारा–वंधणी वंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
रयणह जडित[1] अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि[2] आफउ[3] आणि ।१६५।

आफि मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि वीरू तहा[2] आगइ[3] चलउ[4] ।
सो मयरद्धु[5] सपत्तउ[6] तहा, हरिसय[7] पंच सहोयर[8] जहा ॥१६६॥

कुमरन्हि पासि मयणु जव गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।
उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी[1] गुफा दिखालइ आणि[2] ॥१६७॥

---

(१६३) १. गेहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम चरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूड़ा (ख) एक सुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडिउ (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग) ३. दीना (क) सो (ग)

(१६६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. आगलि (क) अग्गहा (ग) ४. सरिउ (ग) ५. मइरधउ (क) मइराधा (ग) ६. पहुतो (क) आयो (ग) ७. हिव पंचसह (क) हहिसयपंच (ख,ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. बीजी (क) २. जाइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु[1], कालासुर[2] दैयतु[3] तहि ठाउ[4]।
पूरव चरितु[5] न मेटइ कवणु, तिहि[6] सिहु जाइ भिरइ[7] परदवणु ॥१९८॥
हाकि[1] कुवर धर[2] पाडिउ[3] सोइ, हाथ जोडी फुणि[4] ठाढो होइ।
पवरिशु[5] देखि हियइ अहि डरइ[6], छत्र[7] चवर ले आगइ धरइ ॥१९९॥
वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किंकर फुणि लागइ[1] पाइ।
फुणि सो[2] मयणु अगुहडो[3] चलइ, तीजी गुफा आइ[4] पइसरइ[5] ॥२००॥
नाग गुफा दीठी[1] वर वीर[2], अति[3] निहालिउ[4] साहस धीरू।
विषमु नागु घणघोर[5] करंत, सो तिहि आइ भिडिउ मयमंतु ॥२०१॥
तव[1] मयण मन करइ[2] उपाउ, गहि[3] विसहर भान्यउ[4] भरिवाउ।
देखि अतुल वल[5] संवयो[6] सोइ[7], हाथ जोडि फुणि उभो[8] होइ ॥२०२॥

---

(१९८) १. सुहनाणि (क) तिह नांव (ख) २. काल सरोदग (क) कालु संभु (ग) ३. देखो (क) दीन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) ट्ठाउ (ग) ५. रचित (क) वित्त (ग) ६. तिह ठा (क) तिहि सहु (ख) तिन्हस्यो (ग) ७. भिडइ (क) भिडिउ (ख) लड्या (ग)

(१९९) १. हाक्या (ग) २. सो (क) पछा (ग) ३. पाडइ (क) पड्या (ग) ४. छिणि (क) सो (ग) ५. पौरिष (क) पउरिषु (ख) पउरषु (ग) ६. ग्रति डरइ (क) गहवरइ (ग) ७. छत्रू (ग) छत्तु (ख)

(२००) १. लागा (ग) २. ते (क) सु (ग) ३. आगउ चलइ (क) तो अगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संचरइ (क)

(२०१) १. वेढी (क) जबदीठी (ग) २. वीरि (ख) ३. धूत (क) दहु (ख) रूप (ग) ४. निकलउ (क) निहाली (ग) ५. घुरघरंत (क)

(२०२) १. तबही (क ग) २. करइ (क) बहुविध्या (ग) ३. छद (क) तहि (ख) ४. भानो (क) भानउ (ख.ग) ५. भरिवर (ग) ६. संखिउ (क ख) संक्यो ७. सोइ (ग) ८. करिविनउ सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयरण कुवर वलिवंतउ जारिग[1], चंद्र सिघासरणु आप्पउ[2] आरिग।
नागसेज[3] वीणा पावडी, विद्या तीनि आरिग[4] सो[5] धरी ॥२०३॥
सेनाकरी[1] गेह–कारणी, नागपासि विद्या–तारणी।
इनडौ[2] लाभ तिहा तिह भयो[3], फुरिग सो नारण[4] सरोवर गयो ॥२०४॥
न्हात देखि धाए[1] रखवाल, कवरण पुरिषु तू चाहिउ[2] काल[3]।
जो सुर राखि सरोवरू रहिउ[4], तिहि[5] जल[6] न्हाइ[7] कवरण तू[8] कह्यउ[9]॥२०५॥
तवइ वीर वोलइ प्रजलेइ, आवत वज्र[2] झेलि को लेइ।
जे[3] विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु[4] जुझरगह[5] समत्थ[6] ॥२०६
तव रखवाले[1] मिलइ[2] सारण, विषमु वीरू यह[3] नाही मान[4]।
उपरा उपरू[5] करइ[6] मुह चाहि, मयरधउ[7] वरू[8] अप्पहि आरिग[9] ॥२०७॥

---

(२०३) १. विय (ग) २. दीधउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पाशि (क) ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एवडउ (क) चडतु (ख) इतना (ग) ३. थी (क) ते (ग) ४. न्हारण (क ख,ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चल्यो (ग) ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हारण (क ख) ८. तुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति में ३–४ चरण नहीं है।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पगलेइ (ख) इतनै सूरणत मयरण परजलेइउ (ग) २. आवत तुझु झाडिव करि लेहु (क) अवतु वजु झलिय को लेइ (ख) आवतु चालि झकोलवि चाल्यो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि झूझ करण (क) ६. मूलपाठ हाथ और समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अवशारिण (क) मिलवहिसपनु (ख) वोलरण ३. हम (क) इहु (ख ग) ४. जारगइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. रूपु (ख) ६. कहहि (क,ख) करइ (ग) ७. मयरधा (क) भयरद्ध (ख) मइराध्य (ग) ८. वर (क) वलु (ग) ९. आफहि आह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अगिनिकुंड गउ[1] जव वर वीरू, करइ आण हिव साहस[2] धीरू
उठउ[3] सरवरू[4] चलियउ[5] जाणि, अगिनि कपड[6] तहि[7] आपिउ आणि॥२०८॥
लेतइ[1] वीरू अगाडो[2] चलइ[3], विरख[4] आंव तो दीठउ फल्यउ।
आउ[4] आंव[5] तोडी[6] सो खाइ[7], वंदरूदेउ[8] पहुतउ आइ॥२०९॥
कवणु वीरू[1] तू तोडहि[2] आम, मुहिसिहुं[3] आइ भिडहि[4] संग्राम।
कोपि मयणु[3] तव[4] तिहिपह गयउ, तिहुसहु[5] जुभु महाहउ कियउ॥२१०॥
मयण पचारि जिणिउ[1] सो देउ, कर[2] जोडइ अर विणवइ[3] सेव।
पहुममालु[4] दुइ हाथह लेइ, अर पावडी जुगलु[5] सो देइ॥२११॥
तउ[1] लइ मयण कयथवण[2] गए[3], पयठइ[4] मयण[5] फुणि[6] उभे[7] भए।
गयउ[8] वीर जउ[9] वणह मभारि, दूयरू[10] गौयरू उठिउ विचारि[11]॥२१२॥

---

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जव गइयउ (ख) २. प्राण हिव (क) झंपता साइ (ख) झंपतह (ग) ३. तूठउ (क,ख) तूहा (ग) ४. सुरवर (क ख) ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपटु (ख) निपाटु (ग) ७. आयो जाणि (क) दीन्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ आणहिव के स्थान पर आपतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहड़ो (ख) अगहा (ग) ३. चलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. अंव (क) अशोक (ग) ६. फो (क, ख) ७. फणिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग) ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंव (क) आंव (ख ग) २. तनाहि (क) ३. मोस्यो (ग) ४. केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिनि कियो (क) मालावरनु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि नु विनवइ सोव (ग) ३. वहू (क ख) ४. पुहुप (ख ग) पहुप (क) ५. जुगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तव ले (ख ग) २. कयत्थ (ग) ३. गयउ (ग) ४. पइठइ (ख) पइठि (ग) ५. वीरु (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. उभा भया (ग) ८. ले ले मयण गउ (क) ९. जे (ग) १०. दुइरु (ख) दुयर (क) दवह (ग) ११. विचारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है।

सा[1] गैयरू[2] गरूवो[3] मयमंतु, हाथि[4] कुम्वरूस्यो[5] भिरउ[6] तुरंतु ।
मारि[7] दंतुसल[8] तोडइ सोइ, चडिवि कंधि करि[9] अंकुस देइ[10] ॥२१३॥

पुणि वावी[1] लइ गए[2] कुम्वार[3], तइ[4] विसहरू णिवसइ णंकालु[5] ।
जाइ वीरू तहां[6] उपर चढइ[7], विसहर निकली मयणस्यो[8] भिडइ॥२१४॥

तहि[1] गहि पूछ फिरावइ सोइ, विलख वदनु तउ[2] फुणवइ होइ ।
फुणि तिहि विसहर सेवा करी, काममूंदरी आफी[3] छुरी ॥२१५॥

मलयागिरि पर[1] जव गयउ[2], करि विसादु[3] फुणि[4] उभउ[5] भयउ ।
अमरदेव तहि आयउ धाइ, निजिणि[6] कंद्रप धरीउ रहाइ ॥२१६॥

हारयो[1] देवभगति तिस करइ, कंकणु जुवलु[2] आणि सो धरइ[3] ।
सिखरू मुकटु देइ[4] अविचारू[5], आपिउ[6] आणि[7] वस्त उनिहारू[8] ॥२१७

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरसिहुं (ख) कुवरू (ग) ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) चूरि (ग) ८. फुणि मानों सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. वावडी (क) विविभों (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार (क,ख) कुवारू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि सूर इक करइ झंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. चढयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क,ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. आपी (क) अरु आफी (ख) आपउ (ग)

(२१६) ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग) ३. विसहु (ख) विसमाहुसु (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क) ६. कुंवर संघाति करइ लडाइ (क) णिज्जि णिकंद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या सुकंद्रप रहया थाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिस कर इहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग) २. युगल ते (क) जुगल (ग) ३. धरहि (क) जि दीनउ आइ (ख) आणि सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिचारू (क) ६. आप्पा (क) आफि (ख) ७. आणिउ (ख) ८. उरहारू (क ख) अरुहारू (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तह आयउ धाइ' पाठ है ।

वरहासेण[1] गुफा हीं[2] जहा, कुवरन्हि मयण पठायो[3] तहा[4] ।
तिहि ठा[5] अमरदेउ हो[6] कोइ, रूप वरह भयो[7] खण[8] सोइ ॥२१८॥
सूवर रूप आइ सो भिडउ[1], मारिउ[2] मयणि दंतसलि[3] भिडउ ।
पुष्प[4] चापु[5] दीनउ[6] सुरदेउ[7], विजहसंखु[8] आपिउ[9] तहि[10] खेउ ॥२१९॥
तवहि मयणु[1] वण[2] वयठउ जाइ, दुष्ट[3] जीउ[4] निवसइ[5] तह आइ ।
वण मा[6] मयण पहुँतउ[7] तहा, वीरू मणोजो[8] बांधिउ जहा ॥२२०॥
बाधिउ वीर मनोजउ छोड़ी, फुणि ते वण[1]मा[2] गए वहोडी ।
जहि[3] विजाहरि[4] एतउ कीयउ, सो[5] वसंतु खण वंधिवि लयउ[6] ॥२२१॥
फुणि सु मनोजउ[1] मनहविसाइ[2], कुम्वर मयण के लागइ[3] पाइ ।
हाथ जोडि सो कहा[4] करेइ, इंदजालु विद्या दुइ[5] देइ ॥२२२॥

---

(२१८) १. वारहसेन (क) वराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. हहि (क) जव गयउ (ख) थी जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क) हुइ (ख.ग) ७. थकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख,ग) ३. दंतूसल झडइ (क) दंतूसलु झडिउ (ख) हेठि सो दीया (ग) ४ पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख) चंपि (ग) ६, हनइ (क) दीना (ग) ७. सुरदेह (क) सुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख वाजि (ग) ९. आयो (क) आफिउ (ख ग) १०. तिणि जहां (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपवणि (ग) २. पयट्टइ (क) वणि (ख) पइट्ठा (ग) ३. दुट्ठ (ख) ४. पुहीम (ग) ५. फेराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहूतो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिणि (क) ४. विद्याधरि (क) विज्जाहरि (ख) ५. सोतिणि कुमरि वेधि लिणि लियउ (क)

(२२२) १. मनोजव (क) २. मनि विहसाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४. काहउ करइ (क) ले धरइ (क)

नोट:—ग प्रति में २२० से २२६ तक के छन्द नहीं हैं ।

उवसंत[1] मनि[2] भयउ उछाहु, दीनी[3] कन्या ठयहु विवाहु ।
वहु भगति वोल सतिभाइ, फुणि[4] विजाहरू लागइ[5] पाइ ॥२२३॥
अरजुन[1] वराह वीरु[2] जउ जाइ, तिहि वरा जरहु[3] पहुतउ[4] आइ ।
तिहिसउ[5] जुभ अपूरव होइ, कुसमवाण सर आपइ[6] सोइ[7] ॥२२४॥
फुणि सो वीरू विउण[1] खरण गयउ, विलतरंग[2] सिरि[3] उभउ भयउ
विरखु[4] तमाल[5] तणउ[6] हइ जहा, खरण मयरद्ध[7] सपतउ तहां ॥२२५॥
फटिक--सिला वयठी[1] वर नारि, जपइ जाप सो वराह मभारि ।
तउ विजाहर पुछइ मयरणु, वरण मा वसइ णारि यह[2] कम्वरणु ॥२२६॥
तउ[1] वसंत मन[2] कहइ[3] विचारि, रतिनामा यह वूचइ[4] नारि ।
अति सरूप सुहनाली[5] नयरण[6], लेइ विवाहि कुम्वर परदवरणु ॥२२७॥
तव[1] मयरण मन भो[2] उछाहु, दीनी[3] कुवरि आढए[4] विवाहु ।
फुणि सो मयरण सपतउ तहा, हहि[5] सयपंच सहोयर जहा ॥२२८॥

---

(२२३) १. तव वसंत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीधी (क) ४. भिणि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अज्जुण (क) २. वीरजव (क) जषि (क) ४. पहुतो (क) तिहसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफइ (ख)

(२२५) १. वलि खरण (क) २. विरख लता (क ख) ३. उग (क) तलि (ख) ४. विरख (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपत्तउ (ख)

(२२६) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

(२२७) १. वलि वशंत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. वीजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयरण (क ख)

(२२८) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. दीठी (क ख) ४. तणउ (क) आढयो (ख) ५. खइ जइ (क) जहि सइ (ख)

२२४—मूल प्रति में तिहिसउ जुभ के स्थान पर तिहिसउज

पभणइ[1] कुवर मुहामुह चाहि, विषमु वीरु यह[2] मानन[3] आहि
सोलह गुफा पठायो[4] मयण[5], तह[6] तह मिलहि वस्त्र आभरण॥२२९॥
मयणह पौरिशु देखि अपारु, तव कुम्वरन्हि छोडिउ[1] अहंकारु
सवहू मिलि सलहिउ तहि ठाइ, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥

वस्तु बंध—पुन्नु वलियउ[1] अहि[2] संसारु[3] ।
पुन्नु[4] सेम्वहि सुर असुर, पुन्नु सफलु[5] अरहंत जंपिउ[6] ।
कत[7] रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेत[8] ले[9] सिला[10] चंपिउ[11] ॥
जामसंवरू कत[12] लै गयउ, कनयमाल घरितह[13] गयउ विरिद्धि ।
सोलह लाभ महंतु फलु, पुण परापति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि[1] राज भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजइ सुरलोइ ।
पुन्नहि अजर[2] अमर मुगण्णा[3], पुन्नहि जाइ जीव णिव्वाणा[4] ॥२३२॥

---

(२२९) १. चितइ (क) पभणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क) माणु न (ख) ४. दिखायी (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडियउ (क) छाडियउ (ख)

(२३१) १. गुरुयउ (क) २. आहि (क ख) ३. संसारि (क ख) ४. पुन्नि (क) ५. फलइ (क) ६. जाणिउ (ख) जंपइ (क) ७. किउ (क) ८. किन धूमकेत (क) ९. कित (क) लइ (ख) १०. सिला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कह (क) किसो पुनइ सविहउ रिधि—यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलता है । १३. नोट—मूल प्रति का पाठ 'घरि बंधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुन्न वडउ जु जगत नहि होइ (ख) २. अजरामर (ख) ३. पद जाण (क) अमर विमाण (ख) ४. निरवाणि (क)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लइ[1] अविचार, चम्वर छत्र सिर मुकट अपार।
नागसेज जो[2] रयणानी[3] जरी[4], असीणी[5] कपड[6] वीणा पावडी ॥२३३॥
विजयसंख कौसाद[1] अपार, चंद्र संघासण[3] सेखरण[2] हार।
सोहइ हाथ काममुंदरी[3], पहुपचाप कर[4] कंडिहा छुरी ॥२३४॥
कुसुमुवाण कर हाथह लेइ, कुंडल जुवल[1] सम्वरण[2] पहेरइ।
राजकुवरि दुइ परिणइ सोइ[3], चढि गैयर[4] फुणि ऊभौ[5] होइ ॥२३५॥
कंकरण जुगल रयणि अनिवार, अर द्वइ[1] लेइ पुष्प[2] की माल।
न्हानी वस्त[3] गणौ[4] तह[5] कवरणु, इतनउ[6] लेनि[7] चलउ[8] परदवणु ॥२३६॥
मयरण कुवर घर चल्यो तुरंत, मेघकूट[1] खरण[2] जाइ[3] पहुत।
जमसंवरु[4] भेटिउ[5] तिहि ठाउ[6], बहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३७॥
भेटि राउ[1] फुणि[2] उभो भयो[3], मयरणु[4] कुवरु रणवासह गयो।
कनकमाल[5] खरण[6] भेटी जाइ, वहुत भगति करि लागो[7] पाइ ॥२३८॥

---

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख) रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपट्ट (ख)

(२३४) १. कोसाद (क) कउसवडु (ख) २. सेरवर (क) ३. संघासण (क) ३. मूंदडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. श्रवण (क) सवणह (ख) ३. जाइ (क) ४. गइयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पुहप (क ख) ३. वस्तु (क) वसतु (ख) ४. गिणइ (क) गणइ (ख) ५. इह (क ख) तिहि (ख) ६. एती (क) इतडउ (ख) ७. ले (क) लइ (ख) ८. चालिउ (क) निकलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खणि (ख) खिणि (क) ३. आइ (क) ४. काल (ग) ५. जइ वइठउ आइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राव (क) २. पुणि (क) तव (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग) ४. फुणिवि मयरण (ग) ५. कणयमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क) लागी (ख) लागा (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप[1] मयण वर वीर, कामबाण तसु हयउ[2] सरीर ।

फुणि सो अंचलु[3] लागी धाइ, करि[4] उतरु[5] वह चल्योउ[6] छुडाइ ॥२३९॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुणि सो मयणु सपतउ तहा, वण[3] उद्यान मुनिस्वरु जहा ।

नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो[1] जुगतउ[2] होइ ॥२४०॥

कणयमाल[1] माता[2] मुह[3] तणी, सो[4] मो[5] पेखि[6] कामरस घणी[7] ।

आंचल[8] गहिउ छाडि[9] तहि काणि, कारणु कहहु कवण मुहि जाणी[10]।२४१।

तं[1] मुणियर जंपइ तंखीणी[2], कहहु बात तुह जम्मह[3] तणी ।

सोरठ देस वारमइ[4] ठाउ, तिहि पुरि निमसै जादमराउ ॥२४२॥

ताकी[1] घरणि[2] आहि[3] रुकिमिणी, जह[4] कीरती महमंडल घणी ।

तिहि[5] सम तिरी[6] न पूजइ कोइ, कंद्रप जणणि तिहारी[7] होइ ॥२४३॥

---

(२३९) १. मयण सुन्दर (ग) २. न सुहयउ (ख) हणिउ (क) तिसु हूया (ग) ३. अंचलि (क ग) ४. कहि (ग) ५. उत्तर (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं है

(२४०) १. जे (क) जुगती (ग) २. जैन धर्म हुइ निश्चय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३ मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग) ४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हम (ग) ६. देखि (क ग) ७. नरि हणी (क ग) हणी (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुणीवर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तव (ग) २. तंखिणि (ख) ३. जनमह (क) जन्मंतर (ख) जनम्ह (ग) ४. द्वारिका (क) द्वारवै (ग) ५. स्वामी (क) निवसइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) तिनु की (ग) २. घरणी (क) ३. अच्छइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहसरि (ग) ६. भोगवइ (क) तिरिय न (ख) तिया न (ग) ७. तुम्हारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेत[1] हौ तू हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि[2] गयो।
जमसंवर तोहि[3] पालिउ आणि, सो परदवन आप[4] तू जाणि ॥२४४॥
कणयमाल तुव[1], अंचल गहिउ, पूव जन्म तो[2] सनमंध[3] भयउ।
जइ वह[4] तोसिहु पेम[5]रस भीनि, छलु करि लीजहि[6] विद्या तीनि ॥२४५॥
निसुणि[1] वयण सो वाहुडि[2] जाइ, कनकमाल पह वइठउ जाइ[3]।
विद्या तीनि मोहि जउ[4] देहि, जुगतो[5] पेसणु[6] करिहो[7] तोहि[8] ॥२४६॥
रस[1] की बात कुवर पह सुणी, पैम[2] लुवधि अकुलाणी घणी।
जमसंवर की करीय न काणि, तीनिउ[3] विद्या आफी[4] आणि॥२४७॥
पूरव[1] दाउ कुम्वर[2] मन रल्यउ, फुणि[3] विद्या लइ[4] वाहुरि[5] चलिउ[6]।
हम्वु[7] तुम्हि[8] पूतु जणणी[9] तू[10] मोहि, जगतउ[11] होइ[12] सु[13] पेसणु देहि ॥२४८॥

---

(२४४) १. तिह थो हडिलियो (क) तउ तूं हडिलिउ (ख) तुम्हि हडि ले गया (ग) २. उट्ठियउ (क) उठि गयउ (ख) उट्ठि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपूरव (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) मेहि (ग) ३. संनबध (ग) ४. जो वहु होइ (क) जइ हउ हतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरम (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. वहुडिउ (ख) ३. आइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५ जुगत (क,ख) जुगति (ग) ६. पलउ (क) विसतुह (ग) ७, करिहु (क) होइ (ख) हउ करिस्यो (ग) ८. देहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुवध (क) प्रेम लुब्ध (ग) ३. तोनइ (क) तीन्हों (ग) ४ सउपी (ग)

(२४८) १. परियउ (क) कडिउ (ख) पुरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. छिण (क) ले (ग) ४. सो (ग) ५. वाहुडि (क ख ग) ६. चल्यो (क) भलिउ (ख) ७. हम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हुई (ग) ११. पुगत (क) जुगति (ग) १२. पसाउ (क) १३. करिउ वयो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणयमाल तव धसक्यो[1] हीयउ[2], मोसिहु[3] कूडकूडीया[4] कीयउ ।
इकु[5] तउ लाज भइ[6] मत[7] टल्यउ, अवरू[8] हाथि लइ विद्या चलिउ ॥२४९॥

कणयमाल तउ[1] विसमउ धरइ[2], सिर कूटइ[3] कुकुवारउ[4] करइ ।
उर थणहर मह[5] फारह[6] सोइ, केस छोडी[7] विहलंघन[8] होइ ॥२५०॥

इक रोवइ अरु करह पुकार, कालसंवर रा जाणी[1] सार ।
कुमर पांचसै[2] पहुते जाइ, कनकमाल पह वइठे आइ ॥२५१॥

कालसंवर सउ[1] कहउ सभाउ, इहि दिषि[2] पालक[3] कीयउ[4] उपाउ ।
धरम पूत करि थापिउ[5] सोइ, अव सो मोकहु गयो[6] विगोइ ॥२५२॥

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

निसुणि[1] वयण नरवइ परजलीउ, जाणौ[2] घीउ[3] अधिकु हुतासणु[4] परिउ[5] ।
कुवर पाचसह लिये हकारि, पवण[6] वेगि इहि[7] आवहु मारि ॥२५३॥

---

(२४९) १. धसकीया (ग) धसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क) मुहि सिहु (ख) मोस्यों (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अव मोहि (क) इकु तहु (ख) इकुतो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टालिउ (ख) मनु टलिउ (ग) ८. ले विद्या हाथह ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३ पीटइ (ग) ४. कुकवार (क) कुकु भारउ (ख) अरु पूकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नह (ख) करि (ग) ६. फाडइ (क ख) पोटइ (ग) ७. खोलि (ख ग) ८ विहलघल (क ख) विहलंघलि (ग)

(२५१) १. जाणइ सार (क) राजा पासि जणावइ सार (ग) २. पंचसइ (क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्यो (क) सिउ (ख) तव कहा धाइ (ग) २. दिषु (ग) ३. बालक (क ग) पालागी (ख) ४. किउ एहु उपाव (क) कीयउ उपगार (ख) कीया उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापी (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुणे (ग) २ जाणु (ख) ३. घृत (क) घिरत (ग) ४. वसंतर (क) हुयासए (ख) वैसंदर (ग) ५ भलिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६ वांरहु वेगिह सु ७. सुम (क)

तव कुवर मन पूरउ दाउ, इहिकहु भयउ विरुद्धउ राउ।
मिलि सव कुवर एकठा भए, मयण वुलाइ कुवर वण गए ॥२५४॥

तवइ अलोकणि विद्या कह्यउ मयण अचंकित काहे भयउ।
एह वात हो कहौ सभाइ, ए सव मारण पठए राय ॥२५५॥

तव रिसाणौ साहस धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर।
चारि सौ नानाणी आकउ भरइ, वाधि घालि सिला सिर धरइ २५६

एकु कुम्वर राखिउ कमार, राजा जाइ जणाइ सार।
तुहि जउ राय भरोसउ आहि, दगु परिगह आणइ पलणाइ ॥२५७॥

जमसंवर रा वइठउ जहा, भागिउ कुवरु पुकारिउ तहा।
सयल कुम्वर वापी मह घालि, उपर दीनी वज्र सिल टाल ॥२५८॥

---

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरइ (ग) ३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयण अव पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख) ५. सहि (ग) ६. वुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. आलोकणि (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग) ३. मयणि काइते ढीलउ कहइ (क) संभलु मयणु कुवरु मंति कहइ (ग) निर्चितउ (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुझ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख) रीसाणा (ग) ३. सहस सधीरु (ग) ४. चारिसइ निनाण्णे (क) चारि निनाणे (ख) चउसइ नंन्याणु (ग) ५. आगइ घरइ (क) आंको भरा (ख) अंकौ भरउ (ग) ६. वापि (ग) ७ सुहढ (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उवारि (ग) २. राजहि (क ख ग) ३. जणावहि (ख) ४. तुहि सइ (ख) जे तुझु (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परियण (क) ७. सव खेहु (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहूंता (ग) ४. महि (क ग) मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. वीधी (क) ७. शिला अडाल (क) शिला टाल (ख) हताल (ग)

जमसंवर और प्रद्यम्न के मध्य युद्ध

निसुणि वयण मन कोपिउ[1] राउ, आजु मयण भानो[2] भरिवाउ[3] ।
रहिवर[4] साजे गैवर गुडे[5], तुरिय[6] पलाणे पाखर परे[7] ॥२५९॥
धनुक[1] पाइक अरु छुरीकार[2], अतिवल[3] चलत न लागी[4] वार ।
आवत देखि[5] मयण[6] कहु[7] करै[8], सैनाकरि[9] सयन रची धरै ॥२६०॥
जाइ पहुतउ[1] दल अतिवंत[2], तहा[3] हाकि भीडइ मयमंत ।
रावत[4] स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक[5] स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥
जमसंवर कहु[1] आइ[2] हारि, चउरंगु दलु[3] घालिउ[4] मारि ।
विजाहरु रा[5] विलखउ[6] भयो, रहवरु[7] मोडि नयर मह गयउ ॥२६२॥

---

(२५९) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भरिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६. तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. धाणुक (क ख) धानुप (ग) २. कराहि (ग) ३. अविचल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हथियार सूभट ले जाहि (ग) ५. मदनु (ख) ६. कहा (ख) के (क) ७. निहरतधो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि सामहउ संचरइ (क) सयना कहव सयनु रचि धरहु (ख) माया रुप सयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहुता (क) पहूते (ख) २. बलवंत (क) मिलि घायो दलु जवहि अनन्तु (ग प्रति) ३. वेगइ धाइ (क) तहं तहं हांकि भिडे मयमंत (ख) तह रथ हकि भिड्या मयमंतु ४. रहवर तिहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. टूटइ खडग पडइ मुंड ताम (क) टूटहि तुंड मुंड धर जाम (ख) टूटहि तुंड मुंड पड़ ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. दलु (ख) ४. घल्लिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तउ (ग) ६. विलखा (ग) ७. रहवर हुवर मा दलु मारिया (ग)

तव[1] कुवर[2] मन पूरउ[3] दाउ, इहिकहु[4] भयउ विरुद्धउ राउ।
मिलि सव[5] कुवर एकठा भए, मयरण वुलाइ[6] कुवर[7] वण गए ॥२५४॥
तवइ अलोकरिण[1] विद्या कह्यउ[2] मयरण[3] अचंकित[4] काहे भयउ।
एह बात हो कहौ सभाइ,[5] ए सव[6] मारण पठए[7] राय ॥२५५॥
तव[1] रिसाणौ[2] साहस[3] धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर।
चारि सौ[4] नानाणौ आकउ भरइ,[5] बांधि घालि[6] सिला[7] सिर धरइ[8] २५६
एकु कुम्वर राखिउ[1] कमार, राजा[2] जाइ जगाइ[3] सार।
तुहि जउ[4] राय भरोसउ आहि, दणु[5] परिगह[6] आणइ[7] पलणाइ[8] ॥२५७॥
जमसंवर रा वइठउ[1] जहा, भागिउ कुवरु[2] पुकारिउ[3] तहा।
सयल कुम्वर वापी महं[4] घालि,[5] उपर दीनी[6] वज्र सिल[7] टाल ॥२५८॥

---

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरइ (ग) ३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयरण अब पूजइ वाउ (क) मारहि मयरण (ख) ५. सहि (ग) ६. वुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. आलोकरिण (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग) ३. मयरिण काइते ढीलउ कहइ (क) संभलु मयणु कुवरु मंति कहइ (ग) निचितउ (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. तुझ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख) रीसाणा (ग) ३. सहस सधीरु (ग) ४. चारिसइ निनाण्णे (क) चारि निनाणे (ख) चउसइ नंन्याणु (ग) ५. आगइ घरइ (क) आंको भरा (ख) अंको भरउ (ग) ६. वापि (ग) ७ सुहढ (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन लिया उवारि (ग) २. राजहि (क ख ग) ३. जणावहि (ख) ४. तुहि सइ (ख) जे तुझु (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परियरण (क) ७. सब खेहु (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पहूंता (ग) ४. महि (क ग) मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. वीधी (क) ७. शिला अडाल (क) शिला टाल (ख) हताल (ग)

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

निसुणि वयण मन कोपिउ[1] राउ, आजु मयण भानो[2] भरिवाउ[3]।
रहिवर[4] साजे गैवर गुडे[5], तुरिय[6] पलाणे पाखर परे[7] ॥२५९॥
धनुक[1] पाइक अरु छुरीकार[2], अतिवल[3] चलत न लागी वार[4]।
आवत देखि[5] मयण[6] कहु[7] करै[8], सैनाकरि[9] सयन रची धरै ॥२६०॥
जाइ पहुतउ[1] दल अतिवंत[2], तहा[3] हाकि भीडइ मयमंत।
रावत[4] स्यौ रावत रण भिरइ, पाइक[5] स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥
जमसंवर कहु[1] आइ[2] हारि, चउरंगु[3] दलु घालिउ[4] मारि।
विजाहरु रा[5] विलखउ[6] भयो, रहवरु[7] मोडि नयर महु गयउ ॥२६२॥

---

(२५९) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भडिवाउ (ख ग) ४. रहहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६. तुरी (क ग) ७. पडहि (क ग)

(२६०) १. धाणुक (क ख) धानुप (ग) २. कराहि (ग) ३. अविचल (क) ४. लाइ वार (क) सभि हथियार सूभट ले जाहि (ग) ५. मदनु (ख) ६. कया (ख) के (क) ७. निहरत्थो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. सेना रचि साम्हउ संचरइ (क) सयना कहव सयनु रचि धरहु (ख) माया रुप सयनु रचि ताम (ग)

(२६१) १. पहूता (क) पहूते (ख) २. वलवंत (क) मिलि आयो दलु जवहि अनन्तु (ग प्रति) ३. वेगइ आइ (क) तहं तहं गांकि भिडे मयमंत (ख) तव रथु हकि भिड्या मयमंतु ४. रहवर सिंहु रहवर (ख ग) रहवर सो रहवर (क) ५. दूटइ खडग पडइभुंड ताम (क) दूटहि तुंड मुंड वर जाम (ख) दूटहि रुंड मुंड वह ताम (ग)

(२६२) १. को (क) २. आवइ (क) ३. वलु (ख) ४. चल्लिउ (ख) घाल्या सहि (ग) ५. राउ (क) तव (ग) ६. विलखा (ग) ७. मयण कुवर सहु दलु मारिया (ग)

पुणि[1] णिय मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव[2] कहइ निरुत ।
कनकमाल हउ आयउ[3] तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥

निसुणि वयण अकुलानी वाल[1], जाणि सुहइ[2] वज्र की ताल ।
जिहिलगी सामी[3] एतउ[4] भयउ, मो[5] पह छीनी कुवर ले गयउ ॥२६४॥

वस्तुवंध—एह[1] नरवइ सुणिउ जव वयणु ।
विजाहर कारण[2] करइ, तिय[3] चरितु सुणि हियउ कंपिउ ।
उरुषु[4] रुहडे फाडियउ मोहि सरिसु इणि अलिउ[5] जंपिउ ॥
पेम लुवधै[6] कारणै आपी विद्या तीनि ।
अव मोस्यो परपंचु[7] करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

---

(२६३) १. विणि (क) फुणि २. तह (क) ३. आपी आखउ (ख)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवरु तव विलखा भया, दलु छोड्या घर कहु उहि गया ।

जहति जातह वोलै एहु, तीन्यो विद्या वेगी देहु ॥२५२॥

(२६४) १. नारि (ग) २. सिरि वजी पचताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी (ग) ४. एहवा (ग) ५. मुझ (क) मोहि विगोइ छीनी ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. करूणा (ग) करणु (ख) ३. भिया (क) तिया (ग) ४. एस रुप मइ समझियउ (क) कंपइ उसुदा थर हरइ (ख) उरूवुरू होइ पूरहस्यो (ग) ५. आलु (क) आल (ग) ६. लुवधि (क ख) ७. परपंचु (क ख) ग प्रति—

वहु झूरइ तह राउ मनि, देख चरितु इहु तेणि ।
प्रेम लुवध कइ कारणिहि, सउपी विद्या एणि ॥

चौपई

देखि चरित जव[1] बोलइ[2] राउ, अव[3] मो भयउ मरण का ठाउ।
तिरियहं[4] तणउ जु पतिगउ[5] करइ, सो माणस[6] अणखुटइ[7] मरइ ॥
तिरिय[8] चरितु निसणउ[9] भरिभाउ[10], विलख वदन भउ[11] खगवइराउ[12]।२६६

ध्रुवक छन्द

स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ[1], निउ पिउ[2] छोडइ[3] अवरु भोगवइ।
तिरियहि[4] साहस दूणो[5] होइ, तिरिय चरित जिण[6] फुलइ[7] कोइ ॥२६७॥

चौपई

नीची[1] बुधि तिम्वइ[2] मनि[3] रहइ, उतिमु छोडि नीच संगइ[4]।
पयडी नीच[5] देइ[6] सो पाउ, एसो तिवइ[7] तणउ सहाउ ॥२६८॥

---

(२६६) १. पुणि (क ख) तव (ग) २. सोभइ (क) २. इव मोहि जुगतउ मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) तिया (ग) ५. पतिगरु (ख) पतिगह (क) भरोसा (ग) ६. मूरिख (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखूंटी (क ख) ८. त्रिय (क) तिरिय (ख) तिया (व) मूल पाठ तिनिय ९. सुणहु (ग) १०. धरिभाउ (ग) ११. थयउ (क) तह (ग) १२. तव राउ (क) बोलइ राउ (ग)

(२६७) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ख) याहगु (ग) मूल पाठ केवल पिउ है। ३. छोडि (क ख ग) ४. पौरिष (क) ५. दूणउ (ख) दुवणउ (क) ६. नवि (क) मतु (ग) ७. भूलइ (क) भूलउ (ख ग)

(२६८) १. नीच (ख) २. तियइ (क) तो (ख) तियह (ग) ३. मनि रहे (क) मनु हरइ (ख) मनु धरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. संग्रहइ (क ख) भोगवहि (ग) ५. नीची (क ख ग) ६. दे सो पाव (क) देइ सो पाउ (ख) दह सिर पाउ (ग) ७. त्रियह (क) ती मइ (ख) ती वइ (ग)

उजैणि[1] नयरि[2] सो वूचइ[3] ठाउ, पुव्वह[4] हुतो विवयह राउ ।
तिरिय विसास[5] करइ[6] जो घणउ, जिहि[7] जीउ सोप्यो राजा तणउ।२६९।
दुइजे राउ[1] जसोधर भयउ, अमइ[2] महादे[3] सोखइ लयउ ।
विस लाडू दइ मारचो[4] राउ, फुणि कुवडउ[5] रम्यो[6] करि[7] भाउ ।२७०।
फुणि तीजे[1] णिसुणह धरि भाउ, अथि[2] नयरु पाटण[3] पयठाणु ।
हया[5] सेठि निमसइ[6] तिहि काल, तीनि नारि ताकी[7] सुहिनाल ।२७१।
सोतउ[1] सेठि वणिज[2] उठि गयउ, जीभ[3] लुवधि तिहि काहउ कीयउ ।
छाडी[4] हया[5] सेठी की[6] काणि[7], धूतु एकु सिर[8] थापिउ आणि ।।२७२।।
अदिणि[1] छोडि[2] नाहु[3] सुपियारु, धूतु आणि ता[4] कीयउ भतारु[5] ।
तिहि[6] साहस कउ[7] अंत न लहउ, तिहि[8] चरितु हउ केतउ[9] कहउ ।२७३।

---

(२६९) १. जज्जैणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो ट्ठाउ (क) ऊचइ (ख) उत्तिम (ग) ४. पुव्प हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वहुं हुंतु वियर कछुराउ (ख) तिस पुर भंचउ विक्रमराउ (ग) ५. विशास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह घणा (ग) ७. त्रिय (क) आपणउ (क) (तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है)

ते हिंति जिउ प्राण राजा तणउ (ख) राजइ सउप्पा जीव आपणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो टलिउ (क) अमय महादे सो घर गयउ (ख) अव्रत-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख) मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउइ (ग) ७. घरि (ख ग)

(२७१) १. तेउ (क) तीय (ख) विज्जाहरु तव वोलइ राउ (ग) २. अत्यि (क ग) ३. पहणपुर (ग) ४. ट्ठाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. धणवइ (क) हाया (ख) हुवा (ग) ६. वसइ (क) ७. तिहके (क)। तिस की (ग)

(२७२) १. सोवतउ (क) सो तहि (ख ग) २. वणजहि (ग) ३. प्रेम लुब्रध तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडी (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) तणी (ग) ६. सव (ग) ७. वाणि (क) ८. धरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. परियणउ (क) रणिउं (ख) २. छांडि (ख) ३. नारि (क) ४. तिह (क) तिन (ख) ५. भतारु (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है। ६. इह (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहइ (ग) ८. त्रिय (क) त्रिया (ख) तिया (ग) ९. कितना ले (ग) केता कहोइ (ग)

अभया राणी कीए विनाण[1], सुहदंसण[2] लगि गये परान।
जिहि[3] लगि जुझ महाहो भयो, लइ[4] तप चरणु सुदंसणु गयउ २७४

रावण राम जु[1] वाढी[2] राडि, विग्रहु[3] भयउ सुपनखा लागि।
सीया[4] हडह[5] लंका परजलइ[6], सब परियण[7] रावण संघरइ[8] ॥२७५॥

कौरों[1] पांडो[2] भारथ[3] भयउ[4], तिहि[5] कुरुखेत महाहउ ठयउ[6]।
अठार[7] खोहणी दल संधारि, द्वै[8] इ दल वोलइ दोवइ[9] नारि ॥२७६॥

कालसंवरू तउ कहइ[1] वहोडी, कनकमाल[2] तो[3] नाही खोडी।
पूरव रचित न मेटण कवणु[4], ए वीद्या लेहै परदवणु ॥२७७॥

असुह कम्मु[1] नहु[2] मेटइ कोइ, सुरजनुहु[3] तउ सुवरीयउ होइ।
दोस न कनक[4] तुहि तणउ, इह लहणौ[5] लाभइ आपणउ[6] ॥२७८॥

---

(२७४) १. विवाण (ख) २. सुदंसण (क) सुभदंसण (ग) ३. तिहि स्यों मास झूझ इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. वाधी (क) बंधी (ग) ३. विघन सुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखी लाहि (ख) विग्रह चल्या सुपन भय ताडि (ग) ४. सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडणु (ख) हडी (ग) ६. परजलणु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रचउ परियर (ग) मूल पाठ स्यो पहयाल ८. संघरण (क) संघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कइरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. सयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अट्ठारह (क ग) अठारह (ख) ८. दुइ (क ख ग) ९. द्रोपदी (क ग)

(२७७) १. वोला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३. तह लागी (क) न तुमय खोडि (ग) ४. कोइ (ख) तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है।

(२७८) १. कर्म्म (क) २. नवि (क) ३. सज्जन ते सुख वैरी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है। ३. कनकमाल (क ग) ५. लिखियउ (क) लहणा (ग)

गाथा

दग्घंति[1] गुणा विचलंति वल्लहा[2], सज्जनाहि[3] विहडंति[4]।
विवसाय[5] णथि सिद्धी पुरिसस्स परंमुहादिम्वहा ॥

चौपई

छुटउ कमणु[1] काल की वहिण, फुणि ते वहुडी करी सामहण[2]।
चउरंगु वलु सवु समहाइ, करउ[3] अभेडउ दुइजो जाइ ॥२७६॥

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

बहुत[1] रोस मन नरवइ भयउ, चाउ[2] चढाइ हाथ करि[3] लयउ।
लयउ[4] धनषु[5] टंकारिउ[6] जाम, गिरि पवय[7] जाणौ डोले तास ।२८०।
दोउ[1] वीर आइ रण भिडे, देखइ अमर विवाणहि चढे।
वरसहि वाण सरे असराल, जाणौ घण गाजइ[2] मेघ अकाल ।२८१।

गाथा

१. न संति (ख) निसंति (ग) २. विद्या (ग) ३. सजणाइ (क) सज्जनाय (ख) सयण सज्जन (ग) ४. विचलंति (ग) ५. सजन पासु दुयणु भया, जे मथिहु कम्म चलंति (ग)

(२७६) १. कवण (क ख) २. संमहण (क) समहाण (ख) ३. करइ जुध तव वाहुडि आवि (क)

ग—काल संवरू मनि भया उदासु, छोड्या कणयमाल का पासु।
दल चउरंगु सहु लीया वुलाइ, करइ भूझु वाहुडि सो जाइ ॥

(२८०) १. दोसु (ख) २. चक्र (क) वाणु (ग) ३. तिहि लीया (ख) ले (ग) ५. धुणहु (ग) ६. टंकारा (ग) ७. पवास भइ कंपइ ताम (ग)

क—धनुष टंकार करइ ते जाम, तव गिर परवत ढालइ ताम

(२८१) १. दोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रति में दो चरण निम्न रूप में अधिक हैं—

दोऊ वीर खेर सपराण, दूणे दूणे करि संधाण

तव परदमण[1] रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ[2] ताम ।

सो दलु नागपासि दिठु[3] गह्यउ, राउ अकेलउ ठाढउ वह्यउ[4] ॥२८२॥

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सबु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहउ सुभाय, तउ नानारिष गयउ तिह ठाइ ।२८३।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

भणइ[1] मयणु रहायो मयणु, वापहि पूतहि गाउ[2] कमणु ।

जिहि प्रतिपालिउ कियउ तु[3] राउ, तिहि[4]कउ किमि[5] भानइभरिभाउ २८४

नारद बात कहै समुझाइ, दू[1] दल विगाहि[2] धरइ[3] रहाइ ।

कालसंवर तो[4] हो इन जूत[5], यह परदवण नरायण[6] पूत ॥२८५॥

निसुणि वयण[1] मन उपनौ भाउ, भरि आयौ[2] सिर उमइ[3] राउ ।

इतडो[4] परि पछितावो भयउ, चउरंग दलु संघरि[5] लयउ ॥२८६॥

---

(२८२) १. सो (ग) २. छोडइ तित्तु ठाम (ग) ३. दुइ (क) ४. रहो (क) रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सवु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिख गयउ तिह ठाइ ॥२९२॥

ग प्रति—

भणइ मयणु हौ इसउ कराउ, इव भागउ इसका भडिवाउ ।

नानारिषि आया तिह ट्ठाइ, कही बात चलि जांवइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिषि जाइ रहायउ मयण (क ख) वोलइ रिषि तू सुण परदवणु (ग) २. विग्रह (क ख ग) ३. अंतराव (क) तू तहू राउ (ग) ४. तिनकउ (क) तिस का (ग) ५. सिवु (क) किउ (ग)

(२८५) १. दुइ (क,ख) दुहु (ग) २. विघ्न (क) विग्रहउ (ग) विगाहु (ख) ३. हरइ घराइ (क) घराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहि (ख) तुम्ह (ग) ५. निरुत (क) जुत्त (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. आवइ (क) आकउ (ख) ग्रहि अंकि (ग) ३. दुमइ (क) चूबइ (ख) चूवौ (ग) ४. लडियउ (क) तानि व माणि (ख) इतना (ग) ५. गयउ (क, ख) सह संघारिया (ग)

तव[1] मयरण मन छोडो कोह, मोहणी जाइ उतारचो मोह ।
नागपासि जव[2] घाली छोरी, चउरंग वल उठो[3] वहोरी ॥२८७॥
उठी[1] सैन[2] मन हरिष्यो राउ, वहुत मयरण को कीयो पसाउ ।
नानारिषि वोलइ तखिरणी, घर अवेसि[3] तिहारी[4] धरणी[5] ॥२८८॥
वयरण हमारे जउ मन[1] धरहु, घर[2] वेगे सामहणी करहु ।
पवरण वेगि तुम द्वारिका[3] जाहु, आज तिहारौ आहि विवाहु ।२८९।
नारद बात कही तुम भली, मुही केवली[1] कही सो मिली ।
विहसि वात वोलइ[2] परदवरणु, हम कहु वेगि पराइ[3] कम्वरणु ।२९०।

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

नारद[1] खरण[2] विमारण रचि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।
वहुडि[3] विम्वारणु धरइ[4] मुनि जोडि, खरण[5] मलयद्धउ[6] धारइ[7] तोडि॥ २९१॥
विलख वदन भो[1] नारद जाम, करइ उपाउ मयरणु[2] हसि ताम ।
मरिण मारिणक[3] मय उदउ[4] करंतु, रचि विमारण खरण[5] धरइ तुरंतु ।२९२।

---

(२८७) १. तवही (क ख ग) २. तव (क) बन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठी (क) उट्ठि (ख ग) २. सेन (क) सयरण (ख) मयनु (ग) ३. आरति (क) अवसेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारी (ख) अथि तुम्ह (ग ५. तरणी (ग)

(२८९) १. चित्ति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु वेगि पयारणा करहु (ख) घर की वेगि साखती करहु (ग) ३. घर कहू जाहू (ग)

(२९०) १. मुरिणवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिषि (ग) २. रिषि (क) ३. करइ (क) रिषि धरइ सु जोडि (ग) ४. करि (ग) ५. क्षरण (ग) ६, मयरद्धउ (क ख) ६. मइराधा (ग) ७. घालइ (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. मइरधउ (क) मयरण खिरिण ३. मइरधउ (क) ४. वहु (ख) का (ग) ५. वरण (ख) खिरिण (ग)

विद्यावल तह[1] रच्योउ[2], विमाणु, जहि उदोत[3] लोपि[4] ससि भाणु ।
धुजा घंट घाघरि[5] सजूतु, फुणि तिह[6] चढयो नारायण पूत । २६३

जमसंवरु रामहिउ[1] जाइ, वहुत भगति करि लागइ पाइ ।
कुमरहि सरिसु खिरा[2] तवु करइ, कंचणमाल समदि[3] घर चलइ।२६४।

कुवरु मयण अरु नारदु पास, चढि विमाण उपए[1] आकास[2] ।
गिरि पव्वय[3] वहु लंघे मयण, बहुत ठाइ वंदे जिणभवण ।२६५।

फुणि वण[1] माझ पहुते जाइ, उदिधिमाल दीठी ता ठाइ ।
बहुत वरात[3] कुवर[4] स्यो मिलि, भानु[5] विवाहण[6] द्वारिका चली ।२६६।

नारद[1] वात मयणस्यो कहौ[2], यह पहले तुम ही कहु वरी ।
तुम हडि धूमकेत ले जाइ, तउ[3] अब भानहि दीनी आइ ॥२६७॥

मुनि जंपइ मुहि[1] नाही खोडी, आहि[2] सकति तउ लेहि[3] अजोडि[4] ।
रिषि कौ वयण कुमरु मरण धरइ, आपण भेस भील[5] कहु करइ ।२६८।

---

(२६३) १. तिनि (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. चलिउ (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिहु (ग) करहि (ख) ५. वधारि (क) वावती (ख) क—कराय विमाणु सुहिर रसजूत (ग) ६. चलि चढयो (ग)

(२६४) १. राजा समिझाइ (क) राजा समदि धरि जाइ (ख) आय। तितु ठाइ (ग) २. छमावणि करइ (क) खिउ तव करउ (ख) सवहि कुवर सों विनति करइ (ग) ३. नाता जाइ धरि (क) चलण सिरि धरइ (ग)

(२६५) १. अगासि (क) २. उपमे (क) उप्पवे (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२६६) १. वण माहि (क ख ग) २. उदधिमाला रही तितु ठाइ (ग) ३. वात (क) वगत (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कुमर कहु (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहण (क ख ग) मूल प्रति वरण के स्थान-पर मरण

(२६७) १. ऋषि (ग) २. उच्चरी (ग) ३. तौ यह नारि भानु कहु ठया (ग)

(२६८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आत्थि (ग) करि अजोडि (ग) ४. वहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग—नारद वचनहि अइसा भया, आपण भेस भील ठया (ग)

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

धणही[1] कांड[2] विसाले हाथ, उतिरि[3] मिल्यउ तिनि[4] के साथ ।
पवरण वेग सो आगय गयउ, देइ[5] आखर परिण[6] उभउ भयउ ।२६६।

हउ वटवाल नारायरण तरणउ, देइ दारण मुहि लागइ घरणउ ।
चढ़ी वस्तु[1] आपु मुहि जोगु[2], जइसे[3] जारण देइ सवु लोगु ।।३००।।

महलउ[1] भरणइ निसुरिण[2] मह[3] वयरणु, वडी वस्त तू मागइ कमूरणु ।
अर्थ[4] दर्वु[5] सोनो तू[6] लेहि[7], हम कहु जारण अगहुडउ[8] देइ ।।३०१।।

भीलु[1] रिसाइ देइ तव जारण[2], आइसी[3] परि किम्व लाभइ जारण ।
भली[4] वस्त जो तुम पह आइ[5], मो मुहि आफि अगहुंडे[6] जाहि ।३०२।

तउ महलउ जंपइ मुहि चाहि[1], एक कुम्वरि मोपह[2] इह आहि ।
हरिनंदरण कहु पररणी जोइ[3], अरे सम्वर[4] किम मांगइ सोइ ।३०३।

---

(२९९) १. घुरणही (क) धणुही (ख) धनुष (ग) २. संजि करि सर ले हाथि (क) वाण विसाले हाथि (ख) कटारी विसाहल हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुरिण उठि मिल्या (ग) ५. ले आखत (क) दइ आखत (ख) देइ अदिठु तब ऊभा भया (ग) ६. तव (क) फुरिण (ख)

(३००) १. वस्त (क) दारण (ख) वस्तु (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुरणहि (क) ३. मो (क) ४. अरथ (क) अरथु (ख ग) ५. दरवु (ख ग) देखि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगुहडँ (ख) वेगि जारण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आरण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. वडी (ग) ५. आहि (क ख) अइहे (ग) ६. लागहु (क) अवउडउ (ख) सोह हम देहु भिलु इम कहै (ग)

(३०३) १. वाहि (ख) २. जो मो पहि (क) इह मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सवर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

भणइ[1] वीर[2] यह आफहि[3] मोहि, जइ सइ[4] वाट जाण द्यो[5] तोहि ।
महलहु कोपि पयंपइ[6] ताहि, अरे भिलु तोहि[7] जुगत न आहि ।३०४।
निसुणइ[1] महल[2] कहइ विचारु, हउ नारायण तणउ कुमार ।
इहखोल[3] जिन करहु संदेहु, उदधिमाल तुमि[4] मो कहु देहु ।।३०५।।
महलउ बोलइ रे अचगले[1], झूठउ[2] बहुत कहइ अतिगले[3] ।
तीनि खंड जो पुहमि नरेसु, तिहि के पूतहि[4] आइसु[5] वेसु ।।३०६।।
वाट छोडि तउ ऊवट[1] चले[2], उहि[3] पह भील कोडी दुइ[4] मिले ।
भणइ सधारु[5] नहि मुहि[6] खोडि, वलु करि कन्या लइय अहोडी[7] ।३०७।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को वल पूर्वक छीन लेना

छीनि कुम्वरि तहि[1] लइ पराण, फुणि सो वाहुडि चल्यउ[2] विम्वाण।
भीलु देखि सो मनु अहि डरइ, करण[3] कलापु कुवरि सो करइ ।३०८।

---

(३०४) १. मुहि (क) इह (ख) यहु (ग) २. भिल्लु (ग) ३. सउपहि मेहि (ग) ४. जेसे (क) ५. दो (क) दिउ (ख) नातरु जाणक देऊ तोहि (ग) ६. भणइ (क) चंपइ (ख ग) ७. तुहि जुगती न आहि (क ख)

ग प्रति में—हरि नंदन कहु परणी जोइ, अरे भिल्लु किउ मागहि सोइ ।

(३०५) १. सुणि (ग) २. महिले (क) माहतो (ख) महिला (ग) ३. एणि वयणि (क) दूसरु बात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) तुहि मुहि कहु देहु (ख) हम कहु देउ (ग)

(३०६) १. अवगले (क) महिला कोपि सु तव परजली (ग) २. जुट्ठि (क) ३. आगले (क ख) झूठा वचन कहवहि हो भिली (ग) ४. पुत्र (क) पूत कि (ख) पूतुन (ग) ५. कवणु इह वेसि (क) अइसउ भेसु (ख) अइसा वेसु (ग)

(३०७) १. उवरे २. (ग) चलइ (क) चले (ख) चलिउ मूलप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उठि (ख) तापहि (ग) ४. इक (क ग) ५. कुमर (क) सधारू (ख ग) मूल प्रति में 'सधरु' ६. हन (ग) ७. वहोडि (क ख) अजोडि (ग)

(३०८) १. पो निये पराणि (क) सोज कुवर तिन्हि लई पराण (ग) २. चले (क) चडिउ (ख ग) ३. मरण (ख) करुण (ग) मत ए रूप कुमर ए करिउ (ग)

पहली मयरा कुवर कहु[1] वरी,[2] दुजे[3] भानु विवाहरा चली ।
नारद निसुणी हमारी वात, अव[4] हौ परी भील के[5] हाथ ॥३०६॥

अव मोहि पंच परम गुरा सरणा, लिउ सन्यास[1] होइ किन मरणा ।
तउ नारद मन भयो[2] संदेहु, वुरो[3] वयरा इनि आखिहु एहु[4] ॥३१०॥

तउ[1] नारद जंपइ तंखिरणी, कंद्रप कला करइ आपरणी ।
लखरा वतीस करणयमय[2] अंगु, रूप आपरणौ भयो अरणंगु ॥३११॥

उदधिमाल सुंदरि[1] समझाइ, फुरिण विमारण सो चलिउ सभाइ ।
चलत विमारण न लागी वार, गये[2] वारम्वइ के पइसार ॥३१२॥

देखि नयरु वोलइ परदवणु, दिपइ पदारथ मोती रयणु ।
धनुक[1] कंचरण दीसइ भरी, नारद वसइ कवरण उह[2] पुरी ॥३१३॥

---

(३०६) १. कुवरी (क) २. वली (ग) ३. कजइ (क ग) दुइजइ (ख) अवहू (क) अवहुउ (ख) इही (ग) ५. कइ (ख ग)

(३१०) १. ले चारित किम हो सहि मरणु (क) ले मासा जसु होवइ मरण (ग) सील सथास लिउ हुइ किन मरण (ग) २. पडिउ (क ख) पड्यो (ग) ३. वीरउ (क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. करणचन (क) करणइमइ (ग)

(३१२) १. तव (ग) चले विमारिण वचन मनु लाइ (ग) २. गये नगर द्वारिका मझार (क) गए वारमइ कियइ सारू (ख) गया वरवइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन करण (क ख ग) २. ए (क) इह (ख) ग प्रति में यह पद्य नहीं है ।

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भणइ नारद निसुणि परदवण ।

[१]यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माझ सायरहं [२]णिच्चल ।

[३]जंमि भूमिय [४]अथि तुव, सुद्ध फटिक [५]मणि जणित उज्जल ॥

कुवा [६]वाडिउ च वणवर वहु [७]धवहर आवास ।

[८]पहुपयाल जिणवर भुवण [९]पउलि कोट चोपास ॥३१४॥

निसुणि [१]जंपइ मयणु वरवीरु, [२]मुझ वयणु नारद निसुणि ।

[३]फुडउ कहहि णहु गुझु रखहि, [४]देखि मयणु णिय चित्तु दइ ॥

जो जहि तणउ अवासु ॥३१५॥

चौपई

[१]माझ नयरि धवल हरु उत्तंगु, पंच वर्ण मणि [२]जडिउ सुचंगु ।

गरडू धुजा सोहइ [३]वह घणउ, [४]वह अवास सु नारायण तणउ ॥३१६॥

---

(३१४) १. एह वसइ (क) यह कहियइ (ख) यह ऊंची (ग) २. सचंगी (क) हनिहचल (ख) हवडुपरि (ग) ३. जम्म (क ख) जनम (ग) छइ तुमह (क) इह आथि तुव (ख ग) करइ राज इकु छत्ति सो हरि (ग प्रति में यह चरण पल्ले के स्थान पर है। ५. सो वन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. वाडी वयण वर (क) वाडिउ वयण पवर (ख) वापी वाग वण (ग) ७. भवल (क ख ग) ८. वहु पयार (क) ९. पोवलि कोर चोपास (क) मझु वयण नारद निसुणि भुवणि किवण्णइ तासु (ख) कंचन कलसिहिं दीपतिहि वसइ भूवण चउयास (ग)

(३१५) १. पयंपइ (ग) २. मोहि (ग) ३. कुंडउ मुझहि गुहय रखहि (क) कहहु साचा जिन गुज्झ राखहु (ग) ४. कवण गेहि मुह तणउ सयल चरित मोहि सयल अखहि (क) कवणु गेहु महु कहु तणउ सव्वु चवहि महु सरसु अक्खर (ख) कवणु गेह इहु किसण तणो । सयल भेदु हम वेगि आखहु (ग)

(३१६) १. मझि (क ग) मझु (ख) २. जडिय (क) जडिउ (ख) जडे (ग) मूलपाठ चडिउ ३. तव खिणउ (क) वहु खणा (ख) ४. एह (क) वहु (ग)

सिव[1] धुजा डोलइ[2] चोपास, वह[3] जाणइ बलिभद्र अवास ।
जहि[4] धुज[5] मेढे[6] दीसइ देव, वह[7] मंदिर जाणइ वसुदेव ॥३१७॥

जिहि धुजा विजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।
जहि कलियलु वह सूझइ[1] घणउ, वह अवासु सतिभामा तणउ[2] ।३१८।

कलकमाल जस[1] उदो करंत, जह वह धुजा दीसइ[2] फहरंत[3] ।
मणिगज[4] मणि सहि चउपास, वह तुहि[5] माता तणउ अवास ॥३१९॥

निसुणि वयण हरषिउ[1] परदवणु, तिहि[2] को चरितु न जाणै कवणु।
उतरि विमाणति उभउ भयउ, फुणि सो मयणु नयर मा[3] गयउ ।३२०।

प्रद्युम्न को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन[1] संजूत, भानकुवर[2] दीठउ आवंतु ।
तव विद्या पूछइ परदम्वनु, यह कलयलुसिह[3] आवइ कम्वनु[4] ।३२१।

---

(३१७) १. सिघ (क) २. लहकइ (क) डोलहि (ख) डोलै (ग) ३. ए आणइ (क) उ जाण इ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. धज्जु (क) धुजा (उ) ध्वजा (ग) ६. मीढा (क) मौढे (ख) मढ (ग) ७. उह (क ख ग) मूल प्रति में 'सिघ'

(३१८) १. सूझइ (क) सुणियै (ग) सूझइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजइ दइ (क) सुनि उदउ (ख) वहु उदौ (ग) २. दिपइ (क) ३. फरकंति (क) ४. मरकति मणि दीसइ तुह पासि (क) जाहि वहु धुजा दीसहि चउपासि (ख) मगंज मणि दीसहि जिसु पास (ग) ५. उह (क) तुहि (ख) तुहु (ग)

(३२०) १. बोल्या (ग) २. तिसु का (ग) ३. मांहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. सेन (क) सइन (ग) २. भानू कुवरू आवइ निरुत्तु (ग) ३. कलियल सु (क) कलियर स्यउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयण तुहि कहो विचारु, यह हरि नंदनु भानु कुमारु ।
इहि[1] लगि नयरी वहुत उछाहु, यह[2] जु कुवरु जइ[3] तणउ विवाहु ॥३२२॥

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

तहा[1] मयण मन[2] करइ उपाउ, अव[3] इहकउ[4] भानउ भरिवाउ ।
वूढ[5] वेस विप्र को करइ, चंचल तुरिय[6] मयायउ[7] करइ ॥३२३॥
चंचल तुरीयउ गहिरी[1] हिंस, चार्यो पाय[2] पखारे[3] दीस[4] ।
चारि[5] चारि आंगुल ताके[6] कान, राग वाग पहचाणइ[7] सान[8] ॥३२४॥
इक[1] सोवन वाखर[2] वाखर्यउ, पकरी[3] वाग आगैहुइ[4] चलिउ ।
भान कुवर देख्यो एकलउ, वाभण वूढउ घोरो[5] भलउ ॥३२५॥
घोरो[1] देखि भान मन रलउ, पूछइ[2] वात विप्र कहु चलिउ ।
फुणि तहि वाभणु[3] पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ[4] जैहहि[5] कहा ॥३२६॥

---

(३२२) १. एहि लगि (क) इह वर (ग) २. एह सु (क) इह सु (ख ग) ३. जिह (क) जहि (ख) जिस (ग)

(३२३) १. तवहि (क ग) २. वहु (ग) ३. इव (ख) ४. इसका (ग) इहि कर (ख) ५. वूढउ (क ख) वूढा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ख) ७. मायामई (ग) मायामउ (ख) मयण रचि धरई (ग)

(३२४) १. गुहीरी हासु (क) आगइ आरसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ख) पाव (ग) ३. परवालिय (क) परवाले (ख ग) ४. ए तासु (क ख) ५. चारइ (क) चारिसु (ख) ६. जिन्ह के (क) तिन्ह के (ख) जिसुके (ग) ७. पिछाणइ (क) यह ·ारइ (ख) ८. भानु (क ख)

(३२५) १. साखति सो वन अरु पाखरउ (क ग) २. पाखर पाखरियउ (क ख) ३. पकडि (क ख ग) ४. आघेरउ (क) आगइ (ख ग) ५. घोडउ (क ख) घोवडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखत जन मनु चलिउ (ग) २. पूछण (क ख ग) ३. चले चाल्यो किहा (ग) ४. जाइसि (क)

वाभणु[1] ठवहुक घोडौ हइ आपणउ, तजिउ[2] समुद[3] वालुका तणउ ।
निसुणिउ भान कुम्वर कौ नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ।३२७।

भान कुवर मन[1] उपनो भाउ, वहुतु[2] विप्र कहु कियउ पसाउ ।
निसुणि[3] विप्र हउ अखएहु[4], जो[5] मागइ सो तोकहु देउ ॥३२८॥

तवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर कै मनु[1] न सुहाइ[2] ।
विलखउ[3] भानकुवर मन भयउ[4], मान भंगु इहि मेरउ कियउ।३२९।

भणइ विप्रु[1] हौ आखउ[2] तोहि, इतनउ[3] जे न सकहि दइ मोहि ।
मइ तो कहुदीनउ[4] सतभाइ, परिहा[5] जउ देखाहि दौडाइ[6] ॥३३०॥

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

निसुणि वयणु कुवर मन रल्यउ, कोपारूढु[1] तुरगइ[2] चढिउ[3] ।
विषमु तुरंगु न[4] सकउ सहारि, घोड़े[5] घाल्यो भानु अखारि ॥३३१॥

---

(३२७) १. वंभण चिरत कहइ आपणउ (क) वाभणु गवडु कहइ आपणउ (ख) वंभण नाउ कहइ आपणा (ग) २. तेजी एह (क ग) ते जिउ (ख) ३. रण समंदह तणउ (क) समुदह तणा (ग)

(३२८) १. वहु (ग) २. वहु ति (क) वहुतु (ग) ३. निसुण (ख) ४. इसउ करेउ (ग) अखो तोहि (क) आखउ तोहि (ख) ५. सो आयो (क) तुझ जोगी (ग)

(३२९) १. मनह (ख) २. सनाहि (ग) ३. वदन (क) ४. तव (ग) को। (क)

(३३०) १. हहु (क) कहूउ (ग) २. आयौ (ग) ३. मांगिउ सके न दइसी कोइ (क) इतनउ जे न सकहि दइ मोहि (ख) मांग्या देइ न सकइ मोहि (ग) ४. वोलिउ सतिभाउ दीना रुपसाउ (ग) ५. परहुदाउ (क) जउ जे इस कहुं लइ दउडाइ (ग) ६. दउडाइ (ख) मूल प्रति—मागिउ जइ सकइ दै मोहि

(३३१) १. कोप रूपि सु (ग) २. तुरंगम (क) लइ चलिउ (ख) ४. नवि सहो (क) ५. भानकुमार घालिउ अडारि (क) घोडइ दीनउ भानु जु राडि (ख) घोडे राड्या भानुकुमार (ग)

पडिउ भानु ग्रहु[1] वडउ विजोगु, हांसी करइ सभा को लोगु ।
यह[2] नारायणुतनो कुमारु, या[3] समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥
भणइ विप्र तुम काहे रले[1], इहि तरूणे पह[2] वूढे भले ।
दूरह[3] ते करि आयउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥
हलहर भणइ[1] विप्र जिण डरहु[2], इन्ह[3] घोडे किन तुम ही चढउ'।
हौ वूढउ चाहौ[4] टेकणौ, दिखलाउ[5] पवरिष[6] आपणउ ॥३३४॥

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

जण दस वीस[1] कुवर पाठए, विप्रह तुरी[2] चढावण गए ।
तउ वाभण अति भारउ होइ, तिहिके[3] कहै न सटकइ सोइ ।३३५।
तुरीय चढावण आयो भाणु, उलगाणे[1] को नाही मानु ।
जण दस वीस कियउ भरिवाउ, चडिवि[2] भान गलि दीनउ पाउ३३६
चढइ विप्र असवारिउ करइ, अंतरिख भो[1] घोरो[2] फिरइ ।
दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उपइ[3] गयउ ॥३३७॥

---

(३३२) १. जब्र हुवो (क) तव भया (ग) २. ए (क) इहु (ख ग) ३. समान (क) इहि समु (ख) इसु सरि (ग)

(३३३) १. हंसे (ख) २. हम (क) ते हम (ग) ३. दूर थकी (क)

(३३४) १. कहइ (क) २. मत अडहु (ग) ३. रणि को (क ख) इसु घोडइ तुम वेगहु चढिउ (ग) ४. चाहउ विकणिउ (क) चाहउ वेकणउ (ख) चालउ टेकणा (ग) ५. दिखलावउ (ख) ६. बल पौरुष (क)

(३३५) १. वीषम (ख) २. तू चढावण भए (क) ३. तिह कइ कियइ न उट्ठइ सोइ (क) तिन्ह कइ कहइ नइ चाडइ सोइ (ख) तिन के कहे न सकइ चढि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगाए (क) उलगणो (ख) उलगग (ग) २. चड्यो तुरंग दिया गलि पाउ (ग) मूलप्रति—उलमाणे कउमाणु न आहि

(३३७) १. हुइ (क ग) २. आगे (ब) ३. ऊपमि (क ग)

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

फुणि सो रूप खधाइ[1] होइ, द्वौ घोड़े निपजावइ सोइ।
वन उद्यान रावलुहो[2] जहा, घोड़े खाची[3] पहुतउ तहा ॥३३८॥
वणह[1] मयण पहुतउ जाइ, तउ[2] रखवाले उठे रिसाइ।
इह व्रण चरण न पाव कोइ, काटइ[3] घास विगुचनि होइ ॥३३९॥
कोपि मयण मन[1] रहउ सहारि, रखवालेसहु[2] कहयउ हकारि[3]।
कछुस[4] मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चरण किन देहु[5] ॥३४०॥
तवइ[1] भइ तिन्हु की मतु हारि, काम मूदरी देइ उतारि।
रखवाले वौलइ[2] वइसाइ, दुइ घोड़े ए[3] चरहु अधाइ ॥३४१॥
फिरि फिरि घोड़ो वण मा चरइ, तर[1] की माटी उपर करइ।
तउ रखवाले कूटइ[2] हीयउ, दू घोड़े वणु चोपटु[3] कीयउ ॥३४२॥
दीनी[1] तिनसु काम मूदरी[2], वाहुरी हाथ मयण[3] के चढी।
सो वर वीर पहुतउ तहा, सतिभामा की वाडी जहा ॥३४३॥

---

(३३८) १. खुधाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालउ (ख) सुरावल (ग) ३. रचि (क) खइचि (ख) खंची (ग)

(३३९) १. वण महि (क ख ग) २. काचउ खास चरावइ जाइ (क) काटइ घासु विगूचइ सोइ (ख) तीसरा चौथा चरण—क प्रति—तव रखवाला बोलइ एम घास रावलउ काटइ केम (क) ३. कापइ तासु विधावइ सोइ (ख) काढइ घास विगूचइ सोइ (ग)

(३४०) स कोप (क) जिन (ग) २. वंशहि जस हारि (ख) बुलाइ (ग) ४. कछू मोल तुम हम पहि लेहु (क) कछू मोलि तुम्हि आपणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)

(३४१) १. तव कीनी (ग) २. वोलहि (क) बोले (ग) ३. लेहु (ग) मूलप्रति—वइपइ

(३४२) १. तल की (क ख ग) २. तूटहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु (ग) चउपट (ख) अन्तिम चरण क प्रति में नहीं है।

(३४३) १. मूंदडी (क ख) २. दीनी तहि (ग) ३. कुमर के पडी (क)

वाडि मयरा पहुतउ जाइ, वहुत विरख दीठे ता[1] ठाइ।
कोइ न जाणइ तिनकी आदि, वहुत भांति फूली फुलवादि।३४४।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

जाइ जुही पाडल[1] कचनारु, ववलसिरि[2] वेलु तिहि सारु।
कूंजउ महकइ अरु[3] कणावीरु, रा[4] चंपउ[5] केवरउ[6] गहीरु ॥३४५॥

कुंढु[1] टगरु मंदारु सिंदूरु, जहि वंधे महइ[2] सरीरु[3]।
दम्वणा[4] मरुवा केलि अणंत[5], निवली[6] महमहइ अनंत ॥३४६॥

आम जंभीर सदाफल घणे, वहुत विरख तह दाडिम्व[1] तणे।
केला दाख विजउरे[2] चारु, नारिंग[3] करुणा[4] खीप[5] अपार ॥३४७॥

नीवू पिंडखजूरी संख[1], खिरणी लवंग छुहारी दाख।
नारिकेर फोफल वहु फले, वेल कइथ घणे आवले ॥३४८॥

---

(३४४) १. तिह (क) तहि (ख)

(३४५) १. पाटल (क) पाडले (ख) २. वाउल सेवत्री सो सभिचार (क) वावल (ख) ३. अवर (ख) ४. राइ (क) राय (ख) ५. चंपा (क) ६. केतकी गहीर (क) केवडउ हीर (ग)

(३४६) कुंद अगर मंदार सिंदूर (क) फूटु टगरु मघुरु सिंदूरु (ख) २. मह महइ (क) महकइ (ख) ३. ससरीरु (ख) ४. दवणउ (क) दवणा (ख) ५. महंत (ख) ६. नीव्वू (क) नेवाली (ख)

(३४७) १. अगणत गिणे (क) जाजिण गणे (ख) २. विजौरी (क) ३. नारिली (क) करणा (क) करुणा (ख) ५. खीप (क ख) मूलप्रति में 'कीपि' पाठ है

(३४८) १. अणंत (क) असंख (ख) मूलप्रति में कइथ के स्थान परइथ पाठ है

नोट—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'ग' प्रति में नहीं है।

प्रद्युम्न का दो मायामयी वन्दर रचना

वाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चिंतइ साहस धीर।
जइसइ लोग न जाणइ[1] कोइ, वांदर[2] दुइ निपजावइ सोइ ॥३४६॥

तउ वंदर[1] दीने मुकलाइ, तिन सव वाडी घाली खाइ।
जो फुलवाडि[2] हुती वहु भाति, वंदर घाली सयल निपाति।३५०।

फुणि[1] ते वंदर पइठे[2] मोडि, रूख[3] विरख सव घाले तोडि।
सव[4] फल हली तव संघरी, तउपट[5] करि सव वाडी धरी ॥३५१॥

लंका जइसी[1] की[2] हणवंत, तिम वारी की[3] वालखयंत।
भानु कुम्वर हो[4] वैठो जहा, मालि जाइ पुकार्‌यो तहा ॥३५२॥

मालि भणइ[1] दुइ कर जोडि, मो[2] जिन[3] सामी लावहु खोडि।
वंदर[4] द्वै[5] सै पइठै[6] आय, तिहि[7] सव वाडी घाली खाइ ॥३५३॥

जवति[1] माली करी पुकार, रथ चढी कुम्वर लए हथियार।
पवण वेग सो धायउ[2] तहा, वंदर[3] वाडी तोरी[4] जहा ॥३५४॥

---

(३४६) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) वंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवादि पाठ है। यह चौपई 'ख' प्रति में नहीं है।

(३५१) १. पुणते (ख) २. पठए (क) ३. रुक्ख (ख) ४. सव्व फलाहली (ख) फुलवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सवि धरी (क ख) चउड चपट तिह वाडी करी (ग) मूलप्रति में 'वेद पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेमसो (ग) २. करी (क ख ग) ३. लीधी जु खपंत (क) किय काल कयंति (ख) तउ वाडी वंदरि रवाधन्ति (ग) ४. छइ (क) था (ख)

(३५३) १. विनवइ (क ग) २. मुझ (क) मोहै (ग) ३. मत (क) ४. वनचर (क) ५. वाडी (क) दुइ (ख ग) ६. इहि वइठा आइ (ग) दुइ तहि पइठे आइ (ख) ७. तिन (क) तिन्ह (ख) तिम्ह (ग)

(३५४) १. जव तिहि (क ख ग) २. धाउ (क) पहुता (ग) ३. वानर (क) ४. तोडइ (क) तोडी (ख) तोडहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरधउ काहौ[1] करइ, मायामइ[2] मछर रचि[3] धरइ ।
तिहि ठा भानु सपतउ जाइ,[4] खाजतु[5] मछर[6] चलिउ[7] पलाइ ॥३५५॥

भानु भाजि णिय[1] मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु आइ तिह[2] भहउ ।
तंखिणि वहु व[3]रकामिणी मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रद्युम्न द्वारा मगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

ते[1]ल चढाव[2]हि करइ सिंगारु, सूहउ[3] गावइ मंगलुचारु ।
रथ चढि कुवरिति[4] उभीभइ, फुणि मटियाणउ[5] पूजण गइ ॥३५७॥

तवइ मयण सो[1] काहो करइ, ऊंटु तुरंगु जोति[2] रथ चढइ[3] ।
ऊंटु तुरंगु सुअठे[4] अरडाइ, भानु[5] रालि घोडउ घर जाइ ॥३५८॥

पडिउ भानु उइ[1] विलखीभइ, गावत[2] आइ रोवति गइ ।
ऊंटू तुरंग उठे अरराइ, अ[3]सगुन भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

---

(३५५) १. काहउ (क) अइसा (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिति धरइ (ग) ४. मूलपाठ तहां जाउ (ग) भानुकुमरु तउ पहूंता आइ (ग) ५. खाजत (क) खाजनू (ख) ६. माछर (क ग)—७. चलउ (क ख) खिणि रही मो चली पलाइ (ग)

(३५६) १. जिन (क ग) २. आइ तिह थयो (क) तहां तिसु भया (ग) ३. नयरी (ग)

(३५७) १. तिलु (ख) २. चढुवहि (ख) ३. अइसइ (क ख) तव से (ग) ४. कुवरति (क) ते (ख)—चढयो कुंवरु रथि आगे भयो (ग) ५. मटियाणी (क) मढियाणउ (ख) मदियाणउ (ग)

(३५८) १. तहि अइसो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. चलइ (क ख) धरइ (ग) ४. उठया अरडाइ (क ख) तवहि उर सो करइ पुकार (ग) ५. असवण भयो न जणह सुहाइ (क) घोडा भागा भानहि मार (ग)

(३५९) १. तव विलखा भया (ग) २. गावै थी सो घर कहूं गया (ग) ३. असवणु (ख) नोट—यह पद्य क प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेप बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

फुणि मयरद्धउ बंभणु भयउ, कर[1] धोवती कमंडलु लयउ।
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खण वावडी पहूतउ जाइ[2] ॥३६०॥

उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी[1] जहा।
भूखउ वामणु जेम्वणु[2] करहु, पाणिउ[3] पियउ कमंडलु भरहु ॥३६१॥

फुणि चेडी जंपइ तंखणी[1], यह वापी सतिभामा तणी।
इणि[2] ठा पुरिषु न पावइ[3] जाण, तू कत आयउ विप्र अयाण ॥३६२॥

तउ वंभण कोपिउ तिणकाल[1], किन्हहू[2] के सिर मूडे हि वाल[3]।
किन्हहू[4] नाक कान ते खुटी[5], फुणि वंसणु पइठउ[6] वावड़ी ॥३६३॥

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

फुणि तहि वुधि उपाइ घणी, सुइरी[1] विद्या जल सोखणी।
पूरि कमंडलु निकलिउ सोइ, सूकी वावडी[2] रीति होइ ॥३६४॥

कमंडलु के जल को गिरा देना

सूकी देखि अचंभी नारि, गो वाभण चोहटे[1] मझारि।
धाइ लड़ी वाहुडी कर गयउ, फुलि[2] कमंडलु नदी होइ वहउ ॥३६५॥

---

(३६०) १. तलि (ग) २. आइ (क ग)

(३६१) १. वावडी (क) चेड़ी (ख ग) २. जीमण (क) जेमणु (ख) जीवणु (ग) ३. पाणी पिए (क) पाणी देहु (ग)

(३६२) १. ता तणी (क) २. इहि ठा (ख ग) ३. आवइ (क)

(३६३) १. तिणि काल (क) तहि वाल (ख) तहिताल (ग) २. किण्हहूकउ (क) किन्हही के (ख) तिन्ह के (ग) ३. वाल (क ख ग) ४. किनहू (क) सबे (ग) ५. खुडी (क ख ग) इव (क) ६. वइठावउ (ग) मूलप्रति में 'तिताल' पाठ है

(३६४) १. सुमरी (क) सुमरी (ख) संवरी (ग) २. चाइ (ग)

(३६५) १. चउहटे (उ) ते पहुती सतभामा वारि (ग) २. फूटि (ख)

वूडरण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ॥३६६॥

प्रद्युम्न का मायामयी मेढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

फुणि तहि मयण मित्र[1] चितयउ, माया रूपी मेढो[2] कियउ ।
पहुतउ वसुदेव तणौ[3] खंधार, कठीया जाइ जणाइ सार ॥३६७॥
तउ वशुदिउ[1] वोलइ सतभाउ[2], वेगउ तहा भीतरि[3] हकराउ[4] ।
कठिया जाइ संदेसउ कहिउ[5], ले मैढो[6] भीतरि गयउ ॥३६८॥
छोटो[1] मैढो धरौ न संक[2], विहसि[3] राउ तव छाडी टंक ।
तउ मयरद्धउ वाहु कहइ, वात एम कौ कारणु अहइ[4] ॥३६९॥

---

(३६६) क प्रति में—
कमंडलु भरि चलिउ वाजारि, करथी पडिउ कमंडलु सारि ।
फूटि कमंडलु नइ तिह चली, लोक उत्तर पूछइ देवली ॥३७४॥
पूछइ पणिहारी वइठे हाट, भणहि वाणिए पाडी हाट ।
नगर लोग सब कौतिग लिउ, इतनो करि तहां थी चलिउ ॥३७५॥
ख प्रति
वूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाडी पाठ ।
नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहा ते चलिउ ॥३७१॥
लोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि वाहुडि चाल्यो (ग)
ग प्रति
वंभण जाइ जणाईसार, गय वंभण चउहटै मझारि ॥३५८॥
फारि कमंडलु नदी हुइ चली, नगर उनी वोलइ तव वली ।
डूवण लागउ सभु वाजार, सवइ लोग मिलि करहि पुकार ॥३५९॥

(३६७) १. मनु (क) वहुडि (ग) मंतु (ख) २. मढिउ (क) मेढउ (ख) माटी (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुदेउ (क) वसुहिउ (ख) वासुदेव (ग) २. तिहि ठाइ (ग) ३. सातरिह (ख) वेडा नुइह भीतरह कराउ (ख) ४. वुलाइ (ग) ५. कियउ (ख) चयउ (ग) ६. ले भागउ वहु (क) ले मींढा उहु भीतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. ठाडिउ (क) छोडिउ (ख) छुटा (ग) २. संख (क) संग (ग) ३. विहसि रायणि छाडी एक (क) विहसि राय पुणु छूटो टंग (ख) विहसि राय तव दीनी टंग (ग) ४. अछइ (क ग) मूलपाठ अहै

विहसि अणंगु पयंपइ ताहि, हउ परदेसी वाभण आहि ।
दुखइ[1] टंक तुहारी देव, तउ हउ[2] जीवत उवरउ केम्व ॥३७०॥

तउ जंपइ वसुदेउ वहोडी, इहिर वयण तुहि[1] नाही खोडी ।
मन आपणे धरइ जिन[2] संक, मेरी तूटि[3] जाइ किन टंक ॥३७१॥

तव तिन्हि मेहुउ[1] दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।
तोडि टांग मैढो वाहुडिउ, वसुदेउ राउ भूमि[2] पडिगयउ ॥३७२॥

वशुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि[1] मन हासउ[2] भयउ ।
तिहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

कनक धोवतो जनेउ धरै, द्वादस टीको चन्दन करै ।
च्यारि वेद आचूक[1] पढंत, पटराणी घर जायो पूत[2] ॥३७४॥

उभो भयो जाइ[1] सीद्वार, कठिया जाइ जणाइ सार ।
जेते वाभण भीतर घणे, सतिभामा वरजे आपणे ॥३७५॥

---

(३७०) १ देखइ कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिनवरउ मन मानउ देव (क) तउ हउ तुम्ह ते उवरउ केव (ग) 'हउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. मीढउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क) वासुदेव भूमहि गिर पडयो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति–हो वसुदेव कहा यहु किया,............... ।

ताली पारै सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में–करिहि कमंडलु धोती बंधि, द्वादश तिलक जनेउ कंठि ।
चारिउ वेद अचूक भणाइ, पटराणी घर पहुंता जाइ ॥

१. अचुपके (ख) २. पहुत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीह दुवारि (क ख) सुतासु (ग)

सुण्यो पढंतउ[1] उपनो भाउ, वह[2] वाभरण भीतर हकराउ[3] ।
राणी तणउ हकारउ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥
अक्षत[1] नोरु हाथ करि लेइ, राणी जाइ आसीका[2] देइ ।
तूठी राणी करइ पसाउ, मागि विप्र जा[3] उपर भाउ ॥३७७॥
सिर कंपत वंभरण जव कहइ, वोल तिहारो साचउ अहउ[1] ।
वयणु एकु हौ आखउ[2] सारु, भूखउ वाभरण देहु आहारु[3] ॥३७८॥
राणी[1] तणउ पटायतु[2] कहइ, भूखउ खरउ करटहा[3] अहइ[4] ।
राणी आणइ[5] अर्थु भंडारु, एकुउ[6] मागइ एकु आहारू[7] ॥३७६॥
तुम विप्र कहत हहु भलउ, तुह्मि वहु[1] वाभणु हउ एकलउ[2] ।
वेद पुराण कहिउ जो[3] सारु, उतिमु एक आहि आहारु ॥३८०॥
वैठि[1] विप्र[2] उठ भोजन करहु, उपरा उपर काहे लडहु ।
एक[3] ति उपरि तल वैसरहि, अवरइ विप्र परसपर लडहि[4] ॥३८१॥

---

(३७६) १. पंडित (ग) २. इह (क) वहु (ख) इहि (ग) ३. वुलाइ (क) लेइ वुलाइ (ग) इहु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अखत (ख) अखित (ग) २. कहूं आशिष सो देकु (ग) ३. जिह (क) जह (ख) जिसु (ग)

(३७८) १. करुइ (ग) २. अपउ (क) ३. आधारु (ग)

(३७६) १. दणी ततउ पठाइतु कहइ (ख) २. चितु आहाइ (ग) सोइउ कत्तइ (क) ३. करहिहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आफइ (ग) ६. तू किउ (क) वडुवा (ख) हउतउ (ग) ७. आधारू (ग)

(३८०) क प्रति में यह छन्द नहीं है। १. तभि (ग) एकला (ग) ३. सो (ग)—'ख' प्रति में चौथा चरण नहीं है ।

(३८१) १. वेसि (क) वइसि (ख) वइसहु (ग) २. वंभरण (ग) ३. एक नि विप्रति उपरि लडहि (क) ४. जलहि (ख)

निसुनहु वात परदवन तणी, मुकलाइ[1] विद्या जूझणी।
उपरापरुति[2] वंभण लडइ, सिर[3] कूटहि कुकुवार फरहि ॥३८२॥
राणी बात कहइ समुझाइ, इतु[1] करटहातु[2] लागी वाइ[3]।
दूरउ[4] होइ तहि[5] घालइ रालि[6], नातरु वाहिर देहि निकालि ॥३८३॥
तउ मयरधउ वोलइ वयणु, साधु[1] अघाणउ भूखे[2] कम्वणु।
खुधा[3] वियापइ सुणइ विचारु[4], हमि कहु मूठिक देहि अहारु[5] ॥३८४॥
सतिभामा ता तउ[1] काहौ[2] करइ, कनक थालु तस[3] आगइ धरइ।
वइसि विप्र तसु[4] भोजन करहु, उन[5] की वात सयल[6] परिहरहु ॥३८५॥
वैठउ[1] विप्रु[2] आधासणु[3] मारि, चकला दिनउ आगइ सारि।
लेकर[4] दीनउ हाथु पखाल, आणिउ[5] लोणु परोसिउ थाल ॥३८६॥

---

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपरु (ग) परूते (ख) उपरि (ग) ३. सिर फूटहि कोलाहल करहि (क) सिर कूटहि कूवारउ करहि (ख) पीटहि सीसु कूक वहु करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग) ४. भलइ वुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. राडि (ग) मूलप्रति में 'वार' पाठ है

(३८४) १. साधु (क ख) २. भपउ (ख) ३. वुधा वियापहि (ख) जुडे विप्प (ग) ४. तू वासा (ख) ५. अधारू (ग)

(३८५) १. तव (क ग) २. इसी (ग) ३. तव आणि धराइ (ग) ४. तुम (क) तुम्ह (ख ग) ५. उन्ह की (ख ग) इनकी (क) ६. सवे (ग) मूलप्रति में 'तुन्ह की' पाठ है।

(३८६) १. वइसउ (क) २. विपु (ख) ३. अघाणि (क) ४. लोटउ (क) ५, अप्पिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हाडी[१] ते[२] जाणि, व्यंजन[३] वहुत परोसे आणि।
माडे[४] वडे[५] परोसे तासु, सवु समेलि[६] गउ एकुइ गासु ॥३८७॥

भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ।
जेतउ घालइ सवु[१] संघरइ, वडे[२] भाग पातलि उवरइ[३] ॥३८८॥

वाभण भणइ निसुणि हो वाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल।
तिमु[१] तिमु लोगु सयलु परिहरयउ, मो आगे सवु कोडा[२] करहु ॥३८९॥

जहि जेम्वण[१] न्योते[२] सवु लोगु, तितउ[३] परोसिउ वाभण जोगु।
नारायणु कहु लाडू धरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥

तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि[१] तो खाइ सयल[२] रसोइ।
यह[३] वाभणु अजहु न अघाइ, भूखउ भूखउ परिविलखाइ[४] ॥३९१॥

भयण वीरु[१] यहु वडउ विजोगु, तइ जू[२] नयर सवु न्योत्यो लोगु।
सो काहो जेम्वहिगे[३] आइ, इकुइ विमु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

---

(३८७) १. विधि (ग) ते तउ (ग) ३. भोजन (ग) ४. मंडा (क) मांडे (ख ग) ५. वहुत (ग) ६. सकेलि (ख ग) सवनि कीयो एके गासु (क)

(३८८) १. ते तउ खाय (ख) २. वडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उवराइ (ग) मूलप्रति में 'ठाइ'

(३८९) १. निवलो लोग सवहि परिहरउ (ग) २. फूडा (क ग)

(३९०) १. जीमण (क ख) ज्योणार (ग) २. निउतउ (क) निउते (ख) नियतिह (ग) ३. तिन्ह कइ उपज्या वडा वियोग (ग)

(३९१) १. इहतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सवहि (ग) ३. खाते लाडू नारायण खाइ (क) ४. विललाइ (क ख ग)

(३९२) १. वारु (ख) विप्र (ग) २. नगर काज (ग) ३. जीमहगो (क) जोवहिगे (ख)

राणी चितइ उपणी काणि, काहो अवरु परोसो आणि ।
भूखउ वाभण काहो करइ, घालि आंगुली सो उखलइ[1] ॥३९३॥
अैसो वांभण कोतिगु करइ, सव[1] मांडहौति उखली भरइ ।
मान भंगु राणी कहु कीयउ, मयणु विप्र ते खूढउ भयउ ॥३९४॥

प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

मूंडी मूडि नलीयरा[1] लयउ, निहुडिउ चलइ कुवडा[2] भयउ ।
वडे दांत[3] विरूपी[4] देह, फुणि[5] सु चलिउ[6] माता के गेह ॥३९५॥
खण खण रुपिणि चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।
मोस्यो[1] नारद कह्यउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३९६॥
जे मुनि वयण[1] कहे परमाण[2], ते सवई पूरे सहिनाण ।
च्यारि[3] आवते[4] दीठे फले, अरु आचल[5] दीठे[6] पीयरे[7] ॥३९७॥
सूकी वापी भरी सुनीर, अपय[1] जुगल भरि आए खीर ।
तउ रुपिणी मन विभउ[2] भयउ, एते[3] ब्रह्मचारि तहा[4] गयउ ॥३९८॥

---

(३९३) १. सव पाछउ घरइ (क) सो करइ (ख) ऐसा केतिग बंभण करै (ग)

(३९४) १. सव माहुउ उखालि सो भरई (क) सव माणहुउ उखलि सो भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरऊ (ग)

(३९५) १. कमंडलु हाथि (ख) नालियरु (ग) २. हूडउ भयो (क) भयउ (ख) होइ (ग) ३. वातारिव (क) दंत (ग) ४. विरुवी (ख) विरुपिय (ग) ५. वहुडि (क) ६. सुवडिउ (ख)

(३९६) १. मुहिस्यो (क) हमसो (ग) ख प्रति में प्रथम चरण नहीं है ।

(३९७) १. वरन (क) वरु (ग) २. आखे (ग) ३. वारि (ख ग) ४. अम्बते ५. अंचल (ग) ६. वीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयला (क)

(३९८) १. थाणय (क) पयोहरु (ख) २. विसमो (क) विसमा (ग) चिंभउ (ग) ३. इतडउ तापमु वारेहि गया (ग) ४. कह भयउ (ख)

नमस्कारु तव रूपिरिग करइ, धरम विरचि खूडा[1] उचरइ ।
करि आदरु सो विनउ करेइ, करणय सिघासणु वैसरण देहु ॥३६६॥

समाधान पूछइ समुझाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ।
सखी वूलाइ जणाइ सार, जैवरण करहु म लावहु वार ॥४००॥

जीवरण[1] करण उठी तंखिरणी, सुइरी मयरण[2] अग्नि[3] थंभीरणी ।
नाजु[4] न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, वह भूखउ भूखउ विललाइ[5] ॥४०१॥

हो[1] सतिभाम कै घरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ[2] ।
जो[3] दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पूरी लाघरण तीन ॥४०२॥

रूपरिग चितह्[1] उपनी कारिग, तउ लाडू[2] ति परोसे आरिग ।
मास[3] दिवस को लाडु धरे, खूडे[4] रूप सवइ संघरे ॥४०३॥

आधु लाडू नारायरण खाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ आघाइ ।
तव रूपिरिग मन विंभी[1] कहइ, किछु किछु जारगउ यहु अहइ ॥४०४॥

---

(३६६) ३६८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में और है जो निम्न प्रकार है—
तापस देखि उपना भाउ, तव रूपरणी पूछई सतभाउ ।
स्वामी आगमणु किहां थी भया, एता ब्रह्मचरजु कहां ते निया ॥
१. खेडउ (क) खूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठी तंखिरणी, (क) २. सुमरी विद्या (ग) ३. अगनि (क) अगि (ख) अग्नि बंधरणी (ग) ४. नाज न चढइ भूंमि धूंजाइ (क) नाज न रान्धहि चूल्हि धुंधाइ (ख) अग्नि वलइ चूल्हइ धूंधाइ (ग) ५. विललाइ (क ग)

(४०२) तवहि मयरण उठि भा पहि गया (ग) २. रहिउ (क) भयउ (ख) ३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित्त (क) चितहि (ग) २. लगु लडू परुसउ (ग) परुसे (क) ३. नाराइणु कहु लाडू धरे (ग) ४. खोडे वंभरण सब संघरे (ग) मूलप्रति में 'वीर' पाठ है ।

(४०४) १. विभउ (ख) चितिहि विसमाइ (ग)

तउ राणो मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रह[1] को घरइ ।
जइ[2] उपजइ तो कहसा न जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥

तउ रूपिणी मनि भयो संदेह, जमसंवर घर वाढिउ एहु ।
विद्या वलु हइ[1] हीएह घणउ, यह परभाउ अहि[2] विद्या तणउ ॥४०६॥

फुणिइ[1] जै पूछइ करि नयणु[2], लयउ[3] वरतु तुम्हि कारणु कवणु ।
तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥

काहा तैं तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिष्या[1] तुहि गुरु कवणु ।
जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो[2] मोहि ॥४०८॥

तवहि रिसाणौ वोलइ सोइ, गुर वाहिरी दीख[1] किमु होइ ।
गोतु नाम सो पूछइ ताहि[2], व्याह विरधि जहि सनवधु आहि[3] ॥४०९॥

हम परदेस दिसंतर फिरहि, भीख[1] मांगि नित भोजन करइ ।
कहा तूसि तू हम कहु देहि, रूसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

---

(४०५) १. उवरिको (ग) २. किउ करि लाभइ इसकी माय (ग)

(४०६) १. हइ तुम यह घणउ (क) हइ इह यह घणउ (ख) इसु पहि हइ घणी (ग) २. अति तिसु तणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ख प्रति में से लिये गये हैं। १. दूजइ (क) २. रुक्मिणी (ग) ३. लिउ वरु इहु (ग)

(४०८) १. दीन्ही दीक्षा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देखहि (क) दीख्या (ख) दिष्टि (ग) २. तोहि (क) मोहि (ग) ३ होइ (ग)

(४१०) १. भीख मांगि (क) चरी मांगि (ख) चारि भंग (ग) मूलप्रति में 'चरी मांगित' पाठ है। २. रूसी (क) रूसहि (ख) रुट्ठी (ग)

खूडउ[1] दिठु रिसाणउ जाम, मन विलखाणी रूपिणि ताम ।
वहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूली जिन[2] लावहु खोडी ॥४११॥
तवहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा विसूरइ माइ ।
साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्व पडि उतरु आफउ मोहि ॥४१२॥
तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्व[1] रूपिणि कउ भयउ विवाहु ।
जिम्व परदवणु पूञ्ज हडि लयउ, सयलु कथंतरु पाछिलउ कहिउ।४१३।
धूमकेत हौ[1] सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरु लै गयउ ।
मुहिसिहु नारद कहिउ निरूत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥
अवर वयणु मुनि कहे पम्वाण, ते सवई[1] पूरे सहिनाणु ।
अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु विलखउ होइ ॥४१५॥
सतिभामा घर वहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।
हारी होड[1] न सीधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥
माता[1] पास[2] कथंतर सुण्यउ, हाथ कूटि फुणि माथो धून्योउ ।
आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जणु पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

---

(४११) १. खरा रिसाणा दीरुशा जाम (ग) खूडउ निठुणि रिसाणउ जाम (ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोवत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होड (क) मूलप्रति में 'डोर' पाठ है

(४१७) १. तो मा (ख) २. तणउ (क)

कंद्रप[1] वुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या वहु रूपिणी ।
निजु माता उभिल करि धरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥

सत्यभामा की स्त्रियों का रूक्मिणि के केश उतारने के लिये आना

एतइ वहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।
अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर णारि पहुती तहा ॥४१९॥
पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।
सामणि जाणहु आए उण लेहु, अलिउल केस उतारण देहु ॥४२०॥
निसुणि वयण सुंदरि यो कहइ, वोल तिहारौ साचउ हवइ ।
निसुणहु चरित अणंगह तणउ, नाउ मूडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

हाथ आंगुली धरी उतारि, अर मूंडी गोहिण की नारि ।
नाक कान तिनहु के खुरे[1], फुणि ते सव्व घर तन वाहुरे[2] ॥४२२॥
गामति[1] निकली नयर मझारि, कम्वण पुरिष ए विटमी[2] नारि ।
यहर[3] अचंभउ वडउ विजोउ[4], हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥
एते छण ते रावल गई, सतिभामा पह उभी भई ।
विपरित देखि पयंपइ सोइ, तुम कवणइ[1] मोकली विगोइ ॥४२४॥

---

(४१८) १. कइंपि (ग)

(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिन सामिणि ऊण लेहु पाठ है

(४२२) १. पडे (ग) २. सेवडे (ग)

(४२३) १. गावत (क ख) गावतु (ग) २. विडंरी (ख) ३. अउर (क) एहु (ग) इहुरु (ख) ४. वियोग (क) विजोगु (ख) वियोगु (ग)

(४२४) १. कवणे (ख) नाई (ग)

नोट—क प्रति में दूसरा और तीसरा चरण नहीं है ।

तव[1] ते जंपइ विलखी भइ, हम ही रूपिणि कै घर गई ।
नाक कान जो देखइ टोइ, नाउ[1] सरिसु[2] उठी सव रोइ ॥४२५॥
निसुणि[1] चरितु चर आए तहा, रूपिणि रावल[2] वैठी जहा ।
विटमी नारि[3] सिर मूंडे घणे, नाक कान हम काटे सुणे ॥४२६॥
निसुणि वयण फुणि रूपिणी कहइ, निश्चे[1] जाणौ येहो[2] अहइ ।
काज ताज छोडहि वरवीर, परगट होइ तूं साहस धीर ॥४२७॥

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तव सो पयड[1] भयो परदवणु, तहि सम[2] रुपिन पूजइ कवणु ।
अतिसरूप वहु लक्षणवंतु, तउ रूपिणि जाणिउ यह[3] पूत ॥४२८॥

वस्तुबंध—जव रूपिणि दिठ परदवणु ।
सिर चुंमइ आकउ[1] लीयउ, विहसि वयणु[2] फुणि कंठ लायउ ।
अव मो हियउ सफलु[3], सुदिन आज जिहि पुत्तु आयउ ॥

---

(४२५) क प्रति में प्रथम दूसरा चरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख) नाई (ग) २. सिउ ऊठे सवि रोइ (ग)

(४२६) करवि चरितु घरि आया तहां (ग) २. रोवं (ग) ३. तिय (ग)

(४२७) १. निहचउ जाणउ (ख) नीचउ जाणौ (ग) नविहू जाणउ (क) २. कुं इह अहइ (क) इह को अहइ (ख) ये हो अहै (ग) मूलप्रति में 'इदह' पाठ है ।

नोट—दूसरा और तीसरा चरण मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यहां 'ग' प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मयगु (क) मयणु (ख) परगट (ग) २. तरि (ग) तासु रवि न पूजइ कवणु (क) सवु को जाणइ सुंदर ववणु (ख) ३. निज (ग)

दस मासइ जइउ[4] धरिउ, सहीए दुख महंत ।
वाला[5] तुणह न दिठ मइ, यह पछितावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तणो वयणु निसुणेइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
खण इकु माह विरधि सो कयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदंहउ ।४३०।
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाइ ।
खण खण जेत्वणु[1] मागइ सोइ, वहुतु मोहु उपजावइ सोइ ।४३१।
इतडउ चरितु तहा तिहि कियउ, फुणि आपणउ रूपो भयउ ।
माता मयणु सुनु[1] मोहि, कवतिगु[2] आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अवसर[1] कथंतर भयउ, सतिभामा महलउ[2] पठयउ ।
तुम वलिभद्र भए लागने, आइस[3] काम[4] रूकमिणी तणे ॥४३३॥

---

(४२६) १. वाकउ दीयउ (क) अंकउ भरिउ (ख) अंकउ लिउ (ग) २. हिय तव कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फल (क) जीविउ सफलु (ख) जीवहु सफलु (ग)।४. उरि धारिउ (ख) मइ डरि घरचे (ग) ५. वालकु होतु न दीठु मइ इहु पछितावा पूत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ ख प्रति में नहीं है ।

(४३१) १. भोजन रोइ (ग)

(४३२) १. सुणहि तू (क) २. कउतिग (क) नोट—ग प्रति में चौथा चरण नहीं है । मूलप्रति में 'रुसो' पाठ है ।

(४३३) १. अमर (क ख ग) २. कंचुकि (क) महला (ग) ३. अइसा (क) अइसे (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठयो' पाठ है

महलउ जाइ पहुतउ[1] तहा, वलिभद्र कुवर वइठे जहा।
जुगति विगतिहि विनइ[2] घणी, एसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

हलधर के दूत का रूक्मिणि के महल पर जाना

हलहल[1] कोपि[2] दूतु पाठयो[3], पवण वेगि रूपीणि पहु[4] गए।
उभे भए जाइ सीहद्वारु, भीतर जाइ जणाइ सार ॥४३५॥

तवइ मयण वुधिमह धरइ, मूंडउ[1] वेस विप्र को करइ।
वडउ[2] पेट तिनि आपणउ कीयउ, फुणि आडौ दुवारि पडि ठयउ४३६

तवहि दूत वोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि।
तउ सो वाभण कहइ वहोडि, उठि न सकउ[1] आइयहु वहोडी।४३७।

निसुणि वयण ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ[1] रालियउ कढाइ।
जइ[2] इह कीम्वहूं वाभणु मरइ, तउ फुणि इन्हकहू गोहिच चढइ।४३८।

---

(४३४) १. सरत्तउ (क) संपत्तो (ख) संपतो (ग) २. दीयो (क) स्वामी वात सुणेहि मुझ तणी (ग)

(४३५) १. वलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पाठगो (क) पाठइ (ख) पाठया (ग) ४. घरि (ग)

(४३६) १. वूढउ (क ख) वूढा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. आनि इह (क) हुउ न सकौं आये वहोड (ग)

(४३८) १. गहि गोडे रालउ इक नइ (क) गोडे दूसहि चलिउ न जाइ (ग) २. जो इहु पावही वंभणु महसु। तउ पुणि इसु की हत्या चडइ (ग) ग प्रति में निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहु देइ न पइसार, संधि रहया सो घर का वार।
गहि गोडा जे रालउ तोहि, मरइ तु वंभणु हत्या माहि ॥४४०॥

प्रवेश न प्राप्त सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

अइसो[1] जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए ।
वाभण एकु वा[2]डह पडउ, जाणि सु दिवसु पंचकउ मडउ ॥४३९॥

तिन[1] पह हम न लइ पयसारु, रुधि पडि[2]उ सो पवलि दुवारु।
गहि गोडउ जउ जा[3]लइ ताहि, म[4]रइ सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुणि वयण हलहर परज[1]ल्यउ, कोपारूढ हो आप[2]ण चलिउ ।
जण दस वीसक गोह[3]ण गए, पवण वेगि रूपिणि प[4]ह गए ।४४१।

उभे भए ति सी[1]हद्वार, दीठ[2]उ वाभण परउ दुवार ।
तउ वलीभद्र पइ[4]सइ ताहि, उठहि विप्र हमि भीतर जाहि ॥४४२॥

तव वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभामा घ[1]र जेम्वण गयउ ।
स[2]रस अ[3]हा[4]र उवरु मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफ[5]रयउ ।४४३।

---

(४३९) १. इसउ वयण (क) अइसउ जाणिति (ख) दीठा वंभणु (ग) २. वारणइ (क) वारिहइ (ख) वाहरि हइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहु देइ न पइसारू (ग) २. रह्या घर का वारु (ग) ३. रालहि (क) राडहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु वंभणु हत्या आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें के पहिले दिया गया है । मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहचहि पडराहि पाठ है

(४४१) १. पज्जलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख) जाणइ वइसंदरि द्यौं टल्यउ (ग) ३. साथिहि (ग) ४. घरि (ग)

(४४२) १. जाइसीह (क ख) तिसीहउ (ग) २. वारि (क) दीठ्ठा वाभणु पड्या सुवारि (ग) ३. कहइ हसि वात (ग)

(४४३) १. एजो घरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में 'पहार' पाठहै । ४. उदरु (क) वहुत संघरउ (ख) ५. आफरियउ (क) अफरिउ (ख) आफरै (ग)

तव वलिभद्र कहै हसि वात, एकर हटा[1] न उठइ खात ।
वाभण खउ[2] लालची होइ, वहुत खाइ जाणइ सत्रु कोइ ॥४४४॥
तवइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू वलिभद्र खरौ निरदयी ।
अवर करइ वाभण की सेव, पर[1] दुख वोलइ तू केव ॥४४५॥
तवइ उठिउ वलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि[1] चल्यउ कढाइ ।
कहा विप्र कहु दीजइ काजि[2], वाहिर करि आवहु[3] निकालि ।४४६।
तव हलहर लइ चलीउ कढाइ[1], पूछइ मयणु रुक्मिणी माइ ।
एक वात हो पूछउ तोहि, कवण वीर यह आछहि मोहि ।४४७।

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यह कहिए वलिभद्र कुवारु ।
सिंघजूझयो जाणइ घणउ, यह पीतियउ[1] आहि तुमि तणउ ।४४८।
गहि गोडइ वह वाहिर गयो[1], वांधि पाउ धडउ हइ रहउ ।
देखि अचंभउ हलहरु कहइ[2], गुपत वीर य कोण[3] अहइ ॥४४९॥

---

(४४४) १. रिटिया अनूतरि खात (क) रटिहानउ हटहि खात (ख) रटिकान रहुही खातु (ग) २. खरउ (ख) खरा (ग)

(४४५) १. तहु दोषंतरु वोलहि देव (ग)

(४४६) १. तिनि लीयो उचाइ (ग) २. गालि (क ख) गाल (ग) ३. वहु देह (क) सुदीजं निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. वुढि पाइ खुडउ होइ भयो (क) वडिउ पाउ धइ छहा रहिउ (ख) वाधा पाउ धरति महि हुवा (ग) २. कहइ (ख) ३. कोइ (ग)

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

रालि[1] पाउ भुइ उभउ रहइ, तहि क्षण[2] सिंह रुप वहु[3] भयउ ।
तहि[4] हलु आवधु लयो सम्हालि, फुणि ते दोउ भीरे पचारि ।४५०।
जूझइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सवल मलावझ[1] लरइ[2] ।
सिंघ रुपि उठियोउ संभालि, गहि गोडउ घालियउ अखालि[3] ।४५१।
छपनकोटि नारायण जहा, पडियो[1] जाइ ति हलहर तहा ।
देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भणइ कान्ह यह वडउ विजोगु ।४५२।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

इहर[1] वात तो इहइ रही, वाहुरि कथा रुपिणी पहँ गइ ।
पूछिउ तव नंदन आपनौ, कापह[2] सीख्यउ वल पोरिष घणौ ॥४५३॥
मेघकूट जो पाठइ[1] ठाउ, जमसंवर तहा निमसै राउ ।
निसुणौ[2] वयण माइ रुपिणी, तिहि ठा[3] विद्या पाइ घणी ॥४५४॥

---

(४५०) १. राडि पाउ भौमि ऊभो सोइ (ग) २. तंखिणि (ग) ३. विक्रमइ सो होइ (ग) ४. उठि वलिभद्र घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवधु लियो संभालि (ख) हलु आवधु लिया संभालि (ग) मूलप्रति में—'तहि लुध्यावधु' पाठ है

(४५१) १. मल्लवहु (क) २. जुझिवइ (क) लडहि (ख) ३. अडालि (क) नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है । ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है ।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पड्या (ग)

(४५३) १. अइसी (ग) हरनहर वात उही इह रही (ख) २. आपहि कण पउरिषु घणा (ग)

(४५४) १. पट्ठइ (क) पावा (ग) पावइ (ख) २. सुणहु वात माता रूकमिणि (ग) ३. यह (क) वा (ख) हुइ (ग)

निसुणि वयण हु आखउ तोहि, नानारिषि ले आयो मोहि ।
उदिधिमाल[1] मइ यह जोडि, फुणि प्रदवन कहै कर[2] जोडी ।४५५।

विहसि माइ तव रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद अहइ ।
निसुणि पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना

तउ मयरद्धउ कहइ सभाइ, वोल एकु हौ मागो[1] माइ ।
वाह पकरि तोहि सभा वसारि[2], लेजइहो जादौनी पचारि ॥४५७॥

यादवों के वल पौरुष का रुक्मिणि द्वारा वर्णन

भणइ[1] माइ सुणि साहस धीर, ए जादौ है वलीए वीर ।
हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाण ।४५८।

पंचति[1] पंडव पंचति[2] जणा[3], अतुल[4] वल कौंतीनन्दना ।
अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिष नाही छेव ॥४५९॥

छपन कोटि जादौ वलिवंड, जिनके भय कांपइ नवखंड[1] ।
एसे[2] खत्री वसइ वहूत[3], किम्व तू जिणइ[4] अकेलो पूत ॥४६०॥

---

(४५५) १. लई प्रजोडि (ग) लईय वहोडि (क ख) २. रवहोडि (ग)

(४५७) १. दीजै (ग)

(४५८) १. भानउ चलो हउ (ग) २. महुयलि (क) वहिंदहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाण (क ख) ४. अवर मल्ल कैरव नन्दना (क) मल्ल कुंती नंदण (ख) वल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तीनि (ख) वहमंड (क) २. जिसे (ग) ३. निरत (ग) ४. आइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध——ताम कोप्यो भरगइ मयरुद्ध[1]
रग[2] तोडइ भड अतुल वल, लउ मान जादम[3] असेसह।
विहडाउ रग पांडवह, जिगऊ[4] रगि सव्वह नरेसह ॥
नारायग हलहर जिगिवि, सयलह करउ संघार ।
पर[5] कुरवि जिगवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमारु ॥४६१॥

चौपई

मयगु चरितु निसुगहु सत्रु[1] कवगु, नारायगु जुभइ परदवगु।
वाप पूत दोउ[2] रग भिरे, देखइ अमर विमागाह चढे ॥४६२॥

रुक्मिणि की बांह पकड़ कर यादवों की सभा में
ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये ललकारना

कोपारुढ[1] मयग जव भयउ, वाह पकरि माता[2] लीए जाइउ।
सभा नारायगु वइठउ जहा, रूपिगि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥
देखि सभा वोलइ परदवगु, तुम सो[1] वलियो खत्री कवगु[2]।
हउ रूपिगि ले चल्यो दिखाइ, जाहि[3] वलु होइ[4] सु लेहु छुडाइ ४६४

(४६१) १. मयग रगि (क) मयरुद्ध (ख) मूलपाठ ममभरि २. रग तोडइ भड अतुल वल (क ख) धाइ लयरद्ध रग तोडउ भउ ३. जवह (ख) ४. जिगिसु (क) जिगऊ रगि सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ जिहम्बु सवरि सहकरि नरेसह ५. एकुवि..जिगवर मुच्चिकरि (ख) नोट—— वस्तुबंध छन्द ग प्रति में नहीं है।

(४६२) १. सह कौगु (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपारुपि (ग) २. रूपिगि (ग)

(४६४) १. महि (क ख ग) २. किउगु (ग) ३. जेहा (ग) ४. आइ (क ख)

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिये ललकारना

तू[1] नारायण मथुराराउ, तइ कंस[2] मान्यो भरिवाउ ।
जरासंध तइ वधौ[3] पचारि, मोपह रुपिणि आइ[4] उवारि ॥४६५॥

दसह[1] दिसा[2] निसुणो वसुदेव, जूभत[3] तणउ तुम जाणउ भेउ ।
जादो[4] मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रुपिणि लेहु अजोडि[5] ।४६६।

वलिभद्र[1] तू वलियो वर वीर, रण संग्राम आहि[2] तू धीर[3] ।
हल[4] सोहहि तोपह हथियारु, मो पह[5] रुपिणि आइ[6] उवारु ॥४६७॥

तूही अर्जुन खंडव[1] डहणु, तो पवरिष जाणं सवु कवणु ।
तैं वयराड छिडाइ गाइ, अव तू रुपिणि लेइ मिलाइ[2] ॥४६८॥

भीम गजा[1] सोहहि कर तोहि, पवरिष आज दिखावइ मोहि ।
खारि पाच तू भोजन खाइ, अव[2] संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥

निसुणि वयण सह्यो जोइसी, करि जोइस[1] काहीं हो वसी ।
विहसि वात पूछइ परदवणु, तुमहि सरिस जिणइ[2] रण कवणु ।४७०।

---

(४६५) १. हउ (ग) २. फंसह (क) कंसाह (ख) ३. वंधिउ (क) जीतिया (ग) वांधियउ (ख) ४. लोहे (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होदह (ग) २. दिसार (क ख ग) ३. झूझ (क) जूझत (ग) ४. चलिए (ग) ५. वहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभउ तह गुरुआ गंभीर (ग) २. साहस धीर (ग) ३. वीर (ख) ४. हलु सोहितो (ग) ५. वलकरि (ग) ६. घाज (ग)

(४६८) १. खडव वण दहणु (क) खंडा वण दहनु (ग) दखव दरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन आणइ (ग)

(४६९) १. गदा (क) २. अवहि आइ जुज्झहि रण मांहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसइ तउ [illegible]इसी (क ख) [illegible] सइ [illegible] इसी (ग) २. दलवलि माहे रणि जीतइ कवणु (ग) नोट—चौथा चरण [illegible] में नहीं है ।

निकुल कुवरु तउ पवरिपुसारु, तोपह[1] कोंत आहि हथियारु ।
अव हइ भयो मरण को ठाउ, मोपह रुपिणि आणि छिडाइ ।४७१।

तुहि नारायण हलहर भए, छल[1] करि फुणि कुंडलपुर गये ।
तवहि वात जाणी तुम्ही तणी, चौरी हरी[2] आणी रुकिमिणी।।४७२।।

मयरधउ जपइ तिस ठाइ, अव किन आइ भिरहु संग्राम ।
वोल एकुह वोलो भलो, तुम सव खत्री हउ एकीलो ।।४७३।।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु—निसुणि कोप्यो तहा[1] महमहण ।
जाणै वैशुंदरु घृत[2] ढल्यउ, जाणिक[3] सिंह वन मा गाजिउ[4] ।
णं[4] सायर थल हलिउ, सयन सवनि[5] जादवन्हि सजिउ ।।
भीउ[6] गजा लइ तहि चलिउ, अर्जुन लिउ कोवंड ।
नकुल[7] कोपि [illegible] कोंत लउ, तउ हल्लिउ[8] वरम्हंडु ।।४७४।।

चौपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनद्धउ जादमराउ ।
हैवर साजहु गैवर गुरहु, साजहुइ[1] सुहड आजु रण भिडहु ।।४७५।।

---

(४७१) १. सोहइ इत्तु तोहि कुंता हथियारु (ग) नोट—ख प्रति में चौथा चरण नहीं है

(४७२) १. वलि पणि (क) २. जाइ (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. घिउ (ग) ३. जणु (ख) जाणु (ग) ४. गहणि (ख) ५. सुर सायर तवउ चलो (क) णं सायरु महि उछलियउ (ख) जाणउ सेवनु मेह उछलिउ ६. सयल जाम (क) सयन जवहि (ख) जुडिउ सेनु नीसानु विज्जउ (ग) ७. हलहरि हलु आवद्धलिउ (ख) ८. फाटउ (क) हाल्या (ग) मूलप्रति में-अरहिउ पाठ है ।

(४७५) १. धावहु (ख)

आयसु भयउ सुहर रण[1] चलइ, ठा[2] ठा के विसखाती करइ ।
केउ[3] कर साजइ करवालु, केउ साजि लेहु हथियारु ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गैवर गुडहि, केउ सुहर साजि रण[1] चढइ ।
केउ तुरीन पाखर[2] घालि, केउ आवध[3] लेइ सभालि ॥४७७॥
केउ टाटरण जूझण[1] लेइ, केउ माथे टोपा[2] देइ ।
केउ पहरइ आगिसनाह[3], एसे होइ चाले नर[4] नाह ॥४७८॥
कोउ कोंतु लेइ कर[1] साजि, कोउ असिवर नीकलइ[2] माजि ।
कोउ सेल सम्हारइ फरी[3], कोउ करिहा[4] साजै छुरी ॥४७९॥
केउ भणइ वात समुझाइ, इन सुहडनि हइ लागी वाइ ।
जिहि है रूपिणि हरि पराण, सो नरु नहीं तिहारै मान ॥४८०॥
एक[1] ठाइ सव खत्री मिलहु, घटाटोप होइ जूझण[2] चलहु ।
वोछी[3] वूधि जिन करहु उपाउ, अव[4] यो भयउ मरण कउ[5] चाउ ॥४८१॥

---

(४७६) १. निसाणेहू (ग) २. टाटर टोपजि सिरि परि परपा (क) ठाटे होइ उसारवती फराऊ (ग) ३. केइ कमरि कसहि (ग) कोइ (ख)

(४७७) १. जात रथि (ग) रथ (ख) २. अंवारी (ख) ३. आयुध (ग)

(४७८) १. जोसण (ग) २. टोपी (ख) ३. अंग (क ग) ४. रण मांहि (क ख ग)

(४७९) १. रण (ग) २. नीकलए (क) नीकालहि (ख) लेहि रण ३. खरी (क) फरी (ग) ४. हाथिहि (ग)

(४८०) नोट--प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८१) १. आजु रणि (ग) २. जूभण (ख) करी तुम्ह (ग) मूल पाठ लख्यो ३. उतिथ (क) कउ (ग) ४. इव हियो (क) इहु हट (ग) ५. हइ टाउ (क) हइ दाउ (ख) का ठाउ(ग)

चाउरंगु वलु[1] मिलिउ तुरंतु[2], हय गय रह[3] जंपाण संजूतु ।
सिगिरि छात[4] दीसहि अपारण, अंतरीख[5] हुइ चले[6] विमाण ॥४८२॥
असी सयन चली अपमाण, वाजण लागे दरड[1] निसाण ।
घोडा[3] खुररइ[2] उछली खेह, जाणो ताजे[4] भादम्व के मेह ॥४८३॥

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

वाइ दिसा करंकइ कागु, वाट काटिगो कालौ नागु ।
महुवरि दाहिणी अरु[1] पडिहारु, दक्षण दिस फेकरइ सियालु ॥४८४॥
वण मा दीसइ जीव असंखि, धुजा पडइ तिन वैसर पंखि ।
सारथि भणइ कहै सतिभाउ, वूरै[1] सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥
तउ केसव वोलइ तिस ठाइ[1], सुगमु सुगणइ विवाहण जाइ ।
सा सारथी समुझावै कोइ, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥
चालै सुहड न मानहि संवनु, देखि सयनु अकुलाणे मयणु ।
माता रूपिणि घालि विमाण, पाछइ आपण रचइ[1] झपाण ॥४८७॥

---

(४८२) १. दलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले वहूत्त (ग) ४. सिखरि छत्र (क ख) सिगण छत्र नहीं परवाणु (ग) ५. वाजइ गाजइ गुहिर निसाण (क) ६. चढा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरइ (क) घोडा लइ (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ खोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहारु (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहारु कूकइ दसिण दिसा सीयालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहारु

(४८५) १. इन सकुणिहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमाणु (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है
ग—तवहि मयणु वाहडि वुधि माणि, माता रुपणि चडी विमाणि ।
चडि करि रथि वोलइ महमहण, चालहु सुहड न मानहु सवणु ॥

विद्या वल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

तवइ मयरा मन[1] मा वुधिकरी, सुमिरी विद्या समरी[2] करी ।
जइसउ तह वलु पर देखीयउ, इसउ[3] सयन आपणउ कीयउ ॥४८८॥

युद्ध वर्णन

दोउ दल सयउ[1] मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए[2] ।
इनउ[3] साजि लए करवाल, जाणिक जीभ[4] पसारी काल ॥४८९॥

मयगल सिउ मैगल रण[1] भिरइ, हैवर स्यो हैवर आ भिरइ[2] ।
रावत पाइक भिरे पचारि, पडइ उठइ[3] जिमवर की सारि ॥४९०॥

केउ हाकइ केउ लरइ, केउ मार मार प्रभणइ ।
केउ भीरहि समरि रण आजि[1], केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥

केउ वीर भिडइ दूवाह, केउ हाक देइ रण माह ।
केउ करइ धनष[1] टंकारू, केउ असिवर करइ संघारु[2] ॥४९२॥

---

(४८८) १. वाहडि (ग) २. धरी (ख) ३. सेना करी (क) सयन कारणी (ख) विरधी करी (ग) ४. तसउ (क) तइ सउ (ख) जे ता तिनि परदल देखिया, ते ता सेनु आपणा कीया (ग)

(४८९) १. साम्हे ऊभे (क) सनमुख जब (ख) वीर बराबर भये (ग) २. धणहर (क) ३. किनहो (क) किनहू (ख) केइ (ग) ४. जीभ (क ख ग)

(४९०) १. आ भिडहि (क) २. आलुडइ (ख) किरजइ (ग) ३. महहि अतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हाथि कहिये पहुराहु, केइ मारते कहि इम भणहि ।
केइ भिडहि संदरि रणि गाजि, केइ कायर नासहि भाज ॥
१. मूलपाठ रणाजि

(४९२) १. धूव का हाउ (ग) २. पहार (क ख) के करवार मारहि घाउ (ग)

देखि स्मरि[1] वोलइ हरिराउ, अर्जुन भीम्मु तिहारी ठाउ ।
सहियो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिपु आजु दिखावहि मोहि ।४६३।
फुणि पचारि वोलइ हरिराउ, दसौ दिसा निसुणौ वसुदेउ ।
वलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तणउ, दिखलावहु पवरिश आपणउ ।।४६४।।
कोप्यो भीमसेणि[1] तुरी चढाइ, हाकि[2] गजा ले रणमहि भिडइ ।
गैयर सरीसो करइ प्रहार, भाजहु[3] खत्री नही उवार ।।४६५।।
कोपारूढ[1] पंथ[2] तव भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लीयउ ।
चउरंग वलु भिडउ पचारि, को रण पंथ[3] न[4] सकइ सहारि ।।४६६।।
सहद्यो हाथ लेइ करिवालु, निकुल कौंत ले[1] करइ प्रहारु ।
हलहर जुझ न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ।।४६७।।
जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण संग्राम[1] ति साहस[2] धीर ।
दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, वहुतइ सुहर[3] जूझि रण पडे ।।४६८।।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना

तव[1] मयरद्ध कोप मन धरइ, माया[2] मइ जूधु वहु करइ ।
मोहे सुहड़ सयल रण पडे, देखइ सुहड[3] विमाणा चढे ।।४६९।।

---

(४६३) १. सेनु (ग)

(४६५) १. भीव तवहि तुल चढया (ग) २. हाथि (क ग) मूलप्रति में 'लए सो भीडह' पाठ है ३. जूझ भीम देइ वहुती मार (ग)

(४६६) १. कोपिरुढ पत्थ (ग) २. पत्थु (ख) ३. पछह (ख) पत्थ (ग) ४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'अल' पाठ है ।

(४६८) १. संग्रामहि (ग) २. आहि रणधीर (क) ३. जे रण संगमि आहि रणवीर (ख) ४. मायामयी जुझ रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमत्तो तव जूझ कराइ (ग) २. मोहणि विद्या दीई समदायि (ग) ३. अमर (क ख ग)

[१]ठा ठा रहिवर हयवर पडे, तूटे छत्रजि [२]रयणनि जरे ।
[३]ठाठा मैगल पडे अनंत, जे संग्राम [४]आहि मयमंत ॥५००॥
सेना जूझि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।
हाहा[१]कारु करै महमहणु, [२]वलियो वीरू आहि यह कवणु ॥५०१॥

रण क्षेत्र में पडी हुई सेना की दशा

वस्तुबंध—पडे जादौ व देखि वर वीर ।
[१]अरु जे पंडौ अतुलवल, [२]जिन्हहि हाक सुर साथ कंपइ ।
[३]जिन चलंत महि थर हरइ, [४]सवलधार नहु कोवि जित्तइ ॥
ते सव क्षत्री [५]इहि जिणे, [६]यह अचरिउ महंतु ।
काल रूप [७]यहु अवतरिउ, जादम्व कुलह खयंतु ॥५०२॥

चौपइ

फिरि फिरि सैना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।
मोती [१]रयण माल जे जरे, दीसइ छत्र [२]तूरी रण पडे ॥५०३॥
हय गय [१]रहिवर पडे [२]अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।
ठाठा [३]रुहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ [४]किलकइ वेताल ॥५०४॥

---

(५००) १. ठांइ ठांइ हिवइ घांसू पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग) ४. सुर (ग)

(५०१) १. कारु (क ग) मूलपाठ कातु २. रणमहि धीर धरिवि परदहणु (ग)

(५०२) १. अनुजे (ख) २. अरजुन (ग) ३. जिन्ह हाक ते सुरपुर डोलइ (ग) ३. जिन्ह हाक इव मेदिनी धसइ (ग) ४. सनर (ख) धनइ मेर जिन्ह हाकु झोले (ग) ५. रण (ग) ६. इहु सूरा मयमतु (ग) ७. नद संघरइ (ख)

(५०३) १. रत्न (ग) २. तूरि (ख) तुरी धर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।

(५०४) १. मयगल (ग) २. बहुत (ग) ३. रुधिरपडे (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीरणी[1] स्याउ[2] करइ पुकार, जनु[3] जमराय जणावहि सार।
वेगि चलहु सापडी[4] रसोइ, ग्रसइ[5] ग्राइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि[1] रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ खर[2] हडइ।
हालइ महियलु सलकिउ[3] सेस, जम संग्राम चलिउ[4] हरि केसु ॥५०६॥

युद्ध भूमि में रथ बढाने पर शुभ शकुन होना

जव रण पेलिउ रथु आपनउ, तव फरकिउ लोयणु दाहिणउ।
अरु दाहिणइ अंगु तसु करइ[1], सारथि निसुणि कहा सुभु करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सवु जिणी, अरु इहि आइ हडी रुक्मिणी।
तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥
तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण।
भाजहि सुहड[1] हाक तुह तणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

---

(५०५) १. वाघिणि (ख) गीदउ (ग) २. स्याल (ग) ३. ते (ग) ४. संपडइ (ख) ५. स्याहु आय जिस तिःते होइ (ख) पंखी पसुवन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि तुडि (ख) कोपि रणि (ग) २. खडहडइ (ख) पर्वत थर हरयो (ग) ३. सकिउ (ख) वोलै (ग) ४. चढिउ (ख) चल सुरणि जादमह नरेसु (ग)

(५०७) दीठी सयन पडी धर ताम कोपारुढ विसनु भउ ताम।
तंखणि हाथ लइ कर चाउ, आरियण दल भानउ भडिवाउ ॥
यह छन्द मूलप्रति में नहीं है।

(५०९) १. सुहड (ग) ३. तीसरा चरण 'ख' प्रति में नहीं हैं मूलप्रति में। 'कुवर' पाठ है।

तउ जंपइ केसव[1] वर वीर, निसुणी वयण तू खत्री धीर।
तइ महु[2] सयन सयलु संघरचउ, अर भामिनी[3] रूपिणि ले चल्यउ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुंनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुहु[1] उपरि मुह कोपु न होइ।
जीवदानु मै दीनउ तोहि, वाहुड[2] रूपिणि आपहि मोहि॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तव हसि जंपइ[1] षत्री मयणु, अैसी वात कहै रण कवणु।
तोहि देखत मैं रूपिणि हडी, तो देखत सव[2] सयना परी॥५१२॥
जिहि[1] तू रण मा जिणिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि साथि[2] क्यो होइ।
लाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, वहुडि भामिनी मांगउ केम्व॥५१३॥
मै तू सुणिउ जूझ आगलउ, अव मो दीठउ पौरष[1] भलउ।
कछु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए॥५१४॥
तउ मयरद्ध हसि[1] करि कह्यउ, तइ सव[2] कुटम धरणि पडि रह्यउ।
तेरउ मनुइ परंखिउ आजु, तुहि फुणि नाही रूपिणि काजु॥५१५॥

---

(५१०) १. तास (ग) २. सहु मयलु सयेतु संघरिउ (ग) मोहि (ग) ३, तिया (ग)

(५११) १. इसु (ग) २. जाहि (ग)

(५१२) १. बोलइ (ग) २. राठी (ग)

(५१३) १. मारया दलु सयाल विगोइ (ग) २. मारथि (ग) साथि (ग) किम कोइ (ग)

(५१४) १. तेता (ग ख) तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है। मूलप्रति में भेलउ पाठ है।

(५१५) १. विहसि फुणि (ग) तर्पाहि पर्हनि (ग) २. तेना हनइ मनि संसारइ (ग)

छोडि[1] आस तइ परिगह तणी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।
जउ तेरे मन कछू न आहि, पभणइ मयणु जीउ[2] लै जाहि ॥५१६॥

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

मणि[1] पछितावउ जादमुराउ, मइयासहु[2] बोल्यउ सतिभाउ ।
इहि मोस्यो बोल्यो अगलाइ[3], अब[4] मारउ जिन जाइ पलाइ ॥
उपनउ कोप भइ चित काणि, धनुष चढाइयउ सारंगपाणि ॥५१७॥
अर्द्ध चंद्र तहि[1] बाधिउ बाण, अद[2] याकउ देखियउ पराणु ।
साधिउ धनियउ[3] दीठउ जाम, कोपारूढ[4] मयण भो ताम ॥५१८॥
कुसुमवाण तव बोलिउ[1] वयणु[2], धनहर छीनि[3] गयउ महमहणु ।
हरि[4] को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनष संचारिउ[5] ताम ॥५१९॥
फुणि[1] कंद्रपु सरु दीनउ छोडी, वहइ[2] धनकु गयो गुण तोडि ।
कोपारूढ कोप[3] तव भयउ, तीजउ चाउ[4] हाथ करि लयउ ॥५२०॥

---

(५१६) तजी (ग) २. जीयडा (ग)

(५१७) १. मनि (ख, ग) २. मइ इहसिउ (ग) मइ सुख (ग) ३. आगलउ (ख) ४. इव (ख) जिन (ग)

(५१८) १. तिनि संध्या वाणु (ग) २. इव इह (ख) इव देखउ इसु तणा निदानु (ग) ३. धणहरू (ख, ग) ४. कोपिरूप (ग)

(५१९) मेलिउ (ख ग) २. चाउ (ख) मयणु (ग) ३. छिन्नउ तव (ग) ४. तव हरि चाउ तूंटिया ताम (ग) ५. चढाया (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण ख प्रति में नहीं है ।

(५२०) १. तव (ग) २. सुहई (ख) ऊभी धणुप गया सो तोडि (ग) ३. विष्णु (ख) विण्डु (ग) ४. कटारा (ग)

मैलइ वाण मयण तुजि चडिउ, सो[1]उ वाण तूटि धर परयउ।
विस्नु सभालइ धनहर तीनि, खिण मयरद्धउ घालइ छीनि ॥५२१॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना।

हसि हसि वात कहै प्रदवणु, तो[1] सम ना[2]ही खत्री कम्वणु।
[3]कापह सीख्यउ पोरिष ठाउणु,मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥
धनुष वाण छी[1]ने तुम तणे, तेउ राखि न सके आपणे।
तो पवरिषु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूंजिउ राजु ॥५२३॥
फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि, जरासंध क्[1]यो मारिउ कांसु।
विलख वदन तव केसव भयउ, दूजउ [2]रथ मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न
प्रकार के वाणों से युद्ध करना।

तहि आरूढो जादौराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ।
[1]अगनि वाणु धायउ प्रजुलंतु, चउदस[2] झल वहु तेज करंतु ॥५२५॥

---

(५२१) १. सोइ धणुष टूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदवणु (ख) २. पंडरून (ग) ३. रहनि भाइ पूरइ महमहणु (ग)

(५२३) १. ढेदे तुहि तणे (ख)

(५२४) १. किम जीतिउ (ख) तइ जीत्या (ग) २. मूल प्रति में 'रथ' पाठ है।

(५२५) १. अगनि वाणु मेलइ महुमहणु (ख) अगनिवाण धाई परजलंत (ग) २. तिहि की झाल न जाई सहण (ख)

मयरद्ध[1] दल चले पलाइ, अमिगिझ[2] लरइ सहण न जाइ ।
डाझहि[3] हय गय रहिवर घणे, उहटे[4] सयन पजूनहा तणे ॥५२६॥

कोपारूढ भयो तव मयणु, ता रणहाक सहारइ कवणु ।
पुहपमाल कर धनहर लीयउ, साधिउ मेघबाण पर ठयउ ॥५२७॥

मेघनादु[1] घनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत ।
पाणी आगि वुझाइ जाम्व, जादम सयन चली वहि ताम ॥५२८॥

रहिवर छत्रजि दीसइ भले,[1] नीर प्रवाह सयल[2] वहि चले ।
हय गय तुरय[3] वहइ असेस, खत्री[4] राणे वहे असेस ॥५२९॥

तव जंपइ महमहण[1] पचारि, कीयह[2] सुक्रम की चालि ।
नारायण मन परचो संदेहु,[3] हुंतो[4] यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥

तव मनह अचंभो भयो, मारुत[1] वाण हाथ करि लयो ।
जवइ[2] वाण धाइयो भहराइ, मेघमाली[3] घानी विहडाइ ॥५३१॥

---

(५२६) १. रउछझल (ख) रूपवंत (ग) २. अग्निवाण रण सहण न जाइ (ग) अगनि झल लख सहणन जाइ (ख) ३. दाझहि (ख) ४. हडरे (ख)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(५२८) १. मेघवाणु (ख ग)

(५२९) १. घणे (ग) २. हुये तंखिणे (ग) ३. रन संवहितउ चले (ग) ४. खत्री वहे जे रण आगले (ग)

(५३०) १. हरिराउ संभालि (ग) २. की यह सुक्रम भउम की गारि (ख) कउ इहु सुकु कय मंगलवालु (ग) ३. वडा (ग) ३. कहा हु तउ इह वरसिउ मेहु (ख) डहु सु कहा ते आया मेहु

(५३१) १. मारची (ग) २. जवहि पवन छूटा तिहिं ठाइ (ग) ३. मेघमाला घाले वहुडाइ (ग)

मायामय[1] सन खर हुडइ, उरइ[2] छत्र महिमंडल परहि ।
चउरंग दलु चलिउ पडाइ,[3] हय[4] गय रह को सकइ सहारि ॥५३२॥

तवइ पजून[1] कोपु मन कियउ, परवत वाण हाथ[2] करि लयउ ।
मेलीउ वाण धनसु कर लयउ, रूधि पवणु आडहु[3] हुइ रह्यउ ॥५३३॥

कोप्यो द्वारिका तणो नरेसु, मयणहि पवरिसु देखि असेसु ।
वज्र प्रहार करइ खण[1] सोइ, पव्वउ[2] फूटि खंड सो[3] होइ ॥५३४॥

देवतु[1] वाणु मयण लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।
तव केसव मन विसमइ होइ, याकौ चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥

अयसउ जुझु महाहउ[1] होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।
दोउ सुहड[2] खरे वलिवंत,[3] जिन्हि[4] पहार फाटहि वरम्हंड ॥५३६॥

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

तवइ कोपि जादौ मनि कहइ, मेरी हाक कवण रण सहइ ।
मोस्यो खेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

---

(५३२) १. माया रूपि पदन संचरइ (ग) २. घर (ग) ३. पलाइ (ग) ४. गयवर के सकउ रहाइ (ग)

(५३३) १. मणि (ग) २. हस्त (ग) ३. घागइ (ग)

(५३४) १. फुणि (ग) २. पर्वत (ग) ३. दुइ (ग)

(५३५) १. देव विमान (ग)

(५३६) १. महो भडि (ग) २. वीर (ग) वलिवंत (ग) ३. जिन्ह घावंता फोडहि ब्रह्मंड (ग)

(५३७) नोट—ऐसा चरण ग प्रति में नहीं है ।

एतहि[१] मयरण पास मुनि जाइ, तिहिस्यो वात कहइ समुभाइ ।
यह[२] तो आहि पिता तुम तरगउ, जिहि[३] पवरिष दीठउ तइ घरगउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्री कृष्ण के पांव पड़ना

तउ परदवगु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ ।
तव[१] नारायरण हसिउ हीयउ, मयरण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥
धनु[१] रूपिरगी जेनि उर[२] धरीउ, धनि सुरयरिग जिरिग अवतरिउ ।
धनिसु[३] ठाउ विराधी गवउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥
धनुष वारगु तिहि घाले रालि, वाहुडि कुवर लैयउ अवठालि[१] ।
जिहि घर आइसो[२] नंदनु होइ, तिहिस्यो[३] वरस लहइ सवु कोइ ॥५५३॥

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिषि वोलइ एम, चलहु नयरि मन भावहु खेव ।
कुवर मयरण घर करहु पएसु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥
नारायरण मन विसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुभि रग गयउ ।
जादम कुटम पडे संग्राम, किम्व मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥
नानारिषि वोलइ वयरण, क्षत्री तूं[१] मोहिरगी सकेलइ मयरण ।
क्षत्री सुहड उठइ वरवीर, रग संग्राम[२] मति साहस धीर ॥५५६॥

---

(५५०) १. नारद मयरिग पास उठि जाइ, (ग) २. इहु सो पिता तु अपि तुम्ह तरगा (ग) ३. तिसु पुरिष क्या वर्णउ घरगा (ग)

(५५१) १. तव नाराइरगु उठइ उछंगि, मयरग साथि भया वहु रंग (ग)

(५५२) १. धन्नि (ख) २. जिनि उदरि धस्यो (ग) ३. धनु सुठाउ जिहि विरधिहि गयउ (ख ग)

(५५३) १. अंकि उचाइ (ख) अकवालि (ग) २. अइसउ (ख) ३. तिहि परमंस लहइ सवु कोइ (ख) तिहि घरि सलह करइ सहु कोइ (ग)

(५५६) तुहु (ख) तू सो (ग) २. संग्रामजि (क ख) संग्रामहि (ग)

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खडा होना

तव मयणधइ[1] छाडचो मोहु, मोहिणि जाइ उतारचो मोहु ।
सैन उठी वहु[2] सादु समुदु, जाणौ[3] उपनउ उथल्यउ समुद्र ॥५५७॥

पांडो[1] उठे सुहड वरवीर, हलहुलु दस दिसा धर धीर ।
छपन कोटि जादव वलिवंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥

हय गय रहवर अरु जंपाण[1], उठे[2] जिमहि सल पडे विमाण ।
सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार[3], उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥

प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयण कुवरू जव दीठउ आनंदिउ[1] हरि राउ ।
लइ उछंगि सिर चुंमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥
भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।
सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंद्रपु घर आयउ ॥
सहुंकारु भणंत देव, जण परियण तुठउ ।
मन आनंदिउ राउ, नयण जउ कंद्रप दिठउ ॥५६०॥

---

(५५७) १. मयरद्धउ छोडइ मोहु (ख) २. भयउ बहु सद्द, (ख) सेना उठि लड़े सरु बुद्ध (ग) ३. जणु पु उछलिउ पलय समुद्द (ख) जाग्या दलु हो [illegible] समुंद्र (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

भेरि तूर बहु बाजहि, कलयरु भयो अनंदु ।
रूपिणि सरिस मिलावऊ, अवहि[1] मिलिउ तहि पूतु ॥
अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु ।
अतुर मल्ल वर वीर, सुयण णयणाणंदणु[2] ॥
चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे ।
कलयलु भयउ बहुतु, ततूर भेरि ताहि बाजे ॥५६१॥
मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिंघासणु आणि ।
मयरद्धउ वयसारियउ पुंनवंत घर जाणि ॥
पुनंवंत घर जाणि, तहरि कंद्रप वइसारिउ ।
मोती माणिक भरिउ थाल आरति उतारिउ ॥
पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ ।
ठयो सिंघासणु आणित, मोती चउक पुरायउ ॥५६२॥
घर घर तोरण उभे मोती वंदनमाल ।
घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार ॥
घर घर मंगलचार नयर जन सयल वधावउ ।
पुंन कलस लइ चली नारि नइ कंद्रप घर आयउ ॥
कामिणी गीत करंति, अगर चंदन बहु सोभे ।
मोती वंदनमाल, घर घर तोरण उभे ॥५६३॥

---

(५६१) अवरू (ख) २. जण (ख)
(५६२) १. घर तोरण उभे नारि
(५६३) १. अखोडि (ख) मूलप्रति में–'मडी' पाठ है। (ख)

चौपई

सयना सयल उठी धर जाम, छपनकोडि घर चाले ताम।
द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुणि सवृ चलिउ अछोहु[1]...॥५६४॥

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

गरुवड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मझारि, मयण किरणि रवि लोपियउ।
चडि[1] अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अविलेखियउ[2]॥
धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण घर अवतरिउ।
सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ।
घर घर तोरण उभे वार, छपन कोडि उछव भयउ॥५६५॥

(५६४) १. अखोडि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहसु सवु करइ लुगाई, बुहला जीतवु आज।
कहइ इव रुकमिणि माइ, परिगहु सवु आइ वइठा।
आनंदा हरिराउ, महसु जव नयणे दीठा॥५६६॥
भेरि तूरि बहु बजहि, कोलाहल बहुत्त।
रूपिणि सरिसु मिलावडा, आइ मिल्याति नुपुत्त।
आमुकट सिरि मोतीमाला, घरि घरि मंगलचार।
जिनसि अडवंरु छत्त, जाणु वरसहि घण गज्जहि।
ऊठ्यो जय जय कार भेरि तूरा बहु बज्जहि॥५७०॥
घरि घरि तोरण लडे, घरि घरि वेद उचारइं।
घरि घरि गुडी उछली, घरि घरि आनंद अपार।
घरि२ नयरि घरि घरिहि बधाया, करहि आरतउ थालि।
भाटु बंभण सहि आया, हसि हसि पूछइ बात।
बहुत परमल तिनि मूलं, सिणगारु तागीता।
घरु घरि तोरण ऊभे..॥५७१॥
दो मोती माणिक भरि थालु, बदइ तिसु तिलकु कराया।
सुर तेतीस रहसु बहु, सिंहासण बइसाया॥५७२॥

चौपाई

सैन्य सबे ऊठी घर जाम, छपन कोडि चले घरि ताम।
कंद्रपु पइठा नयर मझारि, ... ॥५७३॥

(५६५) १. चारि नरवइहि (ख) मूलप्रति में यहि पाठ नहीं है। २. अविलेखिउ (ग)

भयउ उछाहु जगत जागिउ, नयर मंगल किजइ ।
ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सवद वजहि ॥५६६॥
जवइ मयण परिगह गए, घर घर नयरि वधाए भए ।
गुडी उछली घर घर वार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति[1] च्यारि वेद ऊच्चरइ[2], वर कामिणी तह मंगलु करइ ।
पून्न[3] कलस तह[4] लेइ सवारि, आगे होण[5] चली वर नारि ॥५६८॥
नयरि उछाहु करवहु[1] घणउ, जव ते दिठे नयन परदवणु ।
सिंघासण वयसारिउ सोइ, पुरयन[2] तिलकु करइ सवु कोइ ॥५६९॥
दहि दूव[1] सिर आक्षित देइ, मोती माणिक थाल भरेइ ।
कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सो[1] ठाउ जमसंवरु विजाहरु राउ ।
माणिक कंचण माल संजूत, द्वारिका नयरी आइ पहूत ॥५७१॥

---

(५६८) १. वंभण (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछलइ ३. सिंघासन वंसाल्यो सोइ (ग) ४. सिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) देइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ वहु कवणु (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(५७०) १. दहीय दूव (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघुकूट जो ट्ठाउ (ग) तीसरा और चौथा पद्य ख ग प्रति में नहीं है । मूल पाठ विवाह

पवन वेग विजाहरराउ, जिसकी[1] सयनु न सूझइ ठाउ ।

रतिभामा[2] जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मझारि ॥५७२॥

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवरु भेटिउ हरिराउ, वहुत भगति वोलइ सतिभाउ ।

तइ वालउ पालिउ परदवणु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्वणु ॥५७३॥

तव रूपिणि वोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल कँ लागी पाइ ।

किम्वहउं उरणि होउ घर तोहि, पूत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

वहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयण कुवर को ठयउ विवाहु ।

धरि लग्न जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥

हडे[1] वंस त्रि मंडपु ठयउ, वहुत भंती ते तोरणु[2] रहउ ।

कापरछाए वहु विथार, कनक कलस डोलहि सिंहवार[3] ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहण[1] सयल निकुताइ, आगै निमति पुहमि[2] के राइ ।

मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥

अंग वंग कालिंगह[1] तणे, दीप समुंद के भूंजही घणे ।

लाड चोर कानकेजिकीर[2], गाजणवइ[3] मालव कसमीर ॥५७८॥

---

(५७२) १. जिहि कइ सइनि (ग) २. रतिनामा (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हरइ (ग) २. कौतिगुभया (ख) ३. सिंह दुवारि (ख) दीपहि पहि दारि (ग)

(५७७) १. करिसम महण (ख) २. अनेक, पुहमि के आये राइ (ग)

(५७८) १. कालिंगह (ख) तिलंगह (ग) २. कानाडेकिकीर (ख) लाडउ उडक मयक कसमीर (ग) ३. गाजलोर महलिया हुवदेर (ग)

भयउ उछाहु जगत जाणिउ, नयर मंगल किजइ ।
ता संख पूरिहि नाचहि घर, पंच सवद वजहि ॥५६६॥
जवइ मयण परिगह गए, घर घर नयरि वधाए भए ।
गुडी उछली घर घर वार, कामिणी गावइ मंगलचार ॥५६७॥

चौपई

विप्रति[1] च्यारि वेद ऊच्चरइ[2], वर कामिणी तह मंगलु करइ ।
पून्न[3] कलस तह[4] लेइ सवारि, आगे[5] होण चली वर नारि ॥५६८॥
नयरि उछाहु करवहु[1] घणउ, जव ते दिठे नयन परदवणु ।
सिंघासण वयसारिउ सोइ, पुरयन[2] तिलकु करइ सवु कोइ ॥५६९॥
दहि दूव[1] सिर आक्षित देइ, मोती माणिक थाल भरेइ ।
कुमरहि सिर आरति उतारि, दे असीस चालइ वर नारि ॥५७०॥

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

एतहु मेघकूट सो[1] ठाउ जमसंवरु विजाहरु राउ ।
माणिक कंचण माल संजूत, द्वारिका नयरी आइ पहूत ॥५७१॥

---

(५६८) १. वंभण (ग) २. उच्चरहि (ख) ऊच्चरहि (ग) मूलपाठ उछलइ ३. सिंघासन वैसाल्यो सोइ (ग) ४. सिरि (ख) ५. आगइ होइ (ख) देइ असीस (ग)

(५६९) १. कहइ वहु कवणु (ख) २. पुरजण (ख) यह पद्य ग प्रति में नहीं है ।

(५७०) १. दहीय दूव (ख)

(५७१) १. सो ठाउ (ख) सो तेहि मेघुकूट जो ट्ठाउ (ग) तीसरा और चौथा पद्य ख ग प्रति में नहीं है । मूल पाठ विवाह

पवन वेग विजाहरराउ, जिसकी[1] सयनु न सूझइ ठाउ ।

रतिभामा[2] जो कन्ह कुमारि, सो आणी वारमइ मझारि ॥५७२॥

धमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

जमसंवरु भेटिउ हरिराउ, वहुत भगति वोलइ सतिभाउ ।

तइ वालउ पालिउ परदवणु, तुहि समु सुजन नही मुहि कम्वणु ॥५७३॥

तव रूपिणि वोलइ तिहि ठाइ, कनकमाल कँ लागी पाइ ।

किम्वहउं उरणि होउ घर तोहि, पूत भीख दीनी तइ मोहि ॥५७४॥

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

वहु आयउ करि कीयउ उछाहु, मयण कुवर को ठयउ विवाहु ।

धरि लग्न जोइसी हकारि, तव मन तूठउ कन्ह मुरारि ॥५७५॥

हडे[1] वंस त्रि मंडपु ठयउ, वहुत भंती[2] ते तोरणु रहउ ।

कापरछाए वहु विथार, कनक कलस डोलहि सिंहवार[3] ॥५७६॥

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

करिसामहण[1] सयल निकुताइ, आगै निमति पुहमि[2] के राइ ।

मंडलीक जे पुहमि असेस, आए द्वारिका सयन नरेस ॥५७७॥

अंग वंग कलिंगह[1] तणे, दीप समूंद के भूंजही घणे ।

लाड चोर कानकेजिकीर[2], गाजणवइ[3] मालव कसमीर ॥५७८॥

---

(५७२) १. जिहि कइ तइनि (ग) २. रतिनाना (ख)

(५७६) १. हरे (ख) हरइ (ग) २. कौंतिगुभया (ख) ३. तिह दुवारि (ख) दीपहि पहि वारि (ग)

(५७७) १. करिसम लहगु (ख) २. अनेक, पुहमि के भवते राइ (ग)

(५७८) १. कालिगह (ख) तिलंगह (ग) २. कानाडेकिकीर (ख) लाडग उडरु भयज कसमीर (ग) ३. गाजणीर महलिवा वहुवीर (ग)

गूजर तेसो[1] भीजी भए, वेलावल संभरि के भले ।
जिञाहुति[2] कनवजी भले, पुहमि राइ सब निमते गणे ॥५७६॥
संख सवुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि-ताल ॥५८०॥
विप्रति[1] वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।
वहु कलियरु नयरि उच्छलिउ, जव[2] मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥५८१॥
रयणनि[1] जडे[2] छत्र सिर धरइ, कनक[3] दंड चावर सिर ढलइ ।
कनय मुकट सिर उदउ[4] करंत, जाणौ[5] पावय-रवि करण करंत ॥५८२॥
तव वोलइ रूक्मिणी रिसाइ, सतिभामा आणिह[1] केसइ ।
तीनि भवण जउ वरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ तोहि ॥५८३॥
केस उतारि पायँ तल मलइ, फुणि परदवण विवाहणु चलइ ।
एतइ[1] मिलि सयल[2] जनु सव्वु, दुहु नारि करयउ[3] क्षिम तव्वु ॥५८४॥

---

(५७६) १. ते सोरठी जे भले (ख) कनकदेस सोरठ जे भले (ग) २. जोजन देश कनउजी मिले (ग)

(५८१) १. चारउ वेद विप्र ऊचरहि (ग) २. इव (ग)

(५८२) १. रयणीह (ख ग) २. जडित (ग) ३. अणि छत्त सिर ऊपरि धस्यो (ग) ४. उदी (ग) ५. जाणउ नव रवि किरण करंतु (ख) जाणु कि सूर किरण छोडंति (ग) अउर अडंबर वाणी भले दलहि, चउर कटि कउतिग चले यह पाठ ग प्रति में अधिक है ।

(५८३) १. आणहि कराइ (ग) आणीहितु कराइ (ग)

(५८४) १. मिले जउ ताह सयलु जण लोगु (ग) २. विसयल जननु सब (ख) ३. करामउ खिम तव्वु (ख) होइ विवाहु जुड्यो संजोगु (ग)

सयल कुटम मनि भयउ उछाहु, कुम्वर मयरण कउ भयउ विवाहु ।
दइ भावरि[1] हथलेव कीयउ, पारिणगहरणु[2] इम्व कुवरहि लयउ ॥५८५॥
भयउ[1] विवाहु गयउ घर लोगु, करइ[2] राजु वहु विलसइ भोगु ।
देखित[3] सतिभामा गह्वरइ[4], सवतिसालु[5] वहु[6] परिहसु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटरण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मंत्रु[1] आठयउ[2], दिजु[3] वेग खेयउ पाठयउ ।
रयरण[4] सचउ पाटरण तिहि ठाइ, रयरणचूलु तहि निमसइ[5] राउ ॥५८७॥
विज्जु वेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा हो पठयो देव ।
रविकीरति[1] सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, वहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।
वहुत[1] नयर महु करइ उछाहु, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

---

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पारिणग्रहरण जव कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो विवाहु लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज विलसहि वहु भाय (ग) ३. देखन (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहसि भरी (ग)

(५८७) १, मंतु (ख) २. अरठयउ (ख) अरट्ठयो (ग) ३. विज्जु वेगु खयरु पाठयउ (ख) विजइ विगे जोइरण पाठ्ठयो (ग) ४. रमरण संभु पाटरणपुर ठाउ (ख) ५. निवसइ (ख) खगा वंक तिहहि ले आउ (ग) मूलपाठ-विमयइ

(५८८) चाल्यो इवु पवन मनुलाइ. वेगि पहूता तिरण महि जाइ ।
यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तया मूल प्रति का प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में तृतिय चतुर्थ चरण हैं ।

(५८९) १. विद्याधर तुम्हि मिलहु सुरणेहु, धीय सुयंवर भानकउं देहु

माणिउ बोल कुटमु[1] वहु मिलिउ, खगवइराउ मसाहण[2] चलिउ ।
द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु[3] धरचो छवाइ ॥५९०॥

तोरण रोपे घर घर वार, कनक[1] कलस थापे सीहद्वार ।
सयल कुटंव मिलि कीयो उपाउ[2], भानकुवर को भयउ[3] विवाहु ॥५९१॥
पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ ।
राज भोग सव मिलइ मयणु, तहि सम पुहमि न दीसइ कवणु ॥५९२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति

एतइ अवरु कथंतर भयउ, पूव्व[1] विदेह जाइ संभयउ ।
पूंडरीकणी णयरु हइ जहा, खेमंधरु[2] मुनि निमसइ जहा ॥५९३॥
नेम धर्म संजमु[1] जु पहाणु, तहि कहु उपणउ[2] केवलज्ञान ।
आइत[3] स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनिसर सेव ॥५९४॥

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

नमस्कार[1] कीयउ तखीणी, पूजी वात भवंतर तणी ।
पूव सहोवरु मुणि[2] गुणवंतु, सो[3] स्वामी कहिठार उपंत ॥५९५॥

---

(५९०) १. सुपरियरू मिल्यो (ग) २. सुसाहण (ख) विवाहण (ग) ३. तोरण धरे रचाइ (ग) तृतीय एवं चतुर्थ चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

(५९१) १. कामिणि गावहि मंगलचारू (ग) २. उछाउ (ग) ३. हुआ (ग)

(५९२) ख प्रति में यह चौपाई नहीं है । ग प्रति में निम्न चौपाई है ।

इसे अलंवल राजु कराहि, हउसनाक राखहि मनमाहि ।
राजु भोगु सहि विलसहि आगु, नाही कोइ तिन्ह सनमानु ॥६०७।

(५९३) १. पूरव देसि जाइ सो गया (ग) २. खेमधरू (ग)

(५९४) १. तपि क्रिया समान (ग) २. उपजहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग वसइ सो देव (ग) मूलमति में 'पसइ' पार है ।

(५९५) १. नेमसिर की जोति जाण (ग) २. मोहि (ग) मुणहि (ख) ३. सो सामी कहि ठाइ उपन्नु (ख) सो सम्यकवर आहि पहूंत (ग)

संसयहरु[1] फुरिण कहइ सभाउ, भरहखेत सो पंचमु[2] ठाउ ॥
सोरठ देस वारमइ[3] नयरु,[4] तहि समीपु हइ न दीसइ[5] अवरु ॥५९६॥

तहं स्वामी[1] महमहण नरेसु, धर्म्म नेम्म सो करइ असेसु ।
वहु गुणवंत भज्ज[2] तसु तणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५९७॥

तहि घर उपणांउ खत्री मयणु, पुंनवंत जाणइ सव कम्वणु ।
तासु के रूप न पूजइ कोइ, करइ राज धरणि[1] मा सोइ ॥५९८॥

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

निसुणि वयण सुर वइ गो तहा, सभा नारायण वइठो तहा ।
सुरमणि रयणजडिउ जो हारु, सोविसुत आविउ अविचारु ॥५९९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात वतलाना

फुणि रवि सुर वइ लागउ कहण, निसुणि वयंण नरवइ महमहण ।
जिहि तू देइ अनूपम हारु, हउ कूखि लेउ अवतारु ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

तउ मन विभउ[1] जादउराउ, मन सा चित करइ मन भाउ[2] ।
चंद्रकांति मणि दिपइ अपारु, सतिभामा हियह आफहु हारु ॥६०१॥

---

(५९६) १. सोसाइरू (ग) २. वूचइ राउ (ख) भूचइ तिहि ठाइ (ग) मूलपाठ–भूचैठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देवु ५. पूजइ (ग)

(५९७) १. तज महमहणु राउ नरेसु (ग) २. नारि (ग)

(५९८) १. विलसहि महि सोइ (ग)

(५९९) १. देइ नारायणु कहै विचारु (ग) प्रथम तथा द्वितीय चरण के स्थान में निम्न पाठ है–परदवणु दीठा वइट्ठा पासि, पूरव नेह चितु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिमु तिय के कइ गलि घालिहि हारु (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. घरि भाउ (ग)

प्रद्युम्न द्वारा रूक्मिणि को सूचित करना

तवइ[1] मयण मन चमक्यउ[2] भयउ, पवण वेगि रूपिणि पह गयउ।
माता वयण सूझइ तू मोहि, एक अनूपम आफहु तोहि ॥६०२॥

पूव सहोवरु जो मोहि तणउ, सो सनेह वहु[1] करतउ कनउ।
अव[2] मो देउ भया सुरसारु, रयणजडित तिण आण्यो[3] हार ॥६०३॥

अव[1] वह अहारसु पहरै सोइ, तहि[2] घर पूत आइसो होइ।
माता फुडउ[3] पयासहि मोहि, कहहु तहा का-अफामु तोहि ॥६०४॥

तव रूपिणि वोलै मुह चाहि, तू मो एकु सहस वरि[1] आहि।
वहुत पूत मो[2] नाही काज, तू ही एकु मही[3] भूंजै[4] राज ॥६०५॥

जामंवती के गले में हार पहिनाना

फुणि वाहुडी वोलै रूपिणी, जंववती जु वहिण महु तणी।
निसुणि पूत तौहि[1] कहौ विचारु, इनी[2] कउ जाइ दिवावइ हारु॥६०६॥

---

(६०२) १. तांह (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम घणहु (ग) वहु करतौ घणउ (ख) २. इव सो देव भया मुनिसारू (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हारु जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि कइ (ग) ३. कूडुन वोलउ नोहि कहाहि, तहारू हउ दयावाडे तोहि (ग)

(६०५) १. वडि (ग) २. मोहि जाणे काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति राजु (ख)

(६०६) १. तुझ (ग) २. उसकउ (ग)

जामवती का श्रीकृष्ण के पास जाना

तवहि मयणु मन कहइ विचारु, जंववती कहु[1] लेहि हकारि ।
काममूंदरी पहरइ सोइ, वोल[2] रुप सतिभामा होइ ॥६०७॥

न्हाइ धोइ पहरे आभरण, करण कंकरण सोहइ ते रमण[1] ।
तिहिठा[2] वइठे कान्हु मुरारि, तहा गइ जामवंती नारि ॥६०८॥

तउ[1] मन विहसिउ तव[2] मन चाहि, तहा जाणइ सतिभामा आहि ।
वाहुडि कन्ह न कीयउ विचारु, तिहि[3] वछथलि घालिउ हारु ॥६०९॥

घालि हारु आलिगनु कियउ[1], तिहि उपदेस[2] आहि संभयउ ।
फुणि णिय रूपु दिखालि जाम, मन भिंभिउ नारायण ताम ॥६१०॥

वस्तुबंध—

ताम जंपइ एम महमहण ।
मन भिंभिउ विसमउ करइ, जइ यउ चरित सतिभामा जाणइ ।
वैरूप करि मोहणइ जा संवइ आणइ.................॥
जो विहिणा सइ चिंतयऊ, सो को मेटणहारु ।
पुंनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

---

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. वोल रूप (ख) वोले रुप (ग)
(६०८) १. ते रमण (ख) ते रयण (ग) मूलपाठ तान्योरण २. जहिठा (ख ग)
(६०९) १. विगसइ केसव २. इहु (ग) ३. ताह गलइ हंसि घाल्यो हार (ग)
(६१०) १. फरइ (ग) २. ठा ग्राइ देउ संचरइ (ग) उरि देइ (ख)
ग— काम मूंदड़ो घटी उतारि; देखइ राउ जम्ववती नारी ॥
(तीसरे चोथे चरण के स्थान पर है)
(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—
ताम जंपइ जंपइ एम महमहणु मनि विभउ विस्मउ भयो ।
एहु रूप कहि मोहनी, मयणि कुवरि माड्यो विनाणि ।
चरितु सतभामा जाणी, एह काम कहु की कवणु हरिराजा चिति चितवइ ।
जो विहिण लिखु चितवउ सो किउ मोह्यो जाइ ।
जाहि जंववती विलसंतू करहि राज वहु भाइ ॥

चौपई

जव[1] जंवइ पूत अवतरिउ, संवकुम्वारु नाउ तसु धरयउ ।
वहु गुणवंत रूप कउ निलउ[2], ससिहर कान्ति[3] जोति आगलउ ६१२॥

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

एतह[1] पढम सग्गि जो देउ, सुर नर करइ तास की सेव ।
सो तह हुँ तउ आउ खउ चयउ, सतभामा घर नंदण भयउ॥६१३॥

लक्षणवंतु[1] सयल गुणवंत, अति सरूप सो सीलम्वंत ।
नाम कुवर सुभानु तहा[2] चयउ, सतिभामा[3] घर णंदण भयउ ॥६१४॥

दोनु कुवर खरे सुपियार, एकहि दिवस लियउ अवतार[1] ।
दोउ विरधि गए ससिभाइ, दोइ पढै गुणौ इक ठाइ ॥६१५॥

शंवुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

एक[1] दिवस तिनि जूवा ठयो, कोडि सुवंद दाउ तिन ठयउ ।
संब कुवर जीणिउ तहि ठाइ, हारि सुभानुकुवरु घरि जाइ ॥६१६॥

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

तव सतिभामा परिहसु करइ, मन मा[1] मंत्र चित्ति[2] सो[3] करइ ।
करहू खेल कुकडहि[4] वहोडी, जो[5] हारे सा देइ दुइ कोडि ॥६१७॥

---

(६१२) १. जवंवती ए पूत्तु अवतरचो (ग) २. किसु मिले (ग) ३. सूरुन तिसु वडि तुलइ (ग)

(६१३) १. इहु पटमनि संदेह सी वेर, एहुता कर्म संयोगइ देव (ग)

(६१४) १. वत्तिस (ग) २. तसु भया (ग) ३. दुइज चंदु जिउ विरधो गया (ग)

(६१५) १. हथियार (ग)

(६१६) १. हाक्यो सयनु दाउ तिन्हि कियो (ग)

(६१७) १. गहि (ख) महि (ग) २. मूलप्रति में चि पाठ है । ३. विसाधरइ (ग) ४. कूकडन्हवकोडि (ग) ५. वाहुडि दाउ धरचा तिनि फेरि ।

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपरु भिरे ते आइ ।
कुवर[1] भान तणउ गो मोडी, संवकुवर जिणे[2] द्वै कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ[1] मंत ता ओरइ कियउ ।
दूत[2] हकारि पठायो तहा, वहुरि विजाहर निमसइ तहा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी[1] जणाइ सार ।
भणाइ[2] दूतु मनि चिंत्या लेहु, पुत्री एकु ,भानहि देहु[3] ॥६२०॥

सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर[1] मन भयउ उछाहु, दीनि[2] कुवरि भयो तह व्याहु ।
द्वारिका नयरी कलयलु भयो, व्याह[2] सुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर[1] सुभान विवाहै जाम, तव रूपीणि मन चिंतइ जाम ।
दूत वुलाइ मंत्र परठयो[2], रूपुकुवर पास[3] पाठयो ॥६२२॥

---

(६१८) १. सभा नारायणु मुखु चाल्या मोडि (ग) २. जीता दोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संवकुवरु जीति धनु लीया (ख ग)
२. कुवरु सुभानुहि आये हारि, तउ विलखी सतभामा नारि (ख ग)

(६२०) १. विज्जाहर राइ (ग) २. भणौ विपु जिन अनवितु लेहु (ग)
३. देहि (ख ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुचित लेख. पुत्री एकु भानइ लेहि,
पाठ है ।

(६२१) १. विद्याहरु (क) विज्जारु (ख) २. तिम (क) दीनो (ख ग)
३. ।उतिगु लोगु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तव रुपणि मनि उट्ठयो चाउ, हुउ अपणा व्याहउ करिभाउ (ग)
२. तव कियो (क) सठयो (ख) ३. पासहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ख)
कुंडलपुरिहि दूतु पाठयो, जाइ रूपचंदु वीनयउ (ग)

रुक्मिणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंदस्यो कह्यो निरुत्त ।
स्वामी बात सुणो मो तणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ।।६२३।।

संवकुम्वारु[1] कुवर परदवणु, तिहि पवरिसु जाणइ सवु कवणु ।
जइसे तुम स्यो वाढइ[2] नेहु, दुहु[3] कुमार[4] कहु वेटी देहु ।।६२४।।

रूपचन्दु वोलइ तिस ठाइ[1], रूपिणि कहु[2] तू लेइ मनाइ ।
जादौ वंस पूत[3] जो होइ, तिसको[4] वाहुरि धीयको देइ ।।६२५।।

कहइ वात जणावउ[1] समुझाइ, इत्वही कहहि रुकुमिणी[2] जाइ ।
साभडि[3] तइ जु पवाडउ कियउ, वात कहत नहु दूखित[4] हियउ ।।६२६।।

जिणि परिगहु घालियउ अवटाइ, सेसपाल[1] तू गई मराइ ।
अजहु वयण कहइ तू एहु[2], मयणकुवर कहु[3] बेटी देहु ।।६२७।।

---

(६२३) निरुत्त (क) – नोट – प्रथम और द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है । मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. वाधइ (क) ३. देहु (क) दहू (ग) कुवरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. कउ तउ वेटी तेहु (क) स्यउं तू कहइ बुलाइ ३. मूल प्रति में--पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धीयन देई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणणिउ (ख) इहि (ग) २. तू तिन्हस्यउ जाइ (ग) ३. सांभलि (क ख) संभलि करियहु म्हारा किया (ग) ४. फाटइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (ख) मूलपाठ—तूं चल्यो मरवाइ २. महि (ग) ३. कहु (ग) मूलपाठ तू

निसुणि वयण खण चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहूत ।
तुम[1] को वचन कहै समझाइ, सो[2] जण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायण स्यो आयस[1] कहउ, हम[2] तुम माह कमण सुख रहिउ ।
केते[3] अवगुण तुम्हारे[4] लेउ, तुम कहु छोडि डोम[5] कहु देउ ॥६२९॥

निसुणि वात विलखाणी[1] वयण, आसू पातु[2] कीए द्वै नयण ।
मानभंग इहि[3] मेरउ कीयउ, वुरो[4] कियउ मुह दूख्यो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रूपिणी, पूछि वात जननी आपणी ।
कवण वोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ[1] छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जण[2] पाठयो ।
दुष्ट वचन ते कहे वहुत, साले[3] खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

---

(६२८) १. तिहकउ (क) उहकउ (ख) मोस्यउ (ग) २. आइ कहा रुकमिणि के आइ (क) सो ति कहिउ रुकिमिणी सिहु आइ (ख) सो तिन्ह कहे रुकमिणि आइ (ग)

(६२९) १. एसो (क) अइसउ (ख) आइसा चयउ (ग) २. हम तुम्ह आइ सुबइ सा भयउ (ग) ३. कितेक (ग) किते (ख) ४. थारे (ग) ५. डूंम (क ख ग)

(६३०) १. सो विलखी वयण (ग) २. करहि दुह (क) करइ दुइ (ख ग) ३. यहु (क) इति (ख, ग) ४. वुरा वोलु मोस्यउ वोलीया (ग)

(६३२) १. इत्तिउ पूत मंत आठयो (क) मइथिउ पूत वयणु आवयउ (ख) मइथा पुत्र मंतु इहु हुयउ (ग) २. छउ जण पाठयो (क, ख) दूत पाठ्यो (ग) ३. साले खरउ होयइं मोहि पूतु (क) साले खरे मुहि हीय वहूत (ख) सालहि हिये खरे ते पूत (ग)

मइ जाण्योउ मुहि भायउ ग्रहइ, एसी वात निच्चू[1] भउ कहइ ।
विषयवासिरिण[2] मानइ होइ, एसी वात कहइ न कोइ ॥६३३॥

निसुणि वयण परदवनु रिसाइ, हीणु वयण तह वोलइ माइ ।
रूपचंदु रण जिणहु पचारि, पाण[1] रूप छलि परणउ नारि ॥६३४॥

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीणी, सुमिरी विद्या वहुरूपिणी ।
संवु[1] कुवरु परदमनु भयउ, पवण वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३५॥

दोनों का डोम का वेष धारण कर लेना

दीठउ नयरु दुवारे[1] गयउ, डोम रूप दोउ जण भयउ ।
मयण ग्रलावणि करण[2] पठए, सामकुमार[3] मंजीरा लए ॥६३६॥

फिरे वीर चोहठे मझारि, उभे भये जाइ सीहवारि[1] ।
वहु परिवार[2] सिउ दीठउ राउ, तउ कंद्रपु करह ग्रह्माउ ॥६३७॥

---

(६३३) १. नीच (क) नीच स्यों (ग) २. विष्फु सिंघासणि (क) विष्पुसवासिणि (ख) किम वचन सुणि वोलइ सोइ (ग)

(६३४) १. पवनवेग (ग)

(६३५) १. संवु कुवरु परदमणु भयो (क) संव कुवारि कुवरु दुए भए (ग) मूल प्रति में 'स्वामी' पाठ है ।

(६३६) १. द्वारि ग्राइए (ग) २. करि पाठए (क, ख) करणहि हुयो (ग) ३. संवु कुवरि (ग)

(६३७) सीह दुवारि (ग) सीह दुवारि (ख क) २. परियण सिउ (ख) परिगहस्यउ (ग)

गीत कवित जे आदम तणौ, ते कंद्रप गाए सव[1] सुणे ।
अवर गीत सव[2] चीतइ धरणी, जादम राय की सलहण करइ[3] ॥६३८॥

जादम तणउ[1] नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ[2] भयउ ।
वहुत गीत की[3] जाणहु सार, कहा[4] हुते आए वैकार ॥६३९॥

रूपचन्द को अपना परिचय वतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भुंजइ[1] नरायणु जादमुराउ ।
पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोवरि जो तुह तणी ॥६४०॥

तुह्मि सलहण वइ करइ वहूत[1], तिणि राणी पठए[2] दूत ।
तुम्हि उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥

वाले वोलति करहु पम्वाणु[1], सतु वाचीय परि होइ पवाण[2] ।
भाख[3] पालि मन धरहु सनेहु, दोउ पुत्री[4] हमि कहु देहु ॥६४२॥

---

(६३८) १. आपणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति नकि (ग) ३. जादम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग सणे पाठ है तथा चतुर्थ चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) सुणउ (ग) २. मन विलखउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए वहुवार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहा ते आए ए वेकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) वसहि (ख) भूंचइ ताह नारायण राउ (ग)
मूलप्रति में—'वुचइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवंत (क) तोहि सराहण करहि वहूत (ग) २. पठए पे दूत (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइणि था पट्ठया दूतु (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परवाणु (ख) परदमणु (ग) २. प्रवाण (क) परवाणु (ख) सत्य वयण ते होहि परवाणु (ग) ३. भागिवंत (क) भाजि भामिनि (ग) ४. कन्या (ग)

रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

वस्तुवंध---

निसुणि कोपिउ खरउ[1] तहिराउ ।

जाणी वैसुंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु[2] कंपिउ ।

पाणभ[3] वोलत गयउ, एहु वोलते कवणु जंपिउ ॥

लै[4] वाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ ।

जइ[5] जादो वहहि संवल, तोहि छुरावहु आइ ॥६४३॥

चौपई

गीम्व[1] गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार ।

हाथ अलावणि सिंगा[2] लए, हाट चोहटे सव परिरहे[3] ॥६४४॥

तंखण[1] कुवर भइ पुकार, रूपचंद रा[2] जाणी सार ।

हय गय रह[3] सेती पलणाइ, छण इक माह पहुंतउ आइ ॥६४५॥

रूपचंद[1] रा पहुतो आइ, सामकुम्वारु[2] परदमणु जहा ।

एक[3] ताक्क सव एकहि साथ, सागालाए[4] अलावणी हाथ ॥६४६॥

---

(६४३) १. तवहि मनिराउ (ग) २. अति रोस कीए (ग) ३. प्राण जीव (क) पाण जीव (ख) पुणि वोल्यो भ्रिम गयो (ग) ४. लेई वाहरि निगयउ (क) वहि लेहो वहु निग्रहहु (ग) ५. वांह पकडि वन महि धरिउ जैसे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. ग्रीव (क) गावत गाहे करहि पुकार (ख) गीत कवित तिनि काढ वारि (ग) २. अरु गलि जाइ (ग) ३. भरि गए (क ख) भये वृद्धि चौहटे फिराइ (ग)

(६४५) १. पुरवि (क) पुरवरि (ख) पुत्र गुये हंकारि (ग) २. राय जणाई सार (क) कहु दीनी सार (ग) ३. रथ पाइक (ग)

(६४६) आइ पहुतउ तिहा (क) २. संव कुमर परदमण (क) संव्र कुवरू परदौण (ग) ३. एक तक नासरि (ग) ४. गलै अलावण वीणा हाथि (ग)

देखि डोम मन विंभउ[1] राउ, नीघण[2] जाति करउ किम[3] घाउ।
धणुक[4] सधारिण वाण जव हणे, तहि[5] पह अवर मिले चउगुणे ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारूढ मयण तव भयउ, चाउ चडाइ हाथ करि लयउ।
अग्निवाणु दीणउ मुकराइ[1], जुझत षत्री चले पलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, वाधिउ मामू[1] गले दइ पाउ।
लइ कन्या सवु दलु पलणाइ, द्वारिका नयरि पहुते आइ ॥६४९॥
रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा।
रूपचंदु[1] हरि दीठउ नयण, हमइ[2] लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तव हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भाणेजु[1] तिहारउ अहइ।
इहि विद्यावलु पवरिषु घणउ, जिणि[2] जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

---

(६४७) १. विलखो (क) चितइ (ग) विंभिउ (ख) २. निरघण (ख ग) ३. किउ (क) को (ग) ४. धणुप वाण ले हाथि हिणइ (ग) ५. ऊपरि अधिकु चउगणे गिणइं (ग)

(६४८) १. मुकलाइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप ( ) मामा (ग)

(६५०) १. रूपचंद (क ग) २. इहु के वहुतु किया महमहणु (ग)

(६५१) १. यहु भाणजा तुहारा अहइ (ग) २. इहु नुपूतु रूपनिलि तणा (ग) नोट—यह छन्द (क) प्रति में नहीं है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तव हसि माधव कीयउ पसाउ,[1] वाधिउ छोडिउ मनधरि भाउ।[2]
मयरद्ध[3] हसि आकउ भरिउ, पुणि रूपिणि पह[4] घर ले चल्यउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणि का मिलन

भेटीं जाइ वहिंणि आपणी, वहु[1] तकं मोहु धरचो रुक्मिणी।
वहु आदर सीझइ ज्योनार,[2] अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥
भायउ[1] वहिणि भाणिजे भले, भयउ[2] षेमु जइ एकत मिले।
निसुणिं वयण तव भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ[3] विवाहु ॥६५४

प्रद्युम्न एवं शंवुकुमार का विवाह

हरे वंस तव[1] मंडप ठये, वहुत भांति करि तोरण[2] रए।
छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण[3] चले ॥६५५॥

---

(६५२) १. करि मनिचाउ (ग) २. रुपचन्द राउ (ग) ३. मैंराधा हसि अंको भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. वहूता मोह्न करै रुकमिणी (ग) वहुत सनेहु धरिउ रुकमिणी (ख) २. कीजहि जीमणवार (क) साजइ जवनार (ख) रची जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भाणेजे भले (क) मिले (ख) आए वहण भणइ तुम्ह भले (ग) २. भली सरी जो खोमहमिले (ग) ३. हुयो (ग)

(६५५) १. का (ग ख) २. रोपिया (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ 'विमाणा' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रुपचन्द तिव वोलइ वाणि, दोइ कन्या देवउं आणि (ग)

संख भेरि वहु पडह अनंत, महुवरि[1] वेरण तूर वाजंत ।

दे भावरि हथलेवउ भयउ[2], पारिणगहनु[3] चौहुजरण कियउ ॥६५६॥

घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवर कउ[1] भयउ विवाहु ।

सूरिजन जरण ते मन मा रलइ, एकइ सतिभामा[2] परजलइ ॥६५७॥

रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायरण सो घर गयउ ।

कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ॥

एथंतरि[1] मनु धर्म्मह रलो[2], जिरगु वंदुरग कैलासहि चलिउ ॥६५८॥

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध---

ताम चिंतइ कुवर परदवरगु ।

भउ संसार समुदु[1] परिजयनु, धर्म्म[2] दिढु चित दिजइ ।

कैलासहि सिर[3] जिरगवर भुवरग, सुद्ध भाइ पूज्जइ किज्जइ ॥

अतीत अनागत वरत[4] जे दीठे जाइ जिरिंगद ।

जे[5] निपाए जिरगवर भुवरग, धनु धनु भरहं नरिंद ॥६५९॥

---

(६५६) १. मधुरी वीरण ताल वाजंत (क) २. कीया (ग) ३. पारणग्रहरणु करि दुइ परणीया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग आगै दुइ चले (ग)

(६५८) इस पद्य में ६ चरण हैं। १. इत्यंतरि (क) एयंतरि (ख) येवंतरि (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुत्तर तरइ (क) समुदपरि (ग) समुद्दपरि (ख) २. जैनधर्म (क ख ग) ३. सिखर (ख) कविलासह सो सिखरि (ग) ४. वर्त्तति वंदे (क) ५. जेरिण कराए जिरण भवरण ते सव वंदे आनंद (ख) ग प्रति में अन्तिम २ पंक्ति निम्न प्रकार है—

चलिउ ताह जह कम दिजइ फिरि फिरि देखइ जिरण भुवरण ।
वंदइ भावन भाइ जे जिन, आन्या महि रहहि तह महोहुतरवाइ ॥

चौपई

फिरि चेताले वंदे[1] मयण, तिन्हि[2] ज्योति दिपइ जिम्व रयण ।
अट्ठविधि पूजउ[3] न्हवणु कराइ, वाहुडि मयण द्वारिका जाइ ॥६६०॥
इथंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।
तिहि[1] कुरखेत महाहउ भयउ[2], तिहि नेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥
वाहुरि मयण द्वारिका जाइ, भोग[1] विलास चरित विलसाइ ।
छहरस परि सीझइ ज्योनार, अमृत भोजन करै[2] आहार ॥६६२॥
तहा सतखणा धोल[1] हर अवास, निय[2] निय सरसे भोग विलास ।
अगर चंदन वहु[3] परिमल वास, सरस[4] कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी[1] रीति कालुगत गयउ, फुणिर नेमि जिन केवल भयउ ।
समवसरण तव आइ सुणिद, वणवासी[2] अवर सुरिंदु ॥६६४॥
छपनकोटि[1] जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।
समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तहा ॥६६५॥

---

(६६०) १. वंदण करइ (ख) वंदे जाणु (ग) २. तिन्ह की जोति देखइ जिणभाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिन्हि (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छह रुति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. धवल (क ख ग) २. निय पिय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग) ३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ—तंवोल कुसम सर दीस

(६६४) १. अइसी (क ख) इसी (ग) २. भुवणवासी आयो धरिणिंदु (ग)

(३६५) १. सभी जादम मिले (ग)

देवि[1] पयाहिण करिउ वहूत, फुरिण माधव[2] आरंभिउ[3] थुति ।
जय कंदर्प्प खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए[4] सेव ॥६६६॥
जइ कम्मट्ठ दुट्ठ खिउकरण, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।
तुम पसाइ हउ दूतरु तिरउ, भव संसारि न वाहुडि परउ ॥६६७॥
करि स्तुति[1] मन[2] महि भाइ, फुरिण नर कोठि वइठउ जाइ ।
तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि धरइ ॥६६८॥
धर्माधर्म सुणिउ दुठ वयण, आगम तणउ सूणिउ परदवणु ।
गणहर कहु पूछइ षण सिधि, छपनकोटि जादम की रिधि ॥६६९॥
नारायण मरण कहि पासु, सो मो कहु आपहु निरजासु ।
द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य वतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।
वारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥
द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।
मद[1] ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हल्हल[2] उवरइ ॥६७२॥

---

(६६६) १. देव कहीजे कथा वहुत्त (ग) २. आरम्भिउ धुत्त (क) आरंभिउ थोउ (ख) पुणि केसउ आइरयउ धुत्त (ग) ३. मूलपाठ आरंभिउ थुत्र ४. करहि तिसु सेव (ग)

(६६८) १. करिवइ थुति (क) करिव थुत्ति (ख) करिवि थुति (ग) २. मनिमहि (क ख ग) दूसरा और तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(६७०) यह छन्द क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. बलिभद्र (ख) २. छपनकोटि समुद संघरहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तणउ वयण निसुणेइ, तव[1] प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
लावण रुप सरीरह सारु, जम रूठे सो होइ है छारू ॥६८४॥

अवगी माइन कंदलु करइ, माया मोहु मारगु परिहरइ ।
जिन सरीर दुख[1] धरहु वहुत, को मो माइ कवण तुहि पूतु ॥६८५॥

रहटमाल[1] जिउ यह जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहमि अवतरइ ।
पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुज्जण सज्जण लेइ सो चाहि ॥६८६॥

हम तुम सन्मधु पुव्वह[1] जम्म, सोहउ आणि घटाउ कम्म ।
इम्व करि मनु समभावइ ताहि, रूपिणि माइ वहुडि घर जाहि ।६८७।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुझाइ रूपिणि माइ, फुणि णिमि[1] पास वइठउ जाइ ।
देसु कोसु[2] परिहरे असेस, पंचमुवीर[3] उमाले केस ॥६८८॥

तेरह विउ[1] चारितु चरेइ, दह लक्षण विहु[2] धरमु करेइ ।
सहइ परीसह वाइस[2] अंग, वाहिर भीतर छायउ अंग ॥६८९॥

---

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुष्ट

(६८६) १. रहडमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूरव जनमि (ग)

(६८८) १. जिण (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मूठि उपाडे केस (क) पंच मुट्ठि सिर उपडि केस (ख) पंचमरुट्ठमउ लाये केश (ग)

(६८९) १. विरद्धि चारै व्रतु चार (ग) २. वैसु संगु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्मु को किउ विरणासु, उपरणउ केवलु परण निरजासु।
दीठउ लोयरण लोयपमारणु, झायउ[1] चित्तव उच्छउ झारणु ॥६९०॥

तंखरण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर[1] हलहर धरणिंदु।
नारायरण[2] वहु सजरण[3] लोगु, सुरयरणु अछरायरणु वहु भोगु ॥६९१॥

थुरणइ[1] सुरेस्वर वारणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर[2]।
जय कंद्रप हउ मति[3] नासु, जाइ[4] तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६९२॥

इय[1] थुतिवि सुर वइ फुरिण भरणइ, धरणवइ एकु चित भउ सुरणइ।
मुंड केवली रिद्ध विचित्त[2], रचहि खरणंतरि[3] वण्ण विचित्त ॥६९३॥

---

(६९०) १. जो चितवै सोचउ या आसु (ग)

(६९१) १. विद्याधर आया धरि आनन्दु (ग) २. नर सुर को तह हुव संजोग (क) ३. दूमरण (ग)

(६९२) १. सुरणइ नारि सर (क) सुरणइ सुवारणी प्रवरणे अपार (ग) २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोहरणजिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विरणास (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजारण तोडा भव पास (क) जउ भी विया लोया पासु (ग)

(६९३) १. एम भरिणवि सुर सामी भरणइ, धरणवइ एकइ चितइ सुरणइ (क)
इय थुरिण सुरवइ सो फुरिण भरणइ, ध्यावइ नवइ कुइकचिति सुरणइ (ग)

२. पवित्त (ग) ३. पारणरति (ग)

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तरगउ वयरग निसुरोइ, तव[1] प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
लावरग रुप सरीरह सारु, जम रूठे सो होइ है छारू ॥६८४॥
अवगी माइन कंदलु करइ, माया मोहु मारगु परिहरइ ।
जिन सरीर दुख[1] धरहु वहुत, को मो माइ कवरग तुहि पूतु ॥६८५॥
रहटमाल[1] जिउ यह जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहमि अवतरइ ।
पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुज्जरग सज्जरग लेइ सो चाहि ॥६८६॥
हम तुम सन्मधु पुव्वह[1] जम्म, सोहउ आरिग घटाउ कम्म ।
इम्व करि मनु समझावइ ताहि, रूपिरिग माइ वहुडि घर जाहि ।६८७।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

इम समुझाइ रुपिरिग माइ, फुरिग रिगमि[1] पास वइठउ जाइ ।
देसु कोसु[2] परिहरे असेस, पंचमुवीर[3] उमाले केस ॥६८८॥
तेरह विउ[1] चारितु चरेइ, दह लक्षरग विहु[2] धरमु करेइ ।
सहइ परीसह वाइस[2] अंग, वाहिर भीतर छायउ अंग ॥६८९॥

---

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुष्ट

(६८६) १. रहडमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूरव जनमि (ग)

(६८८) १. जिरग (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मूठि उपाडे केस (क) पंच मुट्ठि सिर उपडि केस (ख) पंचमरुट्ठमउ लाये केश (ग)

(६८९) १. विरद्धि चारै व्रतु चार (ग) २. वैसु संगु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्मु को किउ विणासु, उपणउ केवलु षण निरजासु ।
दीठउ लोयण लोयपमाणु, झायउ[1] चित्तव उच्छउ झाणु ॥६६०॥

तंखण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर[1] हलहर धरणिंदु ।
नारायण[2] वहु सजण[3] लोगु, सुरयणु अछरायणु वहु भोगु ॥६६१॥

थुणइ[1] सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर[2] ।
जय कंद्रप हउ मति[3] नासु, जाइ[4] तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६६२॥

इय[1] थुतिवि सुर वइ फुणि भणइ, धणवइ एकु चित भउ सुणइ ।
मुंड केवली रिद्ध विचित्त[2], रचहि खणंतरि[3] वण्ण विचित्त ॥६६३॥

---

(६६०) १. जो चितवै सोचउ पा झातु (ग)

(६६१) १. विद्याधर आया धरि आनन्दु (ग) २. नर सुर को तह हुव संजोग (क) ३. दूमण (ग)

(६६२) १. थुणइ नारि सर (क) थुणइ सुवाणी प्रवरो पवार (ग) २. करहु महु तिमिर (क) जइ जइ मोहरयणिजरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विणास (क) काम मनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडा भव पास (क) जउ भी विधा लीया पासु (ग)

(६६३) १. एम भणिवि सुर सामी भणइ, धणवइ एकइ चित्त सुणइ (क)
इव थुणि सुरवइ सो फुणि भणइ, धणवइ मनइ दृढ चित्ति सुणइ (ग)

२. पवित्त (ग) ३. पाणरति (ग)

ग्रंथकार का परिचय

मइसामीकउ कीयउ वखाण, तुम पजुन [1]पायउ निरवाण ।
अगरवाल को मेरी जात, पुर अगरोए [2]मुहि उतपाति ॥६९४॥
[1]सुधणु जणणी [2]गुणवइ उर धरिउ, [3]सामहराज घरह अवतरिउ ।
[4]एरछ नगर वसंते जानि, सुणिउ चरित [5]मइ रचिउ पुराणु ॥६९५॥
[1]सावयलोय वसहि पुर माहि, [2]दह लक्षण ते धर्म्म कराइ ।
[3]दस रिस मानइ दुतिया भेउ, [4]झावहि चितहं जिणेसरु देउ ॥६९६॥

---

(६९४) १. प्रसाद (ग) २. आगरोवइ (ग) अगरोवइ (ख) निम्न छन्द अधिक है—

विहरइ गाम नगर वहु देस, भविय जीव संवोहि असेस ।
पुणि तिनि आठ कम्म पण कियो, पुण पजुण नियवाणह गयो ॥
हउ मतिहीण विवुद्धि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ वखाणु ।
उछाह मन में कियउ चरित्त, पढमइ उछाइ दे सो वित्तु ॥७००॥

पंडिय जण नमउं कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु खोडि ।
अगरवाल की मेरी जाति, अगरोवे मेरी उतपति ॥७०१॥

पुव्व चरितु मइ सुणे पुराण, उपनउ भाउ मइ कियो वखाण ।
जइ पुहमि इक चित कियो, साई समाइवि लियउ ॥७०२॥

चउपइ वंध सइ कियउ विचित्तु, भविय लोक पढहु दे चित्त ।
हूं मतिहीणु न जाणउ केउ, अखर मात न जाणउ भेउ ॥७०३॥

(६९५) १. सुधनु (ग) २. गर्भु उरि धरचो (ग) ३. साहु महराज (क) समहराइ करिया अवतरचो (ग) ४. एलचि (क) एयरछ (ख) येरस (ग) ५. हम करिउ वखाण (क) मैं कीया वखाणु (ग)

(६९६) १. सवल लोग (ख) सव ही लोक (ग) २. नादहल ते राज कराइ (ग) ३. दरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण नाणहि दूजउ भेउ (ख) दर्शन माहि नही तिन्ह भेउ (ग) ४. जयउ विचित्त (क) ध्यावहि चित्ति (ख) यावहि इक मनि जिनवरु देव (ग)

एहु चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ ।
हलुवइ[1] धर्म्म खपइ सो देव, मुकति वरंगणि मागइ[2] एम्व ॥६६७॥
जो फुणि सुणइ मनह धरिभाउ, असुभ कर्म ते दूरि हि जाइ ।
जोर वखाणइ माणुसु कवणु, तहि कहु तूसइ देव परदवणु ॥६६८॥
अरु लिखि जो लिखियावइ साधु, सो सुर होइ महागुणराधु ।
जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६६९॥

---

(६६७) १. हलुव कर्मु गुणि होइ सो देउ (ख) २. पावइ एउ (ख)
क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६६९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द हैं—

पढहि गुणहि जे चित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे मुखि करइ ।
सुणइ सुणावइ भव्वह लोय, तिह फउ पुत्र परापति होइ ॥७०५॥

ख प्रति—

जु फुणि सुणइ मनह धरि जाउ, जो वखाणइ माणसु कमणु ।
तिस कहु तूसइ सइ देउ परदवणु,........................॥७११॥
अरु लिखि जोर लिखावइ सुद्ध, सो सुर होइ महागुणरिद्ध ।
जोर पढावइ गुण फउ निलउ, सो नर पावइ संजमु भलउ ॥७१२॥
एहु चरितुह पुन्न भडारु, जो नर पढइ हु नर महं सारु ।
तहि परदवणु तूंरं सि फलु देइ, संपति पुत्र प्रवर जसु होइ ॥७१३॥
हउ वुधि हीणु न जाणउ भेउ, अखर मातह मुणिउ नभेउ ।
पंडित जणहं नवउ फर जोडि, हीण अधिक जिन लावहु खोडि ॥७१४॥
इति प्रद्युम्न चरित्रं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु

ग प्रति—

हउ हीण बुद्धि न जाणउ भेव, अखिल मंतु सु मुनिवर भेउ ।
पंडित जन विनवउ कर जोडि, अधिकउ हीणु जिन लावहु खोडि ॥७१२॥
मइ स्वामी पा सीया पसाउ, पंडित जन मति होहु कुभाउ ।
केवल उपजइ गुण संपुंनु, कुलहु धावगउ उपजइ पुन्नु ॥७१३॥
॥ इति परदवणु चउपई समाप्त ॥

यहु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्र अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ वुधिहीणु न जाणों केम्वु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगल्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत् १६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा योग्यदत्तं । श्रेयोस्तु ॥

अन्तिम पत्र

(शास्त्र भण्डार श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्द जी जयपुर के व्यवस्थापकों के सौजन्य से प्राप्त)

हिन्दी-अर्थ

प्रथम सर्ग

स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधारु कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेंद्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका निकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्रेश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में लकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो संसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे क्षेत्रपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थंकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरण से मुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को मन सहित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ पद्मप्रभ और सुपार्श्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(६) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें श्रेयांसनाथ की जय होवे। वासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुंथुनाथ, अठारहवें अरहनाथ, उगनीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिसुव्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये मुझे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र सुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भादव मास की पंचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुणों की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण बाणों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पांचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरुपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र नेमीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्ग्रन्थ गुरु को भाव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जम्बूद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गांव बसे हुये हैं वे नगरों के सदृश लगते हैं। जो नगर हैं वे देव विमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में प्रत्येक मंदिर धवल तथा ऊंचे हैं जिन पर सुन्दर स्वर्ण-कलश झलकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका बारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलश दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौबारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। वहां के किवाड़ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये है तथा मोतियों की वंदनवार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान है जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहां चौरासी बाजार (चौपड) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१६) जिसके चारों दिशा में खूब गहरा समुद्र हैं जिसका जल चारों ओर झकोला मारता है। जहां करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी वह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग सुख पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब वह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। वह तीन खण्ड का चक्रवर्ती राजा शत्रुओं के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन श्रीकृष्ण पूरी सभा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहां खाली स्थान नहीं सूझ रहा था। अगर आदि सुगन्धित पदार्थों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चंवर) शिर पर ढुल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रकार के (सितार, ताल, झांझ, नगाड़ा तथा तुरही) बाजे खूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पायल पहने हुये भाव भरती हुई नृत्य करने वाली ताल, विनोद एवं कला का अनुसरण करती हुई पांव धर रही थी।

नारद ऋषि का आगमन

(२५) इतने में हाथ में कमंडल लिये हुए मुंडे हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये प्रसन्न मन राजर्षि नारद वहां जा पहुँचे।

(२६) श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया। एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहांसे हुआ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्य-लोक के जिन मन्दिरों की वन्दना करने गये थे। द्वारिका दीखने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहां पधारे। हे नारद ऋषि ? आपने हमारे ऊपर कृपा की। आज यह स्थान पवित्र हो गया।

(२९) वचनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हंसने लगे तथा उनने सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी। नारद जी आशीर्वाद देकर खडे हो गये और फिर रणवास में चले गये।

(३०) जहां सत्यभामा शृंगार कर रही थीं तथा आंखों में काजल लगा रही थी। चन्द्रमा के समान ललाट पर जब वह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहां पहुँचे।

(३१) हाथ में कमण्डल लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे। वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई। उस मंद-बुद्धि ने कुतर्क किया कि यहां पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है।

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे। सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा। तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उसे सहन नहीं कर सके। तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये।

(३४) विना ही बाजा के जो नाचने लगता है यदि उसको बाजा मिल जावे तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उसे बिच्छू खा जाय ? एक तो नारद और फिर वह क्रोधित होकर चलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्वत के शिखर पर जाकर बैठ गये । वहां बैठे हुये मन में सोचने लगे कि सत्यभामा का किस प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी । मैं सत्यभामा का अभिमान कैसे खण्डित करूं ? या तो किसी से इसको भयभीत कराऊं अथवा इसको शिला के नीचे दाब कर छोड दूं लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा । अन्त में यह विचार किया कि जो इससे भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे ।

(३७) तब वे गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख डाले ! एक सौ दस जो विद्याधरों की नगरियां थी उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख डाला ।

नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई रूपवती कुमारी दिखाई नहीं दी । फिर नारद ऋषि वहां आए जहां विद्याधर की नगरी कुण्डलपुरी थी ।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को खूब जानता था । जिसके अनेक लक्षणों से युक्त रूपवान पुत्र एवं पुत्री थी ।

(४०) दृष्टि फैलाकर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाता की कृपा से संयोग मिल जावे तो इसका नारायण से सम्बन्ध हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य हैं ।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आशीर्वाद देकर रणवास में गए । उसी क्षण उनको कुरङ्गदृगी और कुमारी रुक्मिणी दिखाई पड़ी ।

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) वह अत्यन्त रूपवती तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान मुख वाली वह ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा हो। हंस के समान चाल वाली वह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुंदरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रख दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अब आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके वचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन खण्ड का जो चक्रवर्त्ति है तथा छप्पन करोड यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोडकर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं मेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड दो, नारायण ही रुक्मिणी को व्याहेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रसन्न हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी ! सुनो और सत्यभाव से कहो। वह युक्ति बताओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नंदनवन को संकेत-स्थल बनाना, वहीं पर मैं तुमसे (श्रीकृष्ण) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) तब देवांगना सदृश रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णमुरारी को कौन पहिचानेगा तब सुविज्ञ नारद ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा बलिभद्र जिसका भाई है। अपने बाण से जो सात ताल वृक्ष को बींधता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार बात निश्चित करके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहां आए जहां नारायण सभा में बैठे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे उससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामबाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विद्याधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) उसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर संकेत-स्थल है उसी स्थान पर लाकर भेंट कराऊंगा।

श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर एवं सारथी को बिठाकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(५६) तब सारथी ने क्षण भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुण्डलपुर पहुँच गया। जहां वन में मन्दिर था वहीं पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा समाचार भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नंदनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हंसी। मोती एवं माणिक आदि से थाल भरा, बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहां जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल वृक्षों को बाणों से वींधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूंदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूंदड़ी फूट कर चून हो गई मानों गरहट के नीचे चांवलों के कण पिस गये हो।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दबाया। दबाने से सातों सूधे हो गये और बाणों ने सातों ही ताल वृक्षों को वींध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

वनपाल द्वारा रुक्मिणी-हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिसमें शक्ति हो वह आकर छुडाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढा लिया तथा उसने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शंकित हो गया तथा महिमंडल थर थर कांपने लगा। महिलाओं ने जाकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में खड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) तब भीष्मराव मन में कुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा बजने लगा। घोड़ों पर काठी कसो, हाथियों को रवाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर जीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज रण में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करें।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराव दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उछली कि मानों भादौं के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) ढुलते हुये राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हो। अथवा ढुलते हुए राज-चिन्ह चँवर ऐसे मालुम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार की सेना इकट्ठी होकर वायु-वेग के समान रणभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुवा दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ डर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! रण में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ? धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखलाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) बात कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार भेंट हुई जैसे अग्नि में घी पड़ा हो। हाथ में धनुषबाण संभाल लिया। अब संग्राम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के वचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया यही तुमने उपाय किया। अब तुम मिल गये हो; कहां जाओगे ? अब मार कर ही रहूँगा।

(७७) जब दुष्ट ने दुर्जनतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(७८) हकाल और ललकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो। तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया।

(७९) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोडे। तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया।

(८०) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया। फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था।

(८१) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे। युद्ध बढता ही गया बंद नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(८२) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है। तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया।

(८३) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया। रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहां से भागने लगी।

(८४) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराव की रक्षा करो। मन में वैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो।

(८५) तब नारायण ने कृपा करके बंधे हुए भीष्मराव को छोड दिया। रूपचन्द से गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुडकर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा। जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे।

(८७) तब उनके मन में बडी खुशी हुई। आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें। भ्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं।

(८८) बांसों का मंडप बनाया तथा भाँवर देकर हथलेवा किया। पाणिग्रहण करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके पश्चात् कृष्णमुरारी अपने घर रवाना हो गये।

श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि यादवों ने मिलकर उत्सव किया। घर घर में गुडियों को उछाला गया तथा तोरण एवं बंदनवार बांधी गयी।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर में प्रविष्ट हुए। स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए। सत्यभामा की चिंता छोड दी। सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त डाह से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी।

सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां बलिभद्रकुमार बैठे हुये थे। शीश झुकाकर उसने निवेदन किया कि हे देव! मुझे सत्यभामा ने भेजा है।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते।

(९४) वचनों को सुनकर हलधर वहां गये जहां नारायण बैठे हुये थे। हंस करके उन्होंने अत्यन्त विनय पूर्वक कहा कि तुमको सत्यभामा की सँभाल भी करनी चाहिये।

(९५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूंठा उगाल गांठ में बांधा कर वहां पहुँचे जहां सत्यभामा का मन्दिर (महल) था।

(९६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्षा से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड दिया है।

(९७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया। फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गांठ को झुलाकर खाट के नीचे लटका दी।

(९८) जब गठरी को झूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला। गठरी से बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी। तब सुगंधित वस्तु को देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली।

(९९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है। तुम अपने सब झंझटो को गया समझो।

सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा सत्यभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ। तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उससे तुम्हारी भेंट कराऊंगा।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये। और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाडियां है। चलो आज वहां जीमण करें।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालकी पर चढकर बगीची में गये। जहां बावडी के पास अशोक वृक्ष था वहीं रुक्मिणी को उतार दिया।

(१०३) श्वेत वस्त्र, उज्वल आभूषण तथा हाथों में कडों से सुशोभित रुक्मिणी को देवी का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और जाप जपने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को वहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर वाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली–हे स्वामिनी! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगें।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मिणी पति प्रेम से वंचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या वाय लग गई है? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी अधिक भक्ति क्यों कर रही हो? यह आले में (ताक) में रुक्मिणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, वह रुक्मिणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्वालवंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मिणी से कहा---चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गई। सब सुख भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निकल गये तब दोनों रानियां गर्भवती हुईं।

(११२) तब सत्यभामा ने एक बात कही कि जिसके पहिल पुत्र उत्पन्न होगा वह जिसके पीछे पुत्र उत्पन्न होगा उसे हरा देगी। तथा वह उसके पुत्र के विवाह के समय सिर के केश भी मुंडवा देगी।

(११३) बलिभद्र आकर सत्यभामा और रुक्मिणी के लागना (साची) बन गये। दोनों ने उनसे कह दिया तुम हमारा पक्ष मत करना। जो भी हार जावे उस ही के सिर आकर मूंड देना।

(११४) इधर कौरवों ने दूत भेजा वह नारायण के पास पहुँचा। उसने कहा कि आपके जो बड़ा पुत्र उत्पन्न हो उसके जन्म की सूचना दूत के हाथ भिजवा देना।

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

(११५) इस प्रकार बहुत दिन बीतने पर दोनों ही रानियों के पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों ही घरों में इस प्रकार लक्षणवान् एवं कला संयुक्त पुत्र हुए।

(११६) सत्यभामा का (दूत) बधावा लेकर गया और वह जाकर सिर की ओर खड़ा हो गया। रुक्मिणी का बधावा लेकर जाने वाला दूत पैरों की ओर जाकर बैठ गया।

(११७) नारायण जगे और बैठे हुये। उस समय रुक्मिणी के दूत ने बधाई दी। दूत हंसता हुआ हाथ जोड़ कर बोला-रुक्मिणी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है।

(११८) दूसरे दूत ने भी बधाई दी और नारायण से निवेदन किया कि हे स्वामिन्! मुझे तुम्हारे पास यह सूचना देने के लिये कि सत्यभामा के पुत्र उत्पन्न हुआ है, भेजा है।

(११९) तब श्रीकृष्ण ने हलधर को बुलाया और जो बात हुई थी वह उनसे बैठाकर कह दी। झूंठ बोलकर कैसे टाला जा सकता है। प्रद्युम्न ही बड़ा पुत्र है।

(१२०) दोनों रानियों के पुत्र उत्पन्न हुये। इससे घर घर बधावा गाये जाने लगे। सभी मंगलाचार गाने लगे और ब्राह्मण वेद मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

(१२१) भेरी एवं तुरहि खूब बजने लगे। महुवर एवं शंख के लगातार शब्द होने लगे। घर घर में केशर अथवा रोली के चिन्ह लगाये गये तथा स्त्रियां अपने २ घरों में मंगल गीत गाने लगीं।

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। यक्ष कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रछन्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहां वन में शिला रक्खी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूं। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूं? इतने में ही उसने एक ५२ हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूं जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं मेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्मों को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहां सो रही थी वहां जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुशी हुई और उसने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। छप्पन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं पता नहीं चला।

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) मेघकूट नामक एक स्थान था जहां यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास बारह सौ विद्यायें थी। तथा जिसकी कंचनमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन वन क्रीडा को हुआ तथा विमान पर चढकर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहां वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दबा हुआ था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी बावन हाथ ऊंची (लंबी) शिला को देखी। वह क्षण में ऊंची तथा क्षण में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बत्तीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कंचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण छन्द एवं तर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुप एवं बाण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिडना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न कुमार को हो गया।

(१३६) प्रद्युम्न ऐसा वीर बन गया जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह यमसंवर के घर बढ़ रहा है। अब यह कथा द्वारिका जा रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन कृष होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विधाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू बहते हुये कभी थकते न थे। पूर्व जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सम्हालूं ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ? अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और घी चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण से मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी सन्ताप कर रही थी उस समय नारायण एवं बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे–हे सुन्दरि ? मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रद्युम्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे श्मसान में से गीध उठावेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के खेद को भूल गयी। इस प्रकार दुखित होते हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४६) जिसका सिर मुंडा हुआ है तथा चोटी उड रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी—हे स्वामी ! मेरे प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया ?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐसा (पुत्र) हुआ था। किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलाश कीजिये।

(१४६) नारद ने तब हंसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला। स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी अथवा आकास में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा।

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने समझाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंधर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है।

(१५१) नारद ऋषि सीमंधर स्वामी के समवशरण में गये। वहां चक्रवर्त्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। नारद से वृत्तांत सुनकर चक्रवर्त्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं।

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है। वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो। जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहां एक बावन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दबा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र वैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहां विद्याधरों का राजा रहता है। कालसंवर राजा वहां आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहीं पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। वह बारह वर्ष वहां रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) वचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहां आये जहां मेटकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहां जाकर रुक्मिणी से मिले और उसको पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी। हृदय में संताप मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा सेंवार फिर से हरे भरे हो जावेंगे! स्वर्ण-कलश जल से पूर्ण सुशोभित होने लगेंगे। कूप एवं बावड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृक्षों में फूल आ जावेंगे। जब तुम्हारे आंचल पीले पड़ जावेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध झरने लगेगा तब वह साहसी और धीर वीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण बता कर नारद मुनि वहां से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। वह पक्ष; मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अब कथा का क्रम प्रद्युम्न की ओर जाता है।

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहां एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने उपाय सोचा कि इसको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जीतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीड़ा ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पास नहीं आया। तब हंसकर प्रद्युम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिंहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम बच्चे हो अभी तुम्हारा अवसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूं।

(१६८) (प्रद्युम्न ने कहा)--बाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का बच्चा भी यदि डस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) सिंहनी बालसिंह को पैदा करती है वही हाथियों के झुंड को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी वन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किसी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्र रूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) वैसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं शत्रुओं के दल का डटकर नाश करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊं तो आपको लजाऊंगा।

(१७२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर कृपा की। जब यमसंवर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरंगिनी सेना को सजा कर रवाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरही बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उछलकूद होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौदे तथा काठियां रख दी गयीं। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहरथ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उछलने लगी। सजे हुये रथों के साथ जो बाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हो। उसके प्रबल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे सब वीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर सिंहरथ कहने लगा यह बालक कौन है? इस बालक को रण में किसने भेज दिया है? मुझे इसके साथ युद्ध करने में लज्जा आती है।

(१७७) बार बार में मुड़ २ कर राजा ने कहा कि वह इस बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार! तुम वापिस घर चले जावो।

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न क्रोधित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अच्छी तरह से तुम्हारा नाश करूंगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली। मेघ के समान निरन्तर बाणों की वर्षा होने लगी। सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड गये। रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे।

(१८०) हाथियों से हाथी भिड गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े। इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये। वह युद्ध क्षेत्र श्मशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे।

(१८१) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर रण में भिड गये। दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये। दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे।

(१८२) वे दोनों ही वीर मल्लयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अखाड़ा बना दिया। अन्त में सिंहरथ बिलकुल हार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया।

(१८३) जब प्रद्युम्नकुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे। सिंहरथ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुणवान कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनंदित हुये। राजा भी देखकर आनंदित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस अवसर पर बड़ी कृपा की है। मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो।

(१८४) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो। विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंहरथ राजा को छोड दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंहरथ भी भेंट देकर घर चला गया।

(१८५) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया। राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि दत्तक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे।

(१८६) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि अब इसको समाप्त करना चाहिये। अब इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिससे हमारा राज्य निष्कंटक हो जावे।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८७) इस युक्ति को कोई प्रकट न करे। प्रद्युम्नकुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर सलाह की और खेलने के बहाने से वन-क्रीडा को चले।

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर है जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा। परकोटे पर चढ़कर वीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुंकारते हुये मिला।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड गया तथा पूंछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया। उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यक्ष का रूप धारण कर खड़ा हो गया।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे। जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे।

(१९२) (और कहा कि) कृष्ण के घर उसका अवतार होगा। तुम प्रद्युम्न को देख लेना। उस राजा की यह धरोहर है। इसलिये अपनी विद्यायें सम्भाल लो।

१६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोपिणी ४. रत्नदर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यातारणी १२. वहुरूपिणी १३. जलवंधिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बंधिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया। मुकुट सौंप कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढा। वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पांच सौ भाई हंस रहे थे।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ। वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लेजा कर दूसरी गुफा दिखाई।

(१९८) उस गुफा का नाम काल गुफा था। कालासुर दैत्य वहां रहता था। पूर्व जन्म की बात को कौन मेट सकता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया।

(१९९) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रख दिये ।

(२००) हंसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किंकर वन कर उसके पैरों में गिर गया। फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा। उस साहसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया। एक भयंकर सर्प घनघोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया। नागशय्या, वीणा और पावड़ी ये तीन विद्याएं उसके सामने रख दी।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहां से लाभ हुआ। फिर वहां से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहां के रक्षक दौड़े और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वज्र को कौन झेल सकता है? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जो सर्प के मुख में हाथ डाल सकता है।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं। वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको मगर से चिन्हित एक ध्वजा दी।

(२०८) इसके पश्चात् जब वह वीर हृदय में साहस धारण कर अग्नि-कुण्ड में गया तो वहां का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये।

(२०६) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव बंदर का रुप धारण कर वहां आ पहुँचा ।

(२१०) आम तोड़ने वाला तू कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूझकर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उद्दण्ड हाथी चिंघाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मदोन्मत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमार से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूंड तोड दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा ।

(२१४) इसके पश्चात् प्रद्युम्न को वे बावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी बंबी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उसमें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) वह उग्र सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विषधर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूंदड़ी एवं छुरी दी।

(२१६) मलयागिरि पर्वत पर जब वह गया तो आश्चर्य से वहां खड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह से संघात (वार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उसकी सेवा करने लगा। उसने कंकण की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिर का मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) वरहासेन नामक जहां गुफा थी वहां उन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई व्यंतर देव था जिसने क्षण भर में वराह का रुप धारण कर लिया।

(२१६) वह वराह रुप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसकेदांतों से भिड़ गया तथा घात करने लगा। देव ने फूलों का धनुप एवं विजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहां दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बंधा हुआ था।

(२२१) बंधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब वसंतराज के मन में बड़ा उत्साह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहां एक यक्ष आ पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-बाण नामक बाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहां खड़ा हो गया। जहां तमाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहां चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) वसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार ! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न वहां गया जहां उसके पांच सौ भाई खड़े थे।

(२२९) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुंह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण वीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहां भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहंकार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान अरिहन्तदेव ने कहा है कि इस संसार में पुण्य बड़ा बलवान है। पुण्य से ही सुर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुक्मिणी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर बढ़ा और महान् पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने बिना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, छत्र, मुकुट, रत्नों से जटित नागशय्या, वीणा, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शेखर हार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुष्प धनुष, हाथ के कंकण, छुरी, कुसुमत्राण, कानों में पहिनने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर वश में करना, रत्नों के युगल कंकण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और क्षण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहां जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्ति-पूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३९) उस श्रेष्ठ वीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामवाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहां पहुँचा जहां उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये ।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे आंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूँ।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही वात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहां यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुक्मिणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी माता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहां से हर लिया और शिला के नीचे दवाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहां से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो ।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें अंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्व जन्म का सम्बन्ध है। यदि वह तुम्हारे प्रेमरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विधायें प्राप्त करलो ।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहां से लौट गया तथ कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विद्याएं दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) कुमार से प्रेमरस की वात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विद्यायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन दांव पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूं।

(२४६) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर को कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुरेच लिया तथा केश बिखेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पांच सौ कुमार वहां आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे बिगाड़ कर चला गया।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

(२५३) वचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रज्वलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पांच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की इच्छा पूरी हुई। इससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साहसी और धीर वीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४६६ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२५७) उसने एक कुमार को छोड दिया कि जाकर राजा को सारी बात कह दे और कहला दिया कि अगर तुम में साहस हो तो सभी दलबल को लेकर आ जावो।

(२५८) यमसंवर राजा बैठा हुआ था वहां वह कुमार भाग कर पुकारने लगा कि सभी कुमारों को बावड़ी में डालकर ऊपर से वज्र शिला डाल दी है।

जमसंवर और प्रद्युम्न के मध्य युद्ध

(२५९) वचनों को सुनकर राजा बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने विचार किया कि आज प्रद्युम्न को समाप्त कर दूंगा। रथ हाथी को सजा लिया गया तथा घोड़ों पर काठी एवं हाथी पर झूल रख दी गयी।

(२६०) धनुषधारी, पैदल चलने वाले, खड्गधारी तथा अन्य सारी फौज को चलने में जरा भी देर नहीं लगी। प्रद्युम्न ने सेना को आते हुये देखकर मायामयी सेना तैयार करली।

(२६१) यमसंवर की बलशाली सेना वहां जा पहुँची तथा एक दूसरे को ललकारते हुये मदोन्मत्त होकर परस्पर भिड गई। युद्ध में राजा से राजा भिड गये तथा पैदल से पैदल लड़ने लगे।

(२६२) यमसंवर हार गया तथा उसकी चतुरंगिनी सेना को मार कर गिरा दिया गया। तब विद्याधर राजा बड़ा दुःखी हुआ और अपना रथ मोड करके नगर की ओर चल दिया।

(२६३) जब वह अपने महल में पहुँचा तो कालसंवर ने कनकमाला से जाकर यह बात कही कि तीनों विद्यायें मुझे दे दो।

(२६४) वचन सुनकर वह स्त्री बड़ी दुःखी हुई तथा ऐसी हो गई मानों सिर पर वज्र गिर गया। हे स्वामी! उन विद्याओं का तो यह हुआ कि मुझ से प्रद्युम्न छीन ले गया।

(२६५) स्त्री के वचन सुनकर उसका हृदय कांप गया और उसके होश उड गये तथा हृदय विदीर्ण हो गया। मुझ जैसे व्यक्ति से भी इसने झूंठ बोली। वास्तव में प्रेम रस में डूबने के कारण इसने तीन विद्याएं उसको दे दी और मुझ से अब छल कर रही है कि कुमार छीन कर ले गया।

(२६६) उसका चरित्र देखकर राजा बोला कि अब उसकी (राज़ा की) मृत्यु का कारण बन गया। जो मनुष्य स्त्री में विश्वास करता है वह विना कारण ही मृत्यु को प्राप्त होता है। स्त्री का चरित्र सुनकर वह विद्याधरों का राजा व्याकुल हो गया।

स्त्री चरित्र वर्णन

(२६७) स्त्री झूंठ बोलती है और झूंठ ही चलती है (आचरण करती हैं) वह अपने स्वामी को छोडकर दूसरे के साथ भोग विलास करती है स्त्री का साहस दुगुना होता है अतः स्त्री का चरित्र कभी भुलाने योग्य नहीं है।

(२६८) उसके मन में सदैव नीच बुद्धि रहती है। उत्तम संगति को छोडकर नीच संगति में जाती है। उसकी प्रकृति और देह दोनों ही नीच हैं। स्त्री का स्वभाव ही ऐसा है।

(२६९) उज्जैनी नगरी जो एक उत्तम स्थान था वहां पहिले बिंव नामका राजा स्त्री पर खूब विश्वास करता था इस कारण उसे अपना जीवन ही समर्पण करना पड़ा।

(२७०) दूसरे यशोधर राजा हुए जो कि अपनी पटरानी महादेवी से नाश को प्राप्त हुये। उसने राजा को विष पूर्ण लड्डू देकर मार दिया और स्वयं कुबडे से जाकर रमने लगी।

(२७१) अब तीसरी स्त्री की बात सुनिये। पाटन नामका एक स्थान था उस काल में वहां 'हया' नामका सेठ था जिसके 'तीनि' नाम की सुन्दर स्त्री थी।

(२७२) एक बार वह सेठ व्यापार को गया हुआ था। तब किसी ने उसे जीभ के वशीभूत कर लिया। सेठ की मर्यादा छोडकर उसने एक धूर्त्त को अपने यहां लाकर रख लिया।

(२७३) अपने पति के प्यार को छोडकर उस आये हुये धूर्त को उसने भर्त्तार बना लिया। इस प्रकार स्त्रियों के साहस का कोई अन्त नहीं है। इन स्त्रियों का चरित्र कितना कहा जाय।

(२७४) अभया रानी की नीचता के कारण सुदर्शन पर संकट आया तथा उसी के कारण महायुद्ध हुआ और अन्त में सुदर्शन को तपस्या के लिये जाना पड़ा।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बढ़ी थी वह सूपनखा को लेकर ही बढी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध ठहरा। उसमें अठारह अक्षौहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं मेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रद्युम्न ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं मेट सकता। सज्जन भी वैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोप नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुप के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन बिछुड जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है ? फिर वह राजा वापिस मुडा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुप की टंकार की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों वीर रण में आकर भिडे तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि असमय में बादल खूब गर्ज रहे हों।

(२८२) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपाश को फेंका। पूरा दल नागपाश द्वारा दृढता से बांध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(२८३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसंवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२८४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लडाई? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड रहे हो?

(२८५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसंवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२८६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका सिर चूम लिया। राजा को बहुत पछतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२८७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर सब की मूर्च्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुडा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२८८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उसी समय कहा कि तुम्हारी घर प्रतीक्षा हो रही है।

(२८९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही घर की ओर मुंह करलो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२९०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हंसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परणावेगा?

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना

(२९१) नारद ने क्षण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हंसी में तोड डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२६२) जब नारद दुःखित मन हुये तो मदन ने हंस करके उपाय किया और माणिक और मणियों से सज्जित एक विमान क्षण भर में तैयार कर दिया।

(२६३) प्रद्युम्न ने जिस विद्या बल से विमान को रचा था उस विमान ने अपनी कान्ति से सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति को भी फीका कर दिया। वह ध्वजा, घंटा एवं झालर संयुक्त था। उस पर नारायण का पुत्र प्रद्युम्न चढा।

(२६४) चढने के पूर्व कालसंवर को बहुत समझा करके अति भक्ति भाव से उसके चरणों का स्पर्श किया। कुमार ने तब क्षमा याचना की और कंचनमाला के घर गया।

(२६५) कुमार प्रद्युम्न एवं नारद मुनि विमान पर चढ़ कर आकाश में उड़े। बहुत से गिरि एवं पर्वतों को लांघ करके जिन मन्दिरों की वन्दना की।

(२६६) फिर वे वन मध्य पहुँचे तो उस स्थान पर उदधि माला दिखाई दी। प्रद्युम्न को मार्ग में बरात मिली जो भानुकुमार के विवाह के लिये द्वारिका जा रही थी।

(२६७) नारद ने प्रद्युम्न से बात कही कि यह कुमारी पहिले तुम्हीं को दी गयी थी। तुमको जब धूमकेतु हर ले गया तो उसे अब भानुकुमार को दे दी गई है।

(२६८) नारद ने कहा कि इसमें मुझे दोष कोई नहीं मालूम होता है। यदि तुम्हारे में शक्ति है तो इसको जबरन ले लो। ऋषिराज के वचनों को मन में धारण करके उसने अपना भील का भेष कर लिया।

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना

(२६९) हाथ में धनुष तथा विपाक बाण ले लिया और उतर कर उनके साथ मिल गया। पवन के वेग के समान आगे जाकर उनका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया।

(३००) मैं नारायण की ओर से कर लेने वाला हूँ इसलिये मेरी अधिक लाग है वह मुझे दो। जो मेरे योग्य अच्छी चीज है वही मझे दे दो जिससे मैं सब लोगों को जाने दूं।

(३०१) महिलाओं ने कहा कि हमारी बात सुनो तुम कौनसी बड़ी वस्तु मांगते हो। धन सम्पत्ति सोना जो चाहे सो ले लो और हमको आगे जाने दो।

(३०२) भील ने क्रोधित होकर उनको जाने दिया तथा कहा कि ऐसे जाने से क्या लाभ है। जो भली वस्तु तुम्हारे पास है वही मुझे दे दो और आगे बढो।

(३०३) तब महिलाओं ने उसका मुंह देख कर कहा कि एक कुमारी जो हमारे पास है उसको तो हरि के पुत्र भानु से सगाई कर दी गयी है। अरे भील ! तुम और क्या मांग रहे हो।

(३०४) उस भील वीर ने कहा यही (कुमारी) मुझे दे दो जिससे मैं आगे तुमको मार्ग दूं। महिलाओं ने क्रोधित होकर कहा कि अरे भील यह कहना तुझे उचित नहीं है।

(३०५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर विचार करके कहने लगा कि मैं नारायण का पुत्र हूँ इन वाक्यों में तुम सन्देह मत करो और उदधि माला को मुझे दे दो।

(३०६) महिला ने कहा कि हे नटखट तुम झूंठ बोलने में बहुत आगे हो। जो तीन खंड पृथ्वी का राजा है क्या उसके पुत्र का ऐसा भेष होता है ?

(३०७) तब वे सीधे मार्ग को छोडकर टेढे मेढे मार्ग से चले तो उधर भी दो कोडी (४०) भील मिल गये। सधारु कवि कहता है कि तब भील ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पूर्वक छीन लूं तो मेरा दोष मत समझना।

प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला को बलपूर्वक छीन लेना

(३०८) तब उसने कुमारी को छीन लिया और मुड करके विमान पर चढ़ गया। भील को देखकर वह कुमारी मन में बहुत डरी और करुण विलाप करने लगी।

(३०९) पहिले मेरी प्रद्युम्न के साथ सगाई हुई फिर भानुकुमार के साथ विवाह करने के लिये चली। हे नारद मेरी बात सुनो अब मैं भील के हाथ पड़ी हूँ।

(३१०) उदधि माला ने कहा अब मुझे पञ्च परमेष्ठियों की शरण है। यदि मृत्यु न होगी तो मैं सन्यास ले लूंगी। तब नारद के मन में संदेह हुआ कि इसने बहुत बुरी बात कही है।

(३११) नारद ने उसी समय कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएं दिखा रहा है। तब प्रद्युम्न ने बत्तीस लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया।

(३१२) उस सुंदरी उदधिमाला को समझा कर वे विमान से शीघ्र चलने लगे। विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है। हे नारद ! यह कौनसी नगरी है ?

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है। शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्ज्वल है। कूवे, बावड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनेंद्र भगवान केमन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्टित यह द्वारिका नगरी है।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन सुनो। मुझे स्पष्ट कहो तथा कुछ भी मत छिपाओ। हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (वह मैं तुमको बतलाता हूँ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पांचों वर्णों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशोभित है वह नारायण का महल है।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो। जिसकी ध्वजा में मेंढे का चिन्ह है वह वसुदेव का महल है।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहां ब्राह्मण बैठे हुये पुराण पढ रहे हैं तथा जहां बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा का महल है ।

(३१९) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियां चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता बड़ा हर्षित हुआ । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा । तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ । यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है । यह वही कुमार है जिसका विवाह है । इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहां प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करुंगा । उसने एक बूढे विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा बड़ा चंचल था तथा जोर से हिनहिना रहा था । जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे । जिसके चार चार अंगुल के कान थे । जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी । वह ब्राह्मण उसकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था । अकेले भानुकुमार ने इसको देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर कहां जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बलख घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहां लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण को बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूंगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अच्छा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखी हुआ कि इस विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देओ। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौडा करके देख लो।

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को सम्हाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया यह बड़ी विचित्र बात हुई इससे सभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चढ़े ? इन तरुण से तो हम वृद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा डरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बेचना) चाहते हो तो अपना कुछ पुरुषार्थ दिखलाओ।

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस बीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(३३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढाने के लिये भानुकुमार आया। लेकिन वह लटक गया और उसे चढा नहीं सका। जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पांव रख कर चढ गया।

(३३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा। सभा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया।

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(३३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये। राजा का जहां उद्यान था वहां वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया।

(३३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहां के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता। यदि घास काटोगे तो किरकिरी होगी।

(३४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, भूखे घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो। घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना।

(३४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूंदड़ी उतार कर दे दी। रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लेवें।

(३४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे। तब रख वाले छाती कूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया।

(३४३) उन्होंने वह काम मूंदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली। तब वह वीर वहां पहुँचा जहां सत्यभामा की वाड़ी थी।

(३४४) प्रद्युम्न वाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखलायी दिये। वे कब के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था। फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की वेल थी। कणवीर का कुंज महक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अगर, मंदार सिन्दूर एवं सरीप आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुवा एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस वगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंधि फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं सदाफल के बहुत से पेड थे। तथा जहां वहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, विजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लौंग, छुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। वह वन कैथ एवं आंवलों के वृक्षों से युक्त था।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की वाड़ी देख कर उस वीर को वहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और साहस पूर्वक विचार कर के दो वंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों वंदरों को छोड दिया जिन्होंने सारी वाडी को खा डाला। जो फूलवाडी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन वंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन वंदरों को मुडा कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड डाले। फूलवाड़ी का संहार करके सारी वाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लंका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों वंदरों ने वाडी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानुकुमार बैठा हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे दोष मत देना। दो बन्दर यहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी वाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुकार की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां वन्दरों ने वाड़ी को चौपट कर दिया था।

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की। जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया। मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया। उस समय दिन का एक पहर बीत गया था। प्रद्युम्न को वहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने जा रही थी।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगी। कुमार रथ पर चढा तथा स्त्रियां खड़ी हो गई और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गई।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया। ऊंट और घोड़ा अरडा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगी तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं। जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशुकुन हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की बावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया। स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर-पश्चात् बावड़ी पर जा पहुँचा।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी खड़ी थी। वह कहने लगा कि भूखे ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो।

(३६२) उसी क्षण दासी ने कहा कि यह सत्यभामा की बावड़ी है यहां कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहां कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उसी समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूंड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने बावड़ी में प्रवेश किया।

विद्या बल से बावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोषिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कमंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे बावड़ी सूख कर रीती हो गई।

कमंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) बावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कमंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी २ चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहां से चल दिया।

प्रद्युम्न का मायामयी मेंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मायामयी मेंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मेंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मेंढे को बिना शंका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३७०) प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग में पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३७१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी!

(३७२) तब उसने मेंढे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टांग तोड दी। टांग तोड़ कर मेंढा वापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३७३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो छप्पन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हंसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३७४) पीली धोवती तथा जनेउ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३७५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३७६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लकड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३७७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आशीर्वाद दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र? कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३७८) फिर सिर हिलाते हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बोली सच्ची हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३७९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिलादो।

(३८०) उसने वहां एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं अकेला हूँ। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलादो।

(३८१) वहां ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आपस में लड़ते हो ?

(३८२) अब प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जृम्भणी विद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझ करके कहा कि इन लड़ने वालों को वायु लग गई है जो दूर हो जावें उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक मुट्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण ! बैठ कर भोजन करो तथा उनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही ग्रास में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहां आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल बची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रसोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो अब भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भखा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि अब इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी अब भूखे ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली वर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके वहां से खड़ा हो गया।

प्रद्युम्न का विकृत रुप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूंड मुंडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर झुका हुआ वह कुबड़ा बन गया। वह वहां से लौटा। उसके वड़े वड़े दांत थे तथा कुरूप देह थी। वह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढती थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह बात कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष फले हुये देखे तथा उसका आंचल पीला दिखाई देने लगा।

(३६८) सूखी बावड़ी नीर से भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक ब्रह्मचारी वहां पहुँचा।

(३९९) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस खोड़े ने धर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचारी का आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(४००) रुक्मिणी ने तो समझा करके क्षेमकुशल पूछा किन्तु वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी सखी को बुलाकर सब बात बता दी तथा इसका जीमन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(४०१) तत्काल वह जीमन कराने के लिये उठी तो प्रद्युम्न ने अग्नि स्तंभिनी विद्या को याद किया। उस कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा धुआं धार हो गया तथा वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा।

(४०२) मैं सत्यभामा के घर गया था लेकिन वहां भी खाना नहीं मिला तथा उल्टा भूखा रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(४०३) रुक्मिणी ने चित्त में सोचा और उसको लड्डू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लड्डू रखे हुये थे वे सब कुबड़े रुप धारी प्रद्युम्न ने खा लिये।

(४०४) जिस आधे लड्डू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक तृप्त रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ समझ में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(४०५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(४०६) तब रुक्मिणी के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह कालसंवर के घर बड़ा हुआ है वहां उसने कितनी ही विद्याएं सीख ली हैं यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(४०७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उससे पूछा कि हे महाराज आपका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपकी कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश डालिये। फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है ?

(४०९) तब वह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा। गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं। भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं। तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रूठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी। वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी। मेरी भूल हो गयी थी आप दोष मत दीजिये।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो। मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूं जिसका जवाब दो।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा।

(४१४) उसे धूमकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया। मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा।

(४१५) और जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं। लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुखित हो जावेगा।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानुकुमार का विवाह है। मैं आज होड़ में हार गयी हूँ तथा कार्य की सिद्धि नहीं हुई है। इसी कारण मेरा मस्तक आज मूंडा जावेगा।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माथा धुना। मन में पछतावा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो।

(४१८) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और वहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। अपनी माता को उसने ओझल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी वना दी।

सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से वहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पांव पडकर उससे निवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुम अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा वोल सच्चा हो गया है। अब कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूंड लिया।

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अंगुली को काट लिया और साथ की स्त्रियों को भी मूंड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के वीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है ? सबको यह वड़ा विचित्र अचंभा हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है ?

(४२५) तब वे दुःखि। होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। जब उन्होंने टटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मूंडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से यही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्षण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कंठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पछतावा सदैव रहेगा कि मैं उसका बचपन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पांच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न बारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी वह लौटने लगा, कभी हठ करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) वहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिखलाऊंगा।

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहलाया कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४३४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। बड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४३५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणि को इसकी सूचना भेज दी।

(४३६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूंडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पेट एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह आड़े होकर द्वार पर गिर गया।

(४३७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण उठो जिससे हम भीतर जा सके। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४३८) उसके वचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो उनको गोहत्या का पाप लगेगा।

प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४३९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४४०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पोल (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जावे और वह मर जावेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४४१) बात सुनकर बलभद्र क्रोध से प्रज्वलित होकर चले। तथा उनके साथ दस बीस आदमी गए और वे पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४२) वे सिंह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे।

(४४३) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था। उसने उदर को सरस आहार से इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे। ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी हैं। दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो ?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उसके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले। ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो ? आओ मुझे बाहर निकाल दो।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अपनी माता रुक्मिणी से कहा। एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो।

रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं। यह सिंह से युद्ध करना खूब जानते हैं। यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) है यह मैं तुम से कहती हूँ।

(४४९) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर खैंच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बढ़ाकर धड सहित वहीं पड़ा रहा। यह आश्चर्य देखकर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है ?

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

(४५०) पांव टेक कर वह भूमि पर खड़ा हो गया और इसी बल उसने सिंह का रूप धारण कर लिया। तब हलधर ने अपने आयुध को संभाला। फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये।

(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े बाजी करने लगे दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे। सिंह रूप धारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और बलभद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया।

(४५२) जहां छप्पन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहां जाकर हलधर गिरे। सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने बचपन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहां ही रहे। अब यह कथा रुक्मिणी के पास के आरम्भ होती है। वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि इतना बल पौरुष कहां से सीखा?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्वतीय स्थान है वहां यमसंवर नामका राजा निवास करता है। हे माता रुक्मिणी! सुनों मैंने वहीं से अनेक विद्यायें सीखी हैं।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे वचन सुनो। नारद ऋषि मुझे यहां लाये हैं। फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उदधि माला को ले आया हूँ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है। हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उदधिमाला कहां है उसे मुझे दिखलाओ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की सभा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक वचन मांगता हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारी बाँह पकड़ कर के सभा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस साहसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहां है उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे।

(४५६) पांचों पाण्डव जो पंच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छप्पन कोटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेले उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अशेष यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ कर आ गये।

रुक्मिणी की बाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे छुड़ाने के लिए ललकारना

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की बाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उसमें बल है तो आकर छुडा ले।

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके युद्ध के लिए ललकार

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पछाड कर मार दिया था। अब तुम ने रुक्मिणी को आकर बचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके वह कहने लगा, कि हे वसुदेव ! तुम रण के भेद को खूब जानते हो। तुम छप्पन कोटि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुड़ा लो।

(४६७) हे बलभद्र ! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो। रण संग्राम में बड़े धीर कहे जाते हो। हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं। मुझ से रुक्मिणी आकर छुडालो।

(४६८) हे अर्जुन ! तुम खांडव वन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुप को सब कोई जानते हैं। तुमने विराट राज से गाय छुडायी थी। अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुडा लो।

(४६९) हे भीम ! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है। अपना पुरुपार्थ मुझे आज दिखलाओ। तुम पांच सेर भोजन करतें हो। युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो।

(४७०) हे ज्योतिपी सहदेव ! मेरे वचन सुनो। तुम्हारे ज्योतिप के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ। फिर हंसकर प्रद्युम्न नें पूछा कि तुम्हारे समान कौन रण जान सकता है ?

(४७१) हे नकुल ! तुम्हारा पुरुपार्थ भी अतुल है। तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है। अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है। मुझ से रुक्मिणी आकर छुडाओ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी छल से कुंडलपुर गये थे। उसी समय तुम्हारी बात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में, आकर क्यों नहीं भिडते हो। मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूँ। एक ओर तुम सब क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूँ।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में घी डाल दिया हो। मानों सिंह ने वन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी हिलने लगे हों। तब सब यादव अपनी सेना, सजाने लगे। भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने कोदंड धनुप को उठा लिया और नकुल ने हाथ में भाला ले लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड कंपित हो गया।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया। यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये। घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिडना होगा। ऐसा आदेश दिया।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये। ठः ठः चारों ओर ये शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये।

युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे। कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये। कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये। कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये। कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले।

(४७९) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढी हुई तलवार लेकर निकला। किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली।

(४८०) कुछ लोग बात समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है। जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है।

(४८१) एक ही स्थान पर सब क्षत्रिय मिल गये और घटाटोप (मेघ जैसे) होकर युद्ध के लिए चले। तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अब यह मरने का दाव आ गया है।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहां मिल गयी। वहां घोडे, हाथी, रथ और पैदल सेना थी। अप्रमाण छत्र एवं मुकुट दिखने लगे तथा आकाश में विमान चलने लगे।

(४८३) इस प्रकार ऐसी असंख्यात सेना चली और चारों ओर रुद्र नगाड़े बजने लगे। घोड़ों के खुरों से जो धूल उछली उससे ऐसा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों।

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४८४) सेना के बायीं दिशा की ओर कौवा कांव कांव करने लगा तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया। दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे।

(४८५) वन में असंख्य जीव दिखाई दिये। ध्वजायें फकड़ने लगी एवं उन पर आकर पक्षी बैठने लगे। सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये।

(४८६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें। वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है।

(४८७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले। जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिंता हुई। माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खडी कर दी।

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४८८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विद्या का स्मरण किया। जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी।

युद्ध वर्णन

(४८९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया। कितने ही योद्धाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया। वे ऐसे लगने लगे मानों काल ने जीभ निकाल रखी हो।

(४९०) हाथी वालों से हाथी वाले योद्धा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी। पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी। तलवार के वार के साथ २ वे भी पड़ने एवं उठने लगे।

(४९१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है। कोई मारो मारो इस प्रकार चिल्ला रहा है। कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं।

(४६२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४६३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव! मैं तुमसे कहता हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुप दिखलाओ।

(४६५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय भागने लगे और कोई बचा नहीं।

(४६६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४६७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने हलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४६८) सभी यादव एवं योद्धा रणभूमि में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४६६) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से मूर्छित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(५००) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिवेष्ठित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(५०१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

(५०२) देखते देखते सभी यादव वीर गण गिर पड़े तथा साथ २ सभी सेनायें गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी थर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज हारे हुये पड़े थे यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(५०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये छत्र रण में पड़े हुये दिखलाई दिये।

(५०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। मदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और वेताल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(५०५) गृद्धिणी और सियार पुकार रहे थे मानों यमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमलो जिससे पूर्ण तृप्त हो जाओ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(५०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे संग्राम के लिये चले तो सकल महीतल कांपने लगा एवं शेषनाग भी हिल गया।

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

(५०७) जब अपने रथ को उनने युद्ध में आगे बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फड़कने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(५०८) क्योंकि रण में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रण में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०९) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है ।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे क्षत्रिय ! मेरे वचन सुनो । तुमने सभी मदोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो ।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान क्षत्रिय हो। तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है । मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हँस कर बोला कि रण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी ।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मां.. रहे हो ।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुरुषार्थ देख लिया है । तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता । तुम्हारी सारी सेना पडी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है ।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी सहन कर रहे हो । मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणि से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणि के योग्य नहीं हो ।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड दो । प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ ।

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुप बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पछताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ २ कर बातें कर रहा है अब इसे मारता हूँ यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुप को चढा लिया।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा। जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुप चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है। जब श्रीकृष्ण का धनुप टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुप चढाया।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुप की प्रत्यंचा टूट गयी। तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुप को अपने हाथ में लिया।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर वार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता। विष्णु ने जब तीसरा धनुप साधा लेकिन क्षण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हंस करके श्रीकृष्ण से बात कही कि आपके समान कोई वीर क्षत्रिय नहीं है? आपने यह पराक्रम किससे सीखा? आपका गुरु कौन था यह मुझे भी बताइये।

(५२३) तुम्हारे धनुप बाण छीन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके। तुम्हारा पौरुप मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंध तथा कंस को कैसे मारा? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ मंगाकर उस पर बैठ गये।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढकर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रज्वलित अग्निबाण को फैंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उस पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण की सेना बहने लगी।

(५२९) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ वगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र उड उड कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरंगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(५३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुये । वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये।

(५३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया। तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके।

(५३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका । दोनों ही बड़े बलवान योद्धा हैं जिनके प्रहार से ब्रह्मांड भी फटने लगा।

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

(५३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सका है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है।

(५३८) मैंने युद्ध में कंस को पछाड़ा और जरासिंध को रण में ही पकड़ कर मार डाला। मैंने सुर असुरों के साथ युद्ध किया है। जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

(५३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया। वह खड्ग बिजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो।

(५४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो। जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये।

(५४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलबली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो। देवाँगनायें मन में कहने लगी कि देखें अब इसे कैसे मारता है ?

(५४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है। श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा।

(५४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है। जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जावे हे नारद ? शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो।

रण भूमि में नारद का आगमन

(५४४) रुक्मिणी के वचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा। नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहां प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी।

(५४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया। प्रद्युम्न वार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहां पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया।

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(५४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे वचन सुनिये। यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।

(५४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बढा है। इसने सिंहरथ को जीता है। हे कृष्ण ! यह बड़ा पुण्यवान् है।

(५४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला ने इसका बिगाड़ हो गया है। इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष समाप्त होने के पश्चात् तुमसे मिला है।

(५४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान एवं साहसी है। इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है ? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है।

(५५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही। यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है।

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पाँव पड़ना

(५५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया। तब नारायण ने हृदय में खूब प्रसन्न होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया।

(५५२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विद्याधरी) को भी धन्य है जिसके यहां यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलाप हुआ है।

(५५३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा घूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(५५४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खूब उत्सव करो।

(५५५) श्रीकृष्ण के मन में तो विषाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा ?

(५५६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मोहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी योद्धा एवं सुभट उठ खड़े हो।

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खडा होना

(५५७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही उमड रहा हो।

(५५८) वीर एवं श्रेष्ठ पाण्डव, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(५५९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पदाति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों ? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सधारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठे हों।

प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो उठे। सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे। प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे। उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है। सभी कहने लगे कि आज परिजनों का देव मानों प्रसन्न हुआ है। श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके नयनों में समा रहा है।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं। जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है। सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरुप पुत्र उसको मिला है। बड़ा योद्धा एवं वीर है। सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है। सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बादल गर्ज रहे हैं।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया। इस घर को आज पुन्यवाला समझो। उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है। मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई। युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा। जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतियों की वदनवार बंधी हुई थी। घर घर पर गुड़ियां उछाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे। नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयी। अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी। घर घर मोतियों के वंदनवार एवं तोरण थे।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा छप्पनकोटि यादव घर चले। जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें क्षोभ हीन होकर चले।

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी छिप गयी। गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय कार कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँधे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(५६६) नगर में इतने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं पंच शब्द बजने लगे।

(५६७) जब प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में वधावा गाये जाने लगे। गुडियां उछाली गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(५६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी को चलीं।

(५६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जब से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(५७०) दूध, दही एवं अक्षत माथे पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती उतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियां वहां से चलीं।

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(५७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(५७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उडती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(५७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्य कौन स्वजन है ?

(५७४) तब रुक्मिणी उसी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे उऋण होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिक्षा दी है ।

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

(५७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्नकुमार का विवाह निश्चित हो गया। ज्योतिषी को बुलाकर लग्न निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(५७६) हरे बांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(५७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया। जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये।

(५७८) अंगदेश, बंग (बंगाल), कलिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये। लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवइ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये।

(५७९) गुज्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे। त्रिपाडती कान्यकुब्ज के अच्छे थे। पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये।

(५८०) शंखों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे। भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे।

(५८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर २ मंगलाचार गीत गाने लगी । नगरोत्सव से नगर कल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले ।

(५८२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र सिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर ढुरने लगा। सोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फेंक रहा हो ?

(५८३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करे तो भी मैं उसके केश उतरवाऊँगी।

(५८४) केश उतार कर उन्हें पांव से मलूंगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५८५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भाँवर देकर हथलेवा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिग्रहण हुआ।

(५८६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौतें उसका परिहास करती थी।

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के राजा के पास दूत भेजना

(५८७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहां रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५८८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहां जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे यहां भेजा है। रविकीर्त्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उसी लड़की को भानुकुमार को दे देवें।

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५८९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा विद्याधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहां मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण-कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानुकुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उसके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में क्षेमंधर मुनि को केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शंबुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहां पुंडरीक नगरी थी तथा जहां क्षेमंधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किस स्थान पर पैदा हुआ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने सभा में कहा कि पृथ्वी पर पांचवां भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। इसमें सोरठ देश में द्वारिका नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी [illegible] श्रीकृष्ण है जो सम्पूर्ण जिन धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या सती सुन्दरी है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५९८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ। उस पुण्यवान् को सभी कोई जानते हैं। सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है।

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५९९) केवली के वचन सुनकर देव वहां गया जहां सभा में नारायण बैठे थे। देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा।

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महमहण! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये। जिसको तुम अनुपम हार भेंट देओगे उसी की कुक्ष से मैं अवतार लूंगा।

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को भाने वाली मन में चिन्तना करने लगे। चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूंगा।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया। माता से कहने लगा कि मेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बताता हूँ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भव में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था। अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आकर पुत्र होगा। हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुझे प्राप्त करा दूं?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही सहस्र संतान के बराबर हो। बहुत से पुत्रों से मुझे कोई काम नहीं है। तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो।

जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी वहिन जामवंती है। हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो।

जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहां बुला लाओ। जो काममुंदड़ी पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े और गहने पहिने। उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था। जामवंती वहां गयी जहां श्रीकृष्णजी बैठे थे।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये। तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिंगन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शंबुकुमार उत्पन्न होगा। जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए।

(६११) तब महमहण ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विस्मित और अचंभित कर दिया। यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लिया तो विकृत रूप करके मोह लेगी। वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन मेट सकता है। श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान ही निष्कंटक राज्य करता है।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शंबुकुमार रखा गया। वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लज्जित करने वाला था।

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सुर और नर करते थे ऐसा प्रधान स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उत्पन्न हुआ।

(६१४) जो वहां से चयकर अनेक लक्षणों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अवतार लिया था चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पढ़ने लगे।

शंबुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद (मोहर) का दांव लगाया। उस दांव में शंबुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया।

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी। उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्गे आपस में भिड़ गये। इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंबुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली।

(६१९) इसके पश्चात् उसने बहुत से खेल किये। (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के पश्चात् दूत को बुलाकर वहां भेजा जहां विद्याधर रहता था।

(६२०) दूत ने वहां जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी। वहां दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ।

सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया। जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शब्द होने लगे।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और रूपकुमार के पास भेजा।

रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) वह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है।

(६२४) शंबुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुप को सब कोई जानते हैं। दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े।

(६२५) तब उस अवसर पर रुपचन्द ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रुपचंद) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि संभल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुखित हुआ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई। आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया। उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते हैं ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें। तुमको छोड़ कर हम हम को देना पसन्द करते हैं।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू बरसने लगे। इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुखी कर बहुत बुरा किया है।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित वदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी बोली से दुखी है यह मुझे शीघ्र कह दे।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने संदेशा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था। वहां दूत से उसने जो कुछ वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय छिद गया।

(६३३) मैने तो यह जाना था कि वह मेरा भाई है किन्तु उसने नीच वनकर ऐसी वात कही है। वह मुझे विषय वासिनी मानता है। भला ऐसी वात कौन कहता है ?

(६३४) रुक्मिणी के वचन सुनकर प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ कि उसने माता से नीच वचन कहे। अब रूपचन्द को रण में पछाड़ कर उसकी प्राणों से प्यारी पुत्री को छलकर परणूंगा।

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

(६३५) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और वहुरुपिणी विद्या को स्मरण किया। शंवुकुमार और प्रद्युम्न पवन वेग की तरह कुंडलपुर गये।

दोनों का डूम का भेष धारण कर लेना

(६३६) नगरी के द्वार दिखलाई देने पर दोनों ने डूम का रूप धारण कर लिया। मदन ने तो हाथ में अलावणि ले ली तथा शंवुकुमार ने मंजीरा ले लिया।

(६३७) फिर वे दोनों वीर चौराहे की ओर मुड़े तथा सिंहद्वार पर जाकर खड़े हो गये। वहां राजा अपने वहुत से परिवार के साथ दिखलाई दिया तब मदन ने अपनी माया फैलाई।

(६३८) फिर मदन ने वहुत से गीत एवं कवित्त जो यादवों के सम्बन्ध के थे उत्तेजित हो हो कर गाये। गीतों को सब ने ध्यान से सुना लेकिन श्रीकृष्ण की प्रशंसा के गीत उन्हें अच्छे नहीं लगे।

(६३९) जब उसने यादववंश का नाम लिया तो रूपचंद का मन दुखित हुआ। रूपचंद ने पूछा कि मैं तुम्हारे गीतों का सार जानता हूँ पर तुम कहां से आये हो, यह बतलाओ !

रुपचंद को अपना परिचय बतलाना

(६४०) हमारे स्थान का नाम द्वारिका नगरी है और जहां यदुराज श्रीकृष्ण राज्य करते हैं। जिनके रुक्मिणी पटरानी है। हे राजन् ! जो तुम्हारी बहिन भी है।

(६४१) उस राणी ने जो तुम्हारे पास दूत भेजा था उसने तुम्हारी बहुत सराहना की थी। उसी ने वहां जाकर तुम्हारा उत्तर कहा। और उसी के कारण हम यहां आये हैं।

(६४२) अपने कहे हुए वचनों को प्रमाण मानो क्योंकि सत्यवक्ता के वचन प्रमाण होते हैं। हे भाग्यवान् हम से स्नेह (संबंध) करके अपनी दोनों कन्यायें दे दो।

रुपचंद का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना

(६४३) यह सुनकर राजा क्रोधित होकर खड़ा हो गया। ऐसा लगने लगा मानों अग्नि में घी डाल दिया हो। उसका सम्पूर्ण अंग एवं मस्तक काँप गया तथा बोलते २ प्राण भी उडने लगे। ऐसे बोल तुमने किससे कहे हैं? उसने आदेश दिया कि इनको बाहर लेजा कर शूली पर चढा दो। यदि यदुराज में ताकत है तो वह इनको आकर छुडा लेंगे।

(६४४) तब उन्होंने पकड़े जाने पर जोर २ से पुकार की कि हम डूम हैं डूम हैं। ये शब्द चारों ओर छा गये। उसके हाथ में अलावणि (अलगोजा) थी जिसके सुनने के लिये सारे बाजार एवं हाट भर गये थे।

(६४५) उसी समय कुमार रुपचन्द ने सब राजाओं को पुकारा तथा सब बातें बताई। वे हाथी घोड़ों को साथ लेकर एक ही क्षण में वहां आ पहुँचे।

(६४६) तब राजा रुपचंद वहां आये जहां प्रद्युम्न और शांबकुमार थे। वे दोनों एक साथ अपने हाथ में एक तारा (सितार) अलावणि (अलगोजा) और वीणा लेकर गाने लगे।

(६४७) डूम को देखकर राजा के मन में शंका पैदा हुई कि वह नीच जाति पर किस प्रकार प्रहार कर सकता है। धनुष साध करके जब उसने बाण छोड़े तब दूसरों ने भी चौगुने बाण छोड़े।

प्रद्युम्न और रूपचंद के मध्य युद्ध

(६४८) तब प्रद्युम्न बड़ा क्रोधित हुआ तथा धनुष बाण कर हाथ में ले लिया। उसने क्रोधित होकर अग्निबाण छोड़ा जिससे लड़ते हुए सभी क्षत्रिय भागने लगे।

(६४६) सेना भाग गयी तथा मामा के गले में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६५०) रूपचंद को लेकर महलों में पहुँचे जहां श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद ने आंखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

रूपचंद को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

(६५१) तब मधुसूदन ने हंस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुष एवं विद्यावल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद को छोड़ देना

(६५२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और बंधे हुये रूपचंद को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

रूपचंद और रुक्मिणी का मिलन

(६५३) वहां जाकर उसने अपनी बहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६५४) भाई, बहिन एवं भानजा अच्छी तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचन्द को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

(६५५) तब हरे बांस का मंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये। छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करने चले।

(६५६) बहुत भांति के शंख एवं भेरी बजी। मधुर वीणा एवं तूर बजा। भांवर डाल कर हथलेवा लिया गया तथा चारों का पाणिग्रहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो सज्जन लोग थे वे तो खूब प्रसन्न थे किन्तु अकेली सत्यभामा ऐसी थी जिसका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और वह समधी नारायण के यहां से घर गया। वह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वारिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस घड़ी धर्म में लगा तथा जिन चैत्यालय की वंदना करने के लिये कैलाश पर्वत पर चले गये।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने चिंतवन किया कि संसार समुद्र से तैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा कैलाश पर्वत पर जो जिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थंकरों के चैत्यालयों को देखा और कहा कि जिनने जिनेन्द्र भगवान के ये चैत्यालय बनाये हैं वे भरत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने चैत्यालयों की वंदना की जिनकी ज्योति रत्नों के समान चमकती थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वारिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके पश्चात् दूसरी कथा का अध्याय प्रारम्भ होता है। कौरव और पाण्डवों में कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संयम धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वारिका जाकर विविध भोग विलासों को भोगने लगे। षटरस व्यंजन से युक्त अमृत के समान भोजन करने लगे।

(६६३) वहां सात मंजिल के सुन्दर श्वेत महल थे उनमें वे नित्य नये भोग विलास करते थे। वे महल अगर तथा चन्दन की सुगन्धि से युक्त थे तथा सुन्दर फूलों के रस से सुवासित थे।

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

(६६४) इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हुआ और फिर नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब उनके समवशरण में सुरेंद्र, मुनीन्द्र, एवं भवनवासी देव आदि आये।

(६६५) छप्पन कोटि यादव प्रसन्न होकर, नारायण एवं हलधर के साथ चले जहां नेमिनाथ स्वामी समवशरण में विराजमान थे। वहीं श्रीकृष्ण तथा हलधर जा पहुँचे।

(६६६) देवताओं ने बहुत स्तुति की। फिर श्रीकृष्ण ने (निम्न प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की। हे काम को जीतने वाले तुम्हारी जय हो! तुम्हारी सुर असुर सेवा करते हैं (हे देव तुम्हारी जय हो।)

(६६७) दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाले हे देव! तुम्हारी जय हो! मेरे जन्म जन्म के शरण, हे जिनेन्द्र! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे प्रसाद से मैं इस संसार समुद्र से तिर जाऊं तथा फिर वापिस न आऊं।

(६६८) इस प्रकार स्तुति करके, प्रसन्न मन हो मनुष्यों के कोठे में जाकर बैठ गये। तब जिनेन्द्र के मुख से वाणी निकली जिसे देवों, मनुष्यों एवं सब जीवों ने धारण किया।

(६६९) धर्म और अधर्म के गहन सिद्धान्त को सुना तथा प्रद्युम्न ने भी आगम की बात सुनी। उसके पश्चात् गणधर देव से छप्पन कोटि यादवों की ऋद्धि के बारे में पूछा।

(६७०) हे स्वामिन् मुझे बताइये कि नारायण की मृत्यु किस प्रकार से होगी? द्वारिका नगरी कब तक निश्चल रहेगी? हे देव! यह मुझे आगम के अनुसार बतलाइये।

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

(६७१) इस प्रकार बात पूछ कर बलराम चुप हो गये। मन में विचार कर गणधर कहने लगे कि बारह वर्ष तक द्वारिका और रहेगी। इसके बाद छप्पन कोटि यादव समाप्त हो जावेंगे।

(६७२) द्वीपायन ऋषि से ज्वाला निकल कर द्वारिका नगरी में आग लग जावेगी। मदिरा से छप्पन कोटि यादव नष्ट हो जावेंगे। केवल श्रीकृष्ण और बलराम बचेंगे।

(६७३) मुनि के आगमन एवं श्रीकृष्ण की जरदकुमार के हाथ से मृत्यु को कौन रोक सकता है ? भानु, सुभानु, शंबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार एवं आठ पट्टरानियां संयम धारण करेंगी ।

(६७४) गणधर के पास बात सुनकर तथा द्वारिका का निश्चित विनाश जानकर द्वीपायन ऋषि तप करने के लिये चले गये तथा जरदकुमार भी वन में चला गया ।

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

(६७५) दशों दिशाओं में बहुत से यादव इकट्ठे हो गये और संयम व्रत लेने के लिये भगवान नेमिनाथ के पास गये । प्रद्युम्नकुमार ने जिन दीक्षा ली तो नारायण चिंतित हुये ।

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण श्रीकृष्ण का दुखित होना

(६७६) श्रीकृष्ण शोकाकुल होकर कहने लगे हे मेरे पुत्र ! हे मेरे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम्हारे में आज कौनसी बुद्धि उत्पन्न हुई है ? तुम द्वारिका लेओ और राज्य का सुख भोगो ।

(६७७) तुम राज्य कार्य में धुरंधर हो, जेष्ठ पुत्र हो, तुम्हें बहुत विद्याबल प्राप्त है । तुम्हारे पौरुष को देव भी जानते हैं । हे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम अभी तप मत धारण करो ।

(६७८) कालसंवर तुम्हारा साहस जानता है । तुमने मुझे रण में बहुत व्यथित किया । तुमने मेरी रुक्मिणी को हरा था तथा बहुत से सुभटों को पछाड़ दिया था ।

(६७९) नारायण के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि राज्य कार्य एवं घर बार से क्या करना है, संसार तो स्वप्न के समान है ।

(६८०) धन, पौरुष एवं अपार बल का क्या करना है । माता पिता अथवा कुटुम्ब किसके हैं । एक ही घड़ी में नष्ट हो जावेंगे । आयु के नष्ट हो जाने पर कौन रख सकता है ?

रुक्मिणी का विलाप करना

(६८१) नारायण को दुखित देख फिर रुक्मिणी वहां दौड़ी आई । वह करुण विलाप करके चिल्लाने लगी तथा कहने लगी कि हे पुत्र किस कारण संयम धारण कर रहे हो ?

(६८२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुझे भी होते ही धूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे वचपन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६८३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा?

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६८४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के रूठ जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६८५) इसलिये हे माता अब विषाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है?

(६८६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सज्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६८७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहां भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६८८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न नेमिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनने द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचमुष्टि केश लौंच किया।

(६८९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। बाईस प्रकार के परीषह को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाह्य एवं अभ्यंतर शरीर क्षीण हो गया।

प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नाश करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोका-लोक की बात जानने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विद्याधर, बलभद्र, धरणेन्द्र, नारायण, सज्जन लोग, एवं देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र उत्कृष्ट वाणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले ! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न ! तुम्हारी जय हो, तुमने संसार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र ऋद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न ! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अग्रवाल की जाति है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुणवती सुधनु माता के उर में अवतार लिया तथा सामहराज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरछ नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उस नगर में श्रावक लोग रहते हैं जो दश लक्षण धर्म का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। वह देव वहां से चय करके मुक्ति रूपी स्त्री को वरेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाव पूर्वक सुनेंगे उनके भी अशुभ कर्म दूर हो जावेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उस पर प्रद्युम्न देव प्रसन्न होंगे।

उ

ऊ

ए

ओ

क

ख

ग

घ

च

ज

झ

ट

ठ

ड

ढ

ण

त

थ

द

ध

न

व

भ

य

र

ल

व

श ष स

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	३	रुिक्मणी	रुक्मिणी
१४	१	रूक्मिणी	,,
१४	३	रादउराइ	जादउराइ
२२	१	रुक्मणि	रुक्मिणी
२२	१०	रूक्मिणी	,,
२४	६	नारयण	नारायण
३१	७	रूक्मिणी	रुक्मिणी
३४	७	निंम्पल	निंम्यल
५५	१	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
६०	२	दग्घति	दग्धन्ति
६६	३	गुण	गुर
६७	५	आवास	अवास
७३	३	वृक्ष	वृक्षों
७५	६	मगल	मंगल
८०	१	प्राप्त सकने	प्राप्त कर सकने
८१	६	रुक्मिणि	रुक्मिणी
८२	६	,,	,,
८३	५	,,	..
८३	६	,,	,,
८४	६	,,	,,
८६	५	दाउ	दोउ
१२०	१	रूक्मिणि	रुक्मिणी
१२०	१०	जामंवती	जामवती
१२३	६	भानहि	सुभानहि
१२४	१	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१२६	१	डाम	डोन
१३५	५	रुक्मिणि	रुक्मिणी
१४२	७	अठरहवें	अठारहवें
१५०	२२	भयकर	भयंकर

१५१	१७	दुख	दु:ख
१५१	१८	दुख	दु:ख
१५२	६	नेत्रौं	नेत्रों
१५३	८	सहेलयो	सहेलियों
१५४	१	पहिल	पहिले
१५४	६	के	का
१५४	२३	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
१७०	२३	विधाओं	विद्याओं
१८५	१६	रुप धारण वनाकर	रूप धारण कर
१९२	२०	के	से
१९२	२०	समा	सभा
२१४	५	रुपचन्द	रूपचन्द
२१४	८	वहुरुपिणी	वहुरूपिणी
२१४	२४	रुपचन्द	रूपचन्द
२१५	७	"	"
२१५	१६	"	"
२१५	१९	"	"
२२०	२६	अभ्यपंतये	अभ्यंतर